Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान

पौष, संवत् २०४३ वर्ष १८ अंक ८

(१६ दिसम्बर से १५ जनवरी तक)

हिन्दुत्व के [illegible] वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समर्पित हैं श्रद्धा के सुमन....

स्व० पं० रामचरण शर्मा

जन्म, सन् १९०० निधन—२ दिसम्बर, १९८

हे चिर अनन्तपथ के यात्री,
हे पूज्य पिता शत-शत प्रणाम !
मेरे शाश्वत् जीवन के शिल्पी सृजनहार,
वात्सल्य भाव आलोकित कर पथ निर्विकार,
जीवन-सपने कर मूर्तिमान नयनाभिराम,
कर्त्तव्य निभा निष्कामरूप अपना प्रकाम,
ज्योतिर्मय पथ दिखलाने वाले संबल दो --
श्रद्धा के सुमन चढ़ाते जाएँ सुबह-शाम,
हे पूज्य पिता शत-शत प्रणाम !

पुत्री—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—**राकेश रानी**
वेदमंदिर, महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली—110036
फोन – 5724741, 5722639
वार्षिक मूल्य : 30 रुपये
विदेश में : विमान से 42 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 4 पौंड, 6 डालर
आजीवन 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : तीन रुपये
पौष : संवत् 2044
दिसम्बर 1986 : वर्ष 18, अंक 7

उपासना की देवियाँ

इडासरस्वतीमही तिस्रोदेवीर्मयोभुवः।
वर्हिः सदिन्त्व स्रिधः ।१।१।३।६॥

पदार्थ – (इड़ा) वाणी (सरस्वती) विद्या (मही) मातृभूमि (मयोभुवः) कल्याण करने वाली और (अस्रिध.) कभी हानि न पहुंचाने वाली (तिस्र देवी:) तीन देवियां (वर्हिः) हमारे अन्तःकरण में (सीदन्तु) विराजमान हों।

भावार्थ—प्रभु से प्रार्थना है कि दयामय परमात्मन् ! हमारे देश-वासियों में इन तीन देवियों की भक्ति हो—1. इड़ा अर्थात् अपनी मातृभाषा-भाषियों के साथ मातृभाषा में बातचीत करना। 2. लोक, परलोक जड़, चेतन, पुण्य, पाप, हित, अहित, कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य को बताने वाली सच्ची विद्या सरस्वती। 3. मही, अपनी जन्मभूमि के वासी अपने बांधवों से प्रेम। यह तीन देवियां मनुष्य को सदा सुख देने वाली हैं, कभी हानि करने वाली नहीं हैं। हर एक मनुष्य के अन्तःकरण में, इन तीनों देवियों के प्रति भक्ति होनी चाहिए। जिस देश के वासियों की इन तीन देवियों में प्रीति होगी, वह देश उन्नत होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए—

विषय		पृष्ठ
1. उपासना की देवियां	......	1
2. सम्पादकीय	......	3
3. हिन्दुस्तान में हिन्दू हितों का हनन		11
4. हिन्दू राष्ट्र की मांग क्यों ?	महात्मा प्रेम प्रकाश	14
5. महात्मा वेदभिक्षु की अमरवाणी	......	17
6. महात्मा वेदभिक्षु (संस्मरण)	—श्रीमती आभा	18
7. क्या धरा में ठांव ऐसा ? (कविता)	—परमहंस प्रमोद	33
8. वीर सावरकर	—श्री ए. आर. विराह्मस	34
9. यह महर्षि दयानन्द और गाँधी का देश है	—डॉ. रत्नलाल 'रतनेश'	43
11. किसानों से (कविता)	— श्री प्रमोद	46
12. महिला-मंच	......	49
13. योग-मुद्राएं और उनसे लाभ	—स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती	57
14. योरोप-अमेरिका में वैदिक संस्कृति	......	63
15. बाल-जगत	......	75
16. हिन्दू-जाति को शक्तिशाली बनाना है तो	—डॉ० मदनपाल सिंह	88
17. समाचार-दर्शन	......	90
18. सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर जेल	......	94
19. हमारे आवारा लड़के	—श्री एस. पी. चतुर्वेदी	97
20. रुबाइयां	......	107
21. गोरखालैंड आन्दोलन के पीछे चीनी हाथ	—श्री सदाजीवत लाल चन्दूलाल	108
22. अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रचार यात्रा-कार्यक्रम	......	110

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महात्मा वेदभिक्षु : पुण्यस्मरण

आज हम अपने कृपालु पाठकों को उस महान् विभूति का स्मरण करा रहे हैं, जिसकी पावन स्मृति, प्रेरणा और दिशा दान से हमारा प्रतिक्षण प्रेरित है। ऐसे महामानव थे महात्मा वेदभिक्षु जिनकी तीसरी पुण्यतिथि पर हम श्रद्धा-सुमन अर्पित कर रहे हैं। वह अद्भुत् व्यक्तित्व के धनी एक ऐसे प्रेरक पुरुष थे जिन्होंने बाल्यकाल से महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा पुनः गुंजाये गए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के वैदिक उद्घोष को साकार करने का सुस्वप्न अपने नेत्रों में संजोया था। भारत वसुन्धरा को महान और गरिमामय बनाने के देव दयानन्द के आह्वान को अपने जीवन-लक्ष्य के रूप में अंगीकार किया था। क्रांतिकारी माता-पिता (श्रीमती विद्यावती शारदा एवं विख्यात क्रान्तिकारी पंडित गयाप्रसाद शुक्ल) के यहां जन्मी इस महान आत्मा ने देश और समाज के लिये जूझने का असि-धारा व्रत अपने प्राणों का दीप जलाकर होश संभालते ही ग्रहण कर लिया था। किशोरावस्था में ही वह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध होने वाले प्रदर्शनों में सीना तानकर सहयोगी बने थे तथा जेल की यातनाएं सही थीं।

इतिहास तो सभी विद्यार्थी पढ़ते हैं। कुछ प्रबुद्ध अवस्था को प्राप्त कर इतिहास लिखते भी हैं। किन्तु ऐसे बिरले ही प्रेरक व्यक्तित्व होते हैं, जो इतिहास बनाते हैं। महात्मा वेदभिक्षु ऐसे ही सत्पुरुषों की शृंखला की एक कड़ी थे। उन्होंने अमर हुतात्मा पं. लेखराम के आह्वान को हृदयंगम कर अपनी लेखनी को एक सफल लेखक और सम्पादक के रूप में यौवन के उद्वेग के समय से लेकर जीवन की सांध्य वेला तक गतिमान रखा था। उनके लेखों और कविताओं से अनेक ने प्रेरणा प्राप्त की थी। वह लेखक होने के साथ ही सफल वक्ता भी थे। मीनाक्षीपुरम् काण्ड के बाद हिन्दू राष्ट्र के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समक्ष उपस्थित हुए संकट को निरख-परखकर उन्होंने सन् 1980 में 'हिन्दू रक्षा समिति' की स्थापना की। हिन्दुत्व को ओजस्वी और तेजस्वी रूप में पुनः उभारने के लिए अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की चिन्ता न कर, जो राष्ट्र-जागरण यज्ञ आरम्भ किया था, आज देश में हिन्दुत्व के प्रति बढ़ता हुआ अनुराग उसी का प्रतिदान है।

जीवन में सुख, वैभव और श्री-सम्पन्नता के लिए परिस्थितियों से समझौता करना मानव मन की सहज दुर्बलता है। परन्तु अपने समाज तथा राष्ट्र के लिये उत्पन्न चुनौतियों की परीक्षा की घड़ी में आपदाओं के प्रबल झंझावातों को झेलते हुए सच्ची बात कहने का साहस प्रदर्शित कर पाना ही तो महान् व्यक्तित्व का परिचायक है। उनका जीवन-व्रत इसी सत्य का साक्षात्कार कराता है।

गोरक्षा आन्दोलन हो या विदेशी मिशनरी-विरोधी आन्दोलन अथवा हिन्दू संगठन का मंच, सभी पर वह 'नेतागिरी के प्रपंच से ऊपर उठकर अपनी पूर्ण शक्ति सहित सक्रिय होकर जूझे थे।

हिन्दू संगठन का शंखनाद

हिन्दुत्व के व्यापक स्वरूप के मार्ग को समझने वाले महात्मा वेदभिक्षु ने ही यह गौरव पाया था कि द्वारकापीठ के जगत्गुरु शंकराचार्य का 'हिन्दू रक्षा समिति' के मंच पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले से स्वागत कराया था तथा जगत्गुरु शंकराचार्य को भी महर्षि दयानन्द के भव्य चित्र की छाया तले मंचासीन कराया था। हिन्दू संगठन को वह भारत की वर्तमान समस्याओं का निदान और हिन्दू-राष्ट्र की अभिवृद्धि को अपने जीवन का महत् उद्देश्य मानकर आसेतु हिमाचल प्रयासरत रहे। महाराणा प्रताप की कर्मस्थली भीलवाड़ा में उन्होंने हिन्दू महासभा के अधिवेशन में हिन्दू-संगठन के निमित्त राजस्थान के रणशूरों को जागृत करने का शंखनाद किया था तो समर्थ गुरु रामदास, छत्रपति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवाजी और स्वातंत्र्य वीर सावरकर की जन्मदायिनी महाराष्ट्र धरा के सपूतों का कर्त्तव्यपथ पर बढ़ने हेतु अपनी निर्भीक वाणी में आह्वान किया था। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की जन्मदायिनी गुर्जर धरा में भी उनका युग-चैतन्यकारी आह्वान गूंजा था। स्वामी विवेकानन्द, ऋषि बंकिम और नेताजी सुभाष की कर्मस्थली बंगभूमि तथा श्रीराम, श्रीकृष्ण, गौतम, चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त को जन्म देने वाले उत्तर प्रदेश और बिहार में भी उन्होंने हिन्दू-राष्ट्रवाद का जयनाद गुंजाया था।

देश-विदेश में लाखों हिन्दू परिवारों में आज परमपिता परमात्मा की अमरवाणी वेद उपलब्ध है। यह उनके द्वारा स्थापित दयानन्द संस्थान का वर्तमान युग में महान् अवदान है, यह कहते हुए हम गर्व की अनुभूति करते हैं। उनकी पुण्य-तिथि पर अपनी विनीत श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए हम यह संकल्प करते हैं कि जीवन की अंतिम श्वास तक उनके स्वप्न की पूर्ति के लिये संघर्षरत रहेंगे। सूर्य ही चन्द्रमा का प्रकाश होता है। हम भी उसी युग-पुरुष भारतेन्द्र (महात्मा वेदभिक्षु का पूर्व नाम) से प्रकाश की किरण पाकर देश में वास्तविक सौहार्द की भावना को बलशाली करने तथा वेद-प्रचार के अनुष्ठान को अपनी पूर्ण शक्ति सहित गतिमान रखने के लिये प्रयासरत हैं, इसी विश्वास के साथ कि जिस पवित्र उद्देश्य के लिये महात्मा वेदभिक्षु ने अपना समग्र जीवन लगाया था, उसकी पूर्ति में 'जनज्ञान' के सहस्रों ध्येयनिष्ठ पाठक अपने पवित्र अर्घ्यदान से उसे सतत प्रज्वलित रखेंगे। ★

हिन्दुत्व का पृष्ठपोषण:

आज जब हिन्दुत्व को साम्प्रदायिकता का पर्यायवाची सिद्ध करने में देश के कतिपय बुद्धिजीवी प्राणपण से कटिबद्ध हैं। जब इस महान संज्ञा को संकीर्णता, कूप मंडूकता एवं प्रतिगामिता का परिचायक बताने में कुछ मनस्वी धरती-आकाश के कुलाबे मिला रहे हैं, तब भी हम **अभावों और अभियोगों के प्रबल** प्रहारों को झेलते हुए हिन्दुत्व का यशोगान गा रहे हैं। हमारे अनेक हितैषी हमें अनेक बार समझाते हैं कि हम प्रगति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शीलता के इस युग में सहस्रों वर्ष पुरानी इस संज्ञा की गरिमा का गान कर स्वयं को संकटों से संत्रस्त क्यों कराते हैं। हम भी युग-प्रवाह के अनुसार 'रामाय स्वस्ति, रावणाय स्वस्ति' की प्रवृत्ति का पालन करते हुए अपना भविष्य संवारने की दिशा में प्रवृत्त क्यों नहीं हो जाते ? अपने ऐसे सभी आलोचकों और हितैषियों से हमारा यही विनम्र निवेदन है कि वे मात्र पाश्चात्य शैली का ही अनुगमन न कर, इस तथ्य पर ध्यान दें कि हिन्दुत्व न तो संकीर्णता का परिचायक है और न ही मत-मतान्तरों, पथों एवं सम्प्रदायों के बीच वैर-भावना का उत्प्रेरक।

इतिहास साक्षी है कि यदि हिन्दू साम्प्रदायिक होता तो क्रांति की पावन गंगा हिन्दुत्व के हिमालय से कदापि नहीं निकल पाती। यह मान्यता थोपना कि हिन्दुस्तान में स्वतन्त्रता हेतु जो सशस्त्र संग्राम एक सौ वर्ष तक अंग्रेज सत्ताधारियों के विरुद्ध अविराम गति चला, उसमें हिन्दुत्व की भावना के लिये कोई स्थान नहीं था, या कि उसे क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त टोली साम्प्रदायिक करार देती थी, यह इतिहास और हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिये बलिपथ के राही बने उन सहस्रों हुतात्माओं के साथ घोर अन्याय है, वोट और कुर्सी के नाम पर सौदेबाजी करने वालों का अविवेक है, देश की जनता को गुमराह करने का राजनीतिज्ञों द्वारा छोड़ा गया शगूफा है। स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रगीत के रूप में मान्यता प्राप्त 'वन्दे मातरम्' के रचयिता ऋषि बंकिम-चन्द्र चटर्जी ने शक्तिशाली हिन्दू जाति के फिर से तरुणाई प्राप्त कर ज्ञान-धर्म और अपनी संस्कृति-सभ्यता से समुज्वल बनने एवं उसके द्वारा धरातल को नव-सुषमा प्रदान करने का स्वप्न देखा था। 1857 की महान क्रांति की असफलता के बाद 1859 में जब अत्याचारी गोरों के विरुद्ध किसान आंदोलन उभरा तो 'हिन्दू पेट्रियट' नामक समाचार पत्र ने ही राष्ट्रीयता का प्रबल पृष्ठपोषण किया था। ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध हमारे देश में क्रांति दूतों ने जो महान यज्ञ प्रारम्भ किया था, उसकी आधार-भूमि स्पष्ट रूप से हिन्दुत्व ही थी। क्या कोई उन हुतात्माओं के उस महान् वैचारिक स्रोत को साम्प्रदायिक या संकीर्णता की संज्ञा दे सकता है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'हिन्दू मेला' का भी राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम की ज्वाल-मालाओं को प्रदीप्त करने में कम योगदान नहीं रहा ? हमारे आद्य क्रांतिकारियों, कवियों, पुरोधाओं और विचारकों ने स्वतन्त्रता की भागीरथी का उद्‌गम-स्थल हिन्दुत्व की गंगोत्री में ही खोजा था ..और इसीलिये भारत माता को दुर्गा के रूप में देखने के अभ्यास में कभी उनका मन दुविधाग्रस्त नहीं हुआ। उस समय तक सम्भवतया किसी भी राष्ट्रीय कवि, विचारक अथवा बुद्धिजीवी ने हिन्दू विचार दर्शन और हिन्दुत्व में साम्प्रदायिकता अथवा संकीर्णता की भावना निकालने में अपनी बुद्धि विलास की प्रवृत्ति नहीं बनाई थी।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य का मन्त्रोच्चार पहली बार किया था और उन्होंने वेद के महान् आह्वान 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का उद्‌घोष पुनः गुंजाया था। उनका चिन्तन भी उसी महान भावना से प्रेरित था, जिसे सामान्य शब्दों में हिन्दुत्व ही कहा जा सकता है। महाराष्ट्र में शिवाजी उत्सव और गणेशोत्सव सरीखे नव जागरण के प्रेरक और 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' के उद्‌घोषक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का हिन्दुत्व के प्रति सम्पूर्ण भाव और 'शिवाजी उत्सव' तथा गणेशोत्सव' में हुए काव्य पाठ के लेखक एवं काला-पानी की सजा पाने वाले बाबाराव सावरकर की अंतःप्रेरणा हिन्दुत्व ही था। अपना समग्र जीवन भारत माता की स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा स्वतन्त्रता के संरक्षण हेतु समर्पित करने वाले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर तो विज्ञान-सम्मत तथा तर्कसम्मत विधि से हिन्दुत्व की व्याख्या करने वाले थे। अमर हुतात्मा भगत सिंह करतार सिंह, सरावा सरीखे हुतात्माओं को राष्ट्र-भक्ति की दीक्षा देने वाले देवता स्वरूप भाई परमानन्द ने भी तो अपने जीवन का प्रतिक्षण और रक्त का कण-कण हिन्दुत्व के लिए ही समर्पित किया था।

वस्तुतः आज की राजनीति में सर्वाधिक प्रचलित हुए धर्म-निरपेक्षता परिष्कृत रूप हिन्दुत्व ही है, क्योंकि हिन्दू कोई सम्प्रदाय नहीं है। विभिन्न उपासना, पद्धतियों वाले अनेक समूह आस्तिक-नास्तिक, बौद्ध-जैन, सिख आर्य समाजी, शैव एवं वैष्णव सभी विस्तृत परिपेक्ष्य में हिन्दू ही कहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाते हैं। इतिहास में ऐसे अनेक तथ्य उपलबध हैं, जो दृढ़ता के साथ इस तथ्य का प्रतिपादन करते हैं कि हिन्दू कभी भी और कहीं भी सम्प्रदाय के रूप में नहीं पहचाना जाता रहा। हिन्दुत्व उस संस्कृति का परिचायक है, जिसका इस महान देश में विकास हुआ और प्रकृति से ही समन्वयवादी रहा है। विश्व में विविधता है और रहेगी, किन्तु हिन्दुत्व का चिन्तन विविधता को न मान कर उसे सृष्टि का सौन्दर्य समझते हुए, उसका रसास्वादन करने की प्रेरणा प्रदान करता है, इन्द्रधनुष के सतरंगी सौन्दर्य का रहस्य सूर्य से आने वाले श्वेत प्रकाश में निहित है। अतः सातों रंगों द्वारा एक ही सूर्य भासमान हो रहा है। यह स्वच्छ और पारदर्शी दृष्टि हिन्दुत्व की ही देन है।

अनेकता में एकता ही तो हिन्दुत्व की विशेषता है। पृथ्वी सूक्त में भी उद्घोष हुआ है—'जनविभ्रती वहुधा विवाचसं, नाना धर्माणं पृथ्वी यथौ-कसम' तात्पर्य यह है कि यह धरती विभिन्न भाषा एवं नाना धर्मों को स्थान स्थान पर धारण करती है तथा दुधारू गाय के समान सबके लिये सहस्रों धाराएं प्रवाहित कर रही है। वैदिक मन्त्र द्रष्टाओं के इस उद्घोष में जिस रूप का दर्शन होता है, वही तो हिन्दुत्त्व का परिपाक है।

इस तथ्य से स्पष्ट है कि साम्प्रदायिक भेद-भाव का हिन्दुत्व में कोई स्थान नहीं है, क्योंकि सम्प्रदाय की रचना, उपासना-पद्धति. उसका प्रवर्तन करने वाले व्यक्ति, उसके ग्रन्थ एवं अनुयायी तत्त्वों से होती है। इसी धर्म का सम्बन्ध सार्वकालिक तथ्यों से है। इसमें इहलौकिक और पारलौकिक कल्याण दोनों का ही विचार होता है। अतएव हमारी यह मान्यता है कि हिन्दुत्व को किसी मजहब या सम्प्रदाय के समकक्ष रखना उथला चिन्तन है। मानव जीवन की सार्थकता केवल भौतिक उपयोग में ही नहीं है, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के रास्ते पर भी सन्तुष्टि होनी चाहिए। धर्म और मोक्ष के बन्धनों को तोड़ने से पैदा होने वाला अर्थ और काम-प्रधान स्वेच्छाचारी जीवन व्यक्ति या समाज को सुख-शान्ति कदापि प्रदान नहीं कर सकता। मानव में देवत्व है, उस देवता का साक्षात्कार कर जीवन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के स्तर को ऊपर उठाना ही वास्तविक मानवीय विकास है। इसी में सारा हिन्दुत्व समाहित है। यह नितान्त गौरवपूर्ण विरासत है जो सारे ब्रह्माण्ड का ही विचार करती है। इस दृष्टि से हिन्दुत्व की अजेय भावना का प्रचार-प्रसार और हिन्दू राष्ट्र को शक्ति संपन्न बनाना मानवता के ही हित चिन्तन का पथ है। इसी पथ पर स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु ने हमें चलया था। अपने सीमित साधनों से हिन्दुत्व के इस जागरण-यज्ञ में हम अपना प्रतिपल प्रतिक्षण समर्पित कर रहे हैं।

अंत में हम राष्ट्र गौरव नेताजी सुभाष के इस आह्वान को भी हिन्दुत्व के प्रति उनकी आस्था का ही परिचायक मानते हैं कि 'भारत का एक संदेश है, जिसे संसार के कोने-कोने तक पहुँचाना है! भारत की संस्कृति में ऐसा कुछ है जो विश्व मानव के लिये बहुत जरूरी है और जिसे ग्रहण किये विना विश्व सभ्यता वास्तविक उन्मेष नहीं पा सकती, इसीलिए भारत के मनीषियों ने अंधकारपूर्ण युगों में भी अपलक भारत का प्रदीप जलाये रखा। हम उन्हीं की सन्तान हैं।

हमने देश माता के चरणों व अपना जीवन न्योछावर करने का व्रत ग्रहण किया है। अतः कष्ट-कंटक तो क्या, इस पथ पर चलते-चलते हमने यदि मरण का भी वरण किया तो अमरत्व ही प्राप्त करेंगे। ★

हमें संघर्ष करना है—

अखण्ड हिन्दुस्तान के लिए

हम चाहते हैं—

त्यागवाद : समाजवाद नहीं
धर्मराज्य : धर्मविहीनता नहीं
सबके लिए समान अधिकार—
समान नियम : साम्प्रदायिकता नहीं

वेद-गौ-गंगा-गायत्री
की सुरक्षा के लिए कुछ करो?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जनज्ञान' संपादिका का महाराष्ट्र-प्रवास

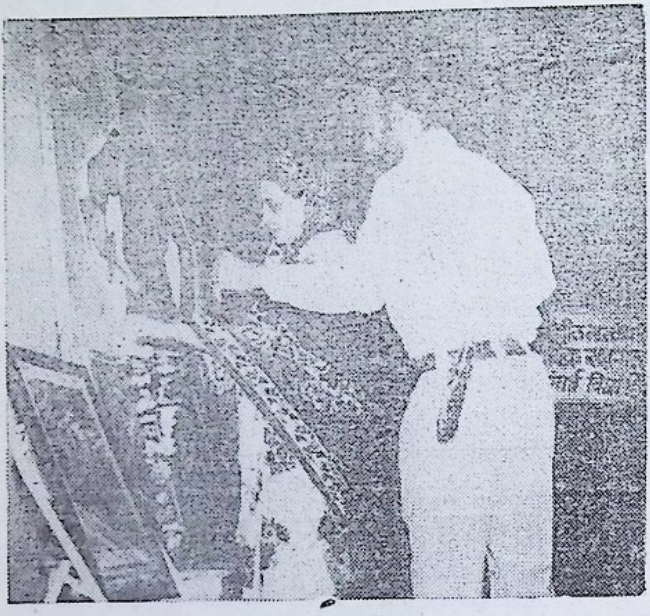

10 अक्टूबर, 1986 को 'प्रमिला देवी मोक हाल' अकोला (महाराष्ट्र) में 'हिन्दू सेना' के कार्यकर्ताओं के सामने अपने विचार प्रकट 'करती हुई जनज्ञान' की संपादिका एवं दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी। साथ में खड़े हैं हिन्दू सेना के सेनापति श्री चन्द्रशेखर गाडगिल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुस्तान में हिन्दू हितों का हनन

कुछ दिन पूर्व 'लोक शिक्षक' में उसके सम्पादक श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी ने 'हिंदुस्तान में हिन्दुओं के हितों का हनन हो रहा है' शीर्षक से जो लेख छापा था, उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप दो बुद्धिजीवी पाठकों के पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। दोनों पत्रों में व्यक्त किये गये विचार हिन्दू जाति, धर्म एवं संस्कृति के लिये सचमुच ही अत्यन्त चिन्ताजनक एवं गंभीर हैं। इस चेतावनी के बावजूद समय रहते यदि हिन्दू-समाज में जागृति नहीं आई तो यह इस देश, जाति और समाज का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। पाठकों, बुद्धिजीवियों, धर्माधीशों और सत्तालोलुप स्वार्थांधी राजनेताओं की जानकारी के लिये दोनों पत्र बिना किसी फेर-बदल के यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

—सम्पादक

पहला पत्र

कलकत्ता
दिनांक 2-10-1986

आदरणीय,

श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी

संपादक, लोक शिक्षक, जयपुर।

मान्यवर महोदय,

आपका पत्र, जयपुर मंगलवार ता. 30-6-86 का देखने को मिला। संपादकीय में आपने छापा—

'हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के हितों का हनोज हो रहा है'। आपके इस चिन्तन के लिए आपको अनेक धन्यवाद है, क्योंकि आप जैसे गांधी-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वादी भी आज हिन्दुओं के लिए चिंता करने लग गये। इससे बड़ा सौभाग्य आज हिन्दुओं का क्या होगा ?

गांधी ने कभी हिन्दुओं की चिन्ता नहीं की, उन्होंने सदा मुसलमानों की खुशामद में ही अपने आपको न्योछावर किया, लेकिन इतना करने पर भी इन मुसलमानों ने कभी गांधी की एक न मानी।

और अखंड भारत को खंडित कराके ही दम लिया। फिर देश के दुर्भाग्य से नेहरू प्रधानमन्त्री बना, जो यह कहता था कि मैं शिक्षा से अंग्रेज, संस्कृति से मुसलमान और दुर्भाग्य से हिन्दू हूँ।

तो आप ही बताइये हिन्दुओं का भला कैसे होता। देश की बागडोर संभाले उनके ये विचार थे।

अगर देश के सौभाग्य से सरदार पटेल प्रधानमन्त्री होता तो आज हिन्दू हितों की चिन्ता करने की आपको जरूरत नहीं थी। मेरे विचार से गांधी और नेहरू की मुस्लिमपरस्त नीति के कारण ही देश की यह हालत हुई है।

देश में धर्म के नाम से बंटवारा स्वीकार करके कांग्रेस ने जो भूल की है, उसी का कारण अब ये खालिस्थान भी है।

कारण साफ है, ये सिख लोग भी जान गये यहाँ तो धर्म के नाम पर बंटवारा होता है। इधर बिहार में ईसाइयों ने भी बहुत बड़े वर्ग को ईसाई बनाकर, झारखंड की मांग शुरू कर दी।

मुसलमान परसनल ला-बिल को पास कराकर पुनः अपने लिये देश-विभाजन की मांग करने वाले हैं, अपनी जनसंख्या बढ़ते ही।

सैयद शाहबुद्दीन ने पिछले दिनों कलकत्ता के ग्रंट ईस्टर्न होटल में एक प्रेस कांफ्रेंस में साफ-साफ कहा था कि जिस सरकार से एक पंजाब के आतंकवादी नहीं दबाये जा सकते, यदि कहीं मेरी कौम के मुसलमान युवक सड़कों पर आ जायेंगे तो इस देश का क्या हाल होगा ?

इस प्रकार एक आदमी देश की सरकार को कितनी बड़ी चेतावनी देता है, यह चुनौती है।

अब आप जैसे विद्वानों पर ही देश को भरोसा है कि अब किस उपाय से देश को बचाया जावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं तो एक अनपढ़ व्यक्ति हूँ, मैंने अपने मन की आत्मा की आवाज से आपको अवगत कराया है।

देश को इस संकट की घड़ी से बचाने का, विशेषकर हिन्दुओं का संगठन कैसे हो, इस पर आप अपने पत्र में समय-समय पर प्रकाश डालें तथा हिन्दुओं के वोट एक ही संस्था को मिलें, ऐसा उपाय हो तभी हिन्दुओं का भला संभव है, अन्यथा मेरी राय में हिन्दुओं का भला होना वर्तमान में इस कांग्रेस से मुश्किल है।

आपका

(रघुनन्दन शर्मा)

नं. 1, हंसमुकट ईस्ट लेन, कलकत्ता-7

दूसरा पत्र

प्रो. शिवनाथ चौबे

22, शिव ठाकुर लेन

कलकत्ता-700007

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

सादर वन्दे।

कृपा पत्र के लिये धन्यवाद। 'लोक शिक्षक' की प्रति मिली। आपने लिखा है—**अभागे हिन्दुओं की न्यायोचित मांगों को निर्दयतापूर्वक ठुकराया जाता है**। इसका मुख्य कारण भाई परमानन्द के शब्दों में सुनिये—हिन्दुओं के पतन का सबसे बड़ा कारण, राजनीति के प्रति उदासीनता रहा है। हिन्दू शत्रु को गले लगाता है। मित्र को लात मारता है। हैदराबाद म्युनिसिपैलिटी पर अधिकार है अंजुमन मुसलमीन (भूतपूर्व रज़ाकर पार्टी) का। हिन्दू नेताओं की प्रतिमा स्थापित करने का विरोध किया है। अंजुमन को कांग्रेस का समर्थन है।

हिन्दुओं के वोट जब तक इधर-उधर बिखरते जायेंगे तब तक उनकी राजनीतिक एकता कायम नहीं हो सकेगी। अपने पत्राचार के द्वारा तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साक्षात्कार करके (1) आर. एस. एस. (2) बि. हि. पा. के चोटी के नेताओं का विचार जान लिया, कोई भी हिन्दुओं को एक हिन्दूनिष्ठ पार्टी के झंडे के नीचे लेने को उन्हें संगठित करने को तैयार नहीं। 230 करोड़ रुपये ईसाई धर्म के प्रचार के लिये विदेशों से आता है। मुस्लिम संस्थाओं को भी आपके जयपुर की जमाता से भी धन मिलता है। इन सब पर रोक लगाने की हिम्मत कांग्रेस में नहीं। राष्ट्र छिन्न-भिन्न होगा, हिन्दू अल्पसंख्यक बनकर रहेगा, यदि हिन्दू राजनीतिक रूप से असंगठित रहे। उन्हें संगठित करने वाला कोई माध्यम नहीं। भाजपा हिन्दू संगठन के लिये रोड़ा है, बाधा है।

हिन्दू राष्ट्र की ही माँग क्यों ?

—महात्मा प्रेमप्रकाश

इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार मुसलमानों ने हिन्दुओं पर जुल्म ढाये हैं, हिन्दू देवियों की इज्जत लूटी है। बड़े-बड़े मन्दिरों को तोड़ कर मसजिदों में बदल दिया गया और आज भी भारत के अन्न से शरीर, जल से जीवन और वायु से प्राण पाकर भारत का अहित करने पर तुले हैं। यदि भारत-पाकिस्तान के किसी भी मैच में पाकिस्तान जीत जाये तो पाक-समर्थक मुसलमान खुशियाँ मनाते हैं और पाकिस्तान परास्त हो जाये तो वे श्रीनगर के हिन्दू दुकानदारों की दुकानों में आग तथा 'पाकिस्तान जिन्दा वाद' के नारे लगाते हैं। कहने का आशय यह है कि मुसलमान त्याग-तपस्या और शान्ति में नहीं, तलवार और हिंसक खून-खराबा में विश्वास रखते हैं, अन्याय और जुल्म में विश्वास रखते हैं। लेकिन हिन्दू त्याग-तपस्या, सेवा और शान्ति में। अतः जब तक मुसलमान सीधे मार्ग पर नहीं आते, राष्ट्रीय एकता असंभव है। एकता वहाँ होती है जहाँ ज्ञान, कर्म और उपासना का मार्ग एक हो किसी कवि ने कहा है—

भाषा, इष्ट-उपासना, खान्-पान, पहरान।
जहां ये छः लक्षण मिलें, वहां मित्रता जान॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषा के विषय में आप सभी जानते हैं कि हमारी भाषा देवनागरी हिन्दी बायें से लिखनी प्रारम्भ होती है और दायें को अर्थात् ऊपर को चली जाती है। मुसलमानों की भाषा उर्दू ठीक इसके उलटा दायें से चलकर बायीं ओर को जाती है। ठीक इसी प्रकार उनकी इष्ट-उपासना भी उलटी है।

वेद के आधार पर हिन्दू जगत ईश्वर को सर्वव्यापक मानता है और हिन्दू अपने इष्ट की उपासना पूर्वाभिमुख बैठ कर करते हैं। जिसमें ग्रीवा, सिर, और मेरुदण्ड और सीध रख हृदय में 'ओ३म्' का जाप या ध्यान करते हैं। परन्तु मुसलमान पश्चिम की ओर मुख करके डण्ड बैठक लगाते हुए खुदा को पुकारते हैं, क्योंकि मुसलमान ईश्वर को सर्वव्यापक नहीं सातवें आसमान पर मानते हैं।

खान-पान उलटा

भारतीय संस्कृति में भोजन का समय सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से पहले का है, किन्तु पान अर्थात् पीने का समय अपनी सुविधानुसार से रखा जा सकता है। खान-पान के सभी पदार्थों में सात्विक-पौष्टिक और सुगन्धित पदार्थों का होना परमावश्यक है, क्योंकि सुगन्धित पदार्थ पुष्टि एवं प्रसन्नता प्रदान करते हैं तथा बुद्धिवर्धक होते हैं। जिस-जिस पदार्थ में दुर्गन्ध हैं, उस पदार्थ में बुद्धितत्व नहीं होते, क्योंकि मानव बुद्धिजीवी प्राणी है और उसका महत्त्व बुद्धिमान् बनने में ही है। अतः इसे बुद्धितत्वयुक्त पदार्थों का ही सेवन करना चाहिये। दुर्गंध-युक्त पदार्थ जैसे अण्डा, मांस और सिगरेट आदि के प्रयोग का प्रचलन भारत में मुसलमानों से हुआ। जब मुसलमानों ने 700 वर्ष भारत पर राज्य किया, तभी से लोग रात में गरिष्ट भोजन करने लगे, जिससे भारत विलासता और बीमारी का गुलाम हुआ।

ऐसी अनेक बातें हैं जिनको मुसलमान हिन्दुओं की मान्यताओं और परम्पराओं के बिल्कुल उल्टा करते एवं चलते हैं। अतः हिन्दू मुसलमान एकता कठिन ही नहीं, असम्भव भी है और इसी आधार पर भारत का विभाजन भी हुआ था। ☆

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञापनदाताओं से निवेदन

मान्यवर,

आप 'जनज्ञान' मासिक से तो परिचित ही होंगे। 'जनज्ञान' (मासिक) का प्रकाशन एक महत् उद्देश्य को लेकर किया जा रहा है। विगत अट्ठारह वर्षों से 'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति तथा हिन्दू-जागरण एवं राष्ट्र-निर्माण कार्य में अपने को समर्पित कर चुका है।

'जनज्ञान' मात्र एक पत्रिका नहीं, अपितु जागरण का एक जन-आन्दोलन है। देश-विदेश के एक लाख से भी अधिक परिवारों में 'जनज्ञान' का आह्वान निरंतर पहुंच रहा है। इसमें रंचमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं कि 'जनज्ञान' ने लाखों लोगों में राष्ट्र-चिन्तन की क्रांतिकारी अलख जगाई है।

इस महत् उद्देश्य-पूर्ति के लिए 'जनज्ञान' का मार्च-अप्रैल अंक 'हिन्दू-जागृति विशेषांक' के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। यह ऐतिहासिक अंक लाखों पाठकों के हाथों में पहुंचेगा, जो सामाजिक एवं राष्ट्रीय संचेतना का स्थायी संदेशवाहक सिद्ध होगा।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस विशेषांक के लिए अपने प्रतिष्ठान/संस्थान/उद्योग का विज्ञापन देकर इस महत् कार्य में सहयोग करें। इस विज्ञापन से आप न केवल अपने व्यापार की अभिवृद्धि करेंगे, बल्कि एक महान् उद्देश्य की पूर्ति में आहुति देकर पुण्य के भागी भी बनेंगे।

विज्ञापन भेजने की अंतिम तिथि 15 फरवरी, 1987 है।

विज्ञापन दर :

अन्तिम कवर पृष्ठ 1200 रुपये   कवर पृष्ठ दो, तीन 1000 रुपये

सामान्य पूर्ण पृष्ठ 800 रु०, आधा पृष्ठ 500 रु०, चौथाई पृष्ठ 300 रु०

—प्रबन्धक

'जनज्ञान' (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

भारत रहे, का अर्थ है भारत की संस्कृति, आदर्श, इतिहास और परम्पराएं जीवित रहें। बड़े-बड़े काल के गाल में समा गए पर वेद-शास्त्र-उपनिषद्-गीता द्वारा आज भी भारत के पास वह पूंजी है जिसकी तुलना में धरती के साम्राज्य का भी कोई महत्त्व नहीं।

आज भी हम उन्हीं के संरक्षण के लिए लड़ रहे हैं। हमारी संताने इन्हें भूल रही हैं। शासन इन्हें भुलाता रहा है। विदेशी व्यक्तियाँ इन्हें मिटाना चाह रही हैं और इनके रखवारे गहरी नींद में सो रहे हैं।

आज देश धधक रहा है। कोई भी राजनैतिक दल राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। समाज सेवी संस्थाओं का उद्देश्य भी धन बटोरना ही यह गया हैं। सीधी बात बात कहने का न तो किसी में साहस है, न समस्या पर पकड़ है। ऐसे में देश मृत्यु की ओर न जाये तो कहां जाए।

यदि कुछ व्यक्ति भी बलि वेदी पर शीश काटने के लिए नहीं आ सकते तो बात बातों से नहीं बनेगी। धन-साधन और भाषण समस्या का हल नहीं है। त्याग और बलिदान की भावना ही देश की रक्षा कर सकेगी।

समय के प्रवाह को बदलने के लिए प्रत्येक हिन्दू स्वयं सेनापति बने ! जोश और होश से अपना कार्य करे !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाप्रयाण की तृतीय पुण्यतिथि पर

आर्यसंस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र

महात्मा वेदभिक्षु

—श्रीमती आभा

सच तो यह है कि वह हर व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आता था, वही अपनत्व अनुभव करता था। सभी के प्रति पक्षपातरहित और समान भाव से व्यवहार करना उनकी विशेषता थी।

जीवन के प्रत्येक क्षण को उन्होंने अपने 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले जीवनवृत्ति से मूल्यवान बना दिया था। मृत्यु की छाया में भी वे राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न देखते रहे। हिन्दू राष्ट्र का सबल सुदृढ़ स्वरूप ही उनके जीवन का एकमात्र स्वप्न बन गया था। इस दुनिया में अपना घर बसाने के लिए तो सभी हाथ-पाँव मारते हैं, किन्तु उन्होंने तो घर फूंक तमाशा देखा था। उन्होंने न अपने लिए कभी सोचा, न परिवार के लिए चिन्ता की। जिस जाति के लिए उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण और रक्त की हर बूंद समर्पित की, उसी ने उनकी नहीं सुनी। वे शायद वेद का 'जीवेम शरदः शतम्' मंत्र भी सार्थक कर जाते, यदि समाज में उन्हें कुछ लोग ऐसे भी मिल जाते जो उनके पथ पर चलते—सहयोगी बनते।

—राकेश रानी

'आखिर हिन्दू के बेटे कबतक पिटेंगे ? आज पंजाब के उग्रवादी तत्त्वों ने हिन्दुओं को ईंट का जवाब पत्थर से देने पर विवश कर दिया है। सब्र का पैमाना भर चुका है और आज हिन्दू भी हथियार उठाने को तैयार हो चुके हैं।'

ये शब्द हैं महात्मा वेदभिक्षु के, जिसे उन्होंने पंजाब की बिगड़ती दशा को देखकर 'जनज्ञान' मासिक, गत जनवरी 1983 के अंक में लिखा था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यद्यपि आज महात्मा वेदभिक्षु हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन 'हिन्दू एकता', 'हिन्दू जाग्रति' एवं 'हिन्दू राष्ट्र' के नव निर्माण की दिशा में उनके द्वारा की गई 'सिंह-गर्जना' आज भी भारतीय हिन्दू समाज में नवजीवन का संचार कर रही है। पंजाब में सिख उग्रवादियों द्वारा निर्दोषों की हत्या से उनके हृदय में कितनी मर्मांतक पीड़ा, कितनी टीस और कितना आक्रोश भरा था, यह उनके द्वारा अभिव्यक्त उपर्युक्त शब्दों से सहज ही समझ में आ जाता है। साथ ही यह निष्कर्ष भी निकलता है कि यदि आज वह जीवित होते तो पंजाब में आए दिन हो रही बेकसूरों की हत्याओं पर कभी चुप नहीं रहते। बेकसूरों की सहायता में और उग्रवादियों के घिनौने क्रूर कर्मों के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने का वह हर संभव प्रयत्न करते।

आज इक्कीस दिसम्बर है, उनकी सुमनांजलि का दिन। इसी दिन सन् 1983 में ~ देश जाति एवं समाज की भलाई में अपना सर्वस्व होम देने वाला यह महामानव जीवन की अंतिम साँस तक जनहित में भेंट करता हुआ सदा-सदा के लिए इस असार संसार से चिर विदा ले लिया गया। महाप्रयाण कर गया इस धरती से वैदिक वाङ्मय का एक अनन्य पुजारी, एक अदम्य ध्येयनिष्ठ प्रचारक-प्रसारक, जिसकी क्षतिपूर्ति आर्यजगत के लिए कभी संभव नहीं है।

दुनिया का ऐसा कोई देश नहीं है जहां आर्य वंशधरों का निवास न हो और आर्य-संस्कृति का शंखनाद न गूंजता हो। लेकिन इतने विस्तृत क्षेत्र में फैली आर्य सभ्यता के लिए यह एक बहुत बड़ा अभिशाप था कि उनकी सभ्यता-संस्कृति एवं उसके अक्षय ज्ञान का स्रोत वेद महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व एकदम अनुपलब्ध था। आर्य संस्कृति के आधार स्तम्भ चारों वेदों के बारे में पौराणिक तत्त्वविदों ने आर्य जनता में यह मिथ्यापवाद प्रचारित कर रखा था कि चारों वेदों को लेकर शंखासुर पाताल लोक चला गया। इसलिए संसार में वेद अब कहीं नहीं रह गया है। किन्तु महर्षि दयानन्द के अथक प्रयत्नों से वेदों के दर्शन पुनः सुलभ हुए। महर्षि ने जर्मनी (जहां आर्यों के पवित्र ग्रंथ चारों वेदों की मूल प्रति सुरक्षित थी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से मंगवाकर उनका संस्कृत में न केवल पुनः प्रकाशन कराया, बल्कि प्राचीन आर्ष शैली के आधार पर उनके भाष्य भी तैयार कराए। इस प्रकार आर्ष-भाष्य सहित वेद का देश में पुनः प्रकाशन हुआ।

जनता में सभी वर्गों के लोगों तक वेदों की पहुंच सुलभ हो और उनके भाष्य सरल हिन्दी भाषा मे हों, जिससे कि कम पढ़े-लिखे लोग भी उसे समझें और उसका पूरा-पूरा लाभ उठा सकें, इस ध्येय को सामने रख कर अपने सतत प्रयत्नों से इन कठिनाइयों को सहज साध्य बनाया महात्मा वेदभिक्षु ने। उन्होंने सन् 1972 में निरंतर अहर्निश प्रयत्न कर चारों वेदों के भाष्य सरल हिन्दी में तैयार कराकर, उस समय जब चारों वेदों का लगभग एक सौ रुपये लागत मूल्य पड़ता था, उसके स्थान पर सिर्फ पैंतीस रुपये में चारों वेद हिन्दी भाष्य सहित सर्वसाधारण को उपलब्ध कराए।

इतने कम मूल्य में चारों वेदों का भाष्य लोगों को उपलब्ध कराना सचमुच बड़े जीवट का काम था, जिसे महात्मा वेदभिक्षु ने पूरा कर दिखाया। आरम्भ में महात्मा वेदभिक्षु ने हिन्दी भाष्य सहित चारों वेदों को कम मूल्य में लोगों तक पहुंचाने की जब घोषणा की तो लोगों के मन में उनकी इस घोषणा के प्रति आशंका पैदा हुई। सभी के मन में यह विचार उठा—'जिस काम को देश के साधन-सम्पन्न बड़े-बड़े प्रकाशक तथा आर्य समाज की बड़ी-बड़ी संस्थाएं भी नहीं कर सकीं, उसे आर्थिक साधनविहीन महात्मा वेदभिक्षु संभव कर दिखाएंगे, संदेह है।'

लेकिन इसे महर्षि का आशीर्वाद कहिए या दैव कृपा···जैसे ही महात्मा वेदभिक्षु ने हिन्दी भाष्य सहित चारों वेदों को कम कीमत (यानी सिर्फ पैंतीस रुपये) में छाप कर लोगों तक पहुंचाने की घोषणा की और इस महत् कार्य के लिए अपने संस्थान के मासिक पत्र 'जनज्ञान' में लोगों से अपील की तथा विज्ञापन दिये तो तुरन्त ही देश के विभिन्न स्थानों से हजारों की संख्या में ग्राहकों से आदेश प्राप्त होने लगे। फिर तो ग्रंथ छप कर जैसे-जैसे लोगों तक पहुँचने लगा, वैसे-वैसे वेद-भाष्य प्रकाशन के लिये धन की असीम वर्षा होने लगी। प्रथम संस्करण 12500 की संख्या में छपा। इतना जटिल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काम इतनी सरलता से पूरा हुआ देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए ।

वेद-भाष्य के प्रकाशन एवं उसके प्रचार-प्रसार की जितनी कल्पना महात्मा वेदभिक्षु ने की थी, उससे कई गुना बढ़ी-चढ़ी सफलता उन्हें प्राप्त हुई। इस काम में इतनी असीम सफलता मिलते ही महात्मा वेदभिक्षु ने अपने वैदिक वाङ्मय के प्रचार-प्रसार का दायरा और व्यापक बनाया। उन्होंने वेद सम्बन्धी अनेक दुर्लभ पांडुलिपियों का प्रकाशन-कार्य आरम्भ किया। इस प्रकार स्वामी वेदानन्द तीर्थ रचित—वेदामृत', स्वामी धर्मानन्द रचित—'वेदों का यथार्थ स्वरूप' स्वामी अभयदेव का 'वैदिक विनय' (वेदांजलि) और पं० रघुनन्दन शर्मा रचित—'वैदिक सम्पत्ति', आदि लगभग 500 से भी अधिक वैदिक ग्रंथ सस्ते दामों में छपवाकर जनता के हाथों तक पहुंचाये। ऐसे समय में जब इस्लाम और ईसाई धर्म-प्रचारकों ने हिन्दुओं

वस्तुत: वेदभिक्षु जी में एक सतत जाज्वल्यमान ज्वाला थी, जो आज भी आलोकित कर रही है। हिन्दू जाति की जीर्ण-शीर्ण विपन्नावस्था देखकर वह प्राय: बहुत दु:खी रहा करते थे… और प्रसंगवश कहा भी करते थे—'इस हालत में हम अकर्मण्य नहीं बैठ सकते ! मुझे विश्वास है इस जाति में भी कभी न कभी प्राण अवश्य आएंगे ।'

—**डाक्टर प्राणलाल**

के धर्मान्तरण का भयानक दुष्चक्र चला रखा है, महात्मा वेदभिक्षु द्वारा इन ग्रन्थों के प्रकाशन से आर्यजनों (हिन्दुओं) को बहुत बड़ा नैतिक बल मिला है और मिला है विधर्मियों के दुष्चक्रों से आर्य संस्कृति के बचाव का अभेद्य कवच ।

यद्यपि आज महात्मा वेदभिक्षु जी शारीरिक दृष्टि से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने इन महती कार्यों से वह युग-युगान्तर तक आर्य-जगत में श्रद्धापूर्वक स्मरण किये जाते रहेंगे और जब तक आर्य-संस्कृति है, मन-वचन-कर्म से महात्मा वेदभिक्षु हमारी आंखों के सामने सदैव ज्योतिर्मान् मिलेंगे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द यदि आर्यों के पवित्र ग्रंथ वेदों के उद्धारक थे तो महात्मा वेदभिक्षु उनके अपूर्ण कार्य के प्रति समर्पित एक अटल ध्येयनिष्ठ प्रचारक। उनके वेद-वेदान्त प्रचार-प्रसार की गतिशीलता पर जब हम सूक्ष्मरूप से दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि महात्मा वेदभिक्षु तन-मन-वचन और कर्म से निष्काम भाव वेदमय वन गये थे। वेद-वेदान्त, आर्य-एकता, आर्य-संस्कृति एवं आर्यधर्म - चौवीसों घंटे यही उनके मनन-चिन्तन के विषय थे। इससे अलग हटकर कोई अन्य कर्म उनके लक्ष्य में था, कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता ?

आर्य जनों के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा एवं प्रेम था। वह उठते-बैठते, सोते-जागते सब समय आर्य समाज की उन्नति और उसके विकास के बारे में ही सोचते रहते थे। आर्य समाजियों में परस्पर फूट को वह बरदाश्त नहीं कर पाते थे। जब कभी आर्यजनों में परस्पर टकराव की स्थिति उत्पन्न होती तो उनका हृदय रो पड़ता था। ऐसी स्थिति में वह टकराव की स्थिति पैदा करने वालों को खूब खरी-खरी सुनाते थे। इस तथ्य की जानकारी उनके इन शब्दों से मिलती है—

'बहुत सोचने पर भी हम नहीं समझ पा रहे कि आर्य समाज के अधिकारियों को क्या हो गया है कि वे ऋषि दयानन्द के मार्ग से भटककर पता नहीं कहाँ जा रहे हैं ? बड़े-बड़े भवनों में बैठे प्रधानों और मंत्रियों के मस्तिष्क इतने विकृत हो चुके हैं कि उन्हें ज्ञात ही नहीं कि आखिर उनका कर्त्तव्य क्या है ? सबने आर्य समाज को अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया है। इस पथ-भ्रष्टता को कैसे बदला जाय ? यह हम समझ नहीं पा रहे, क्योंकि नीचे से ऊपर तक सब बिगड़ चुके हैं। कहीं आर्य समाज के लक्ष्य के प्रति प्यार नहीं दिखता। सब आर्य समाज से अपने को बना रहे दिखते हैं। नगर-नगर में आर्य समाज को युद्ध-शिविर के रूप में देखने की हमारी इच्छा है पर आर्य समाज के कर्णधार ही प्रगति के मार्ग की बाधा बन गए हैं। बाड़ खेत को खा रही है तो रक्षा कौन करे ? ऋषि दयानन्द की दिव्य ज्योति से अंधकार मिटाने का व्रत लेकर तूफानों से टकराने को कौन तैयार है ?'

इन पक्तियों को देखने से पता चलता है कि महात्मा जी आर्य एकता के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कितने बड़े प्रबल समर्थक थे। इन पंक्तियों को पढ़ने और मनन-चिन्तन करने पर उनकी बहुमुखी प्रतिभा का पता चलता है कि एक आदर्श चरित्र नायक के लिए जितने गुणों की आवश्यकता होती है, उन सबका समन्वय उनके जीवन में मिलता है। अपने पुरुषार्थ भर उन्होंने देश, समाज, संस्कृति, शिक्षा और संगठन के हित में जितना किया, कोई साधन-सम्पन्न व्यक्ति भी उतना नहीं कर पाएगा। शारीरिक अवस्थता होने पर भी उनका सदैव यही नारा रहा —'चरैवेति-चरैवेति !'

वह अपने जीवन में कितना और क्या-क्या करना चाहते थे, इसका पता चलता है इन पंक्तियों से—

'मैं जीवन के अंतिम कगार पर खड़ा हूं। डाक्टरों ने मधुमेह और अलसर बता दिया है। पैरों में सूजन रहती है। पिछले वर्ष पक्षाघात का आक्रमण भी हो चुका है, फिर भी मन से स्वस्थ रहकर कार्य में लगा हूँ।

'बहुत कुछ करने की इच्छा है। पिछले 28 वर्षों से निरन्तर आर्य समाज का संदेश फैला रहा हूँ। कभी भी आराम नहीं किया। अपने लिए, परिवार के लिए कुछ भी नहीं जोड़ा। सभी को काम में लगाया और जो संभव हुआ, किया ?

'सफलता भी अभूतपूर्व मिली। जो सोचा, वह पूरा हुआ। अब संसार में वैदिक विचारधारा के साम्राज्य की स्थापना के उद्देश्य से 'वेद-मन्दिर' बनाने में जुट गया हूँ।

'भीषण गरमी में भी बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान गया। दिन रात एक ही इच्छा है कि प्रकाश-स्तम्भ के रूप में 'वेद-मन्दिर' बन जाए। बनेगा, यह मेरा विश्वास है।

'पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कहा था—'बिरला मंदिर' से भी सुन्दर बनाना 'वेद मंदिर।' मैं इसे संसार के सभी व्यक्तियों का तीर्थ बनाना चाहता हूँ। मतवाद जाति और देश से ऊपर उठकर मनुष्य को मानवता के धर्म का संदेश देने में 'वेद-मन्दिर' समर्थ हो, यह मेरी इच्छा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जो कहा—वह सदा किया। मैं आपसे कहता हूं कि न मेरी सुनो, न किसी और की, अपनी बुद्धि से परखो हमारे काम को? यदि आप यह स्वीकार करें कि दयानन्द संस्थान सचमुच दयानन्द का कार्य कर रहा है, तो सहयोग दें। हमें करोड़ों-अरबों रुपए चाहिए। हमें इस्लाम, ईसायित, कम्युनिज्म आदि सारी दीवारों को उखाड़ फेंकनी है। क्या यह सब बिना साधनों के होगा? बताओ?—आप ही कहो? क्या बिना हथियार के युद्ध जीता जा सकता है?

जुलाई, सन् 1977 में 'वेद-मंदिर का उद्घाटन समारोह था। महात्मा वेदभिक्षु यज्ञ-मण्डप में मौजूद थे, लेकिन उनकी पत्नी श्रीमती राकेश रानी किसी काम से कार्यालय में चली गई थीं। यज्ञ का समय हो रहा था। पुरोहित जी ने महात्मा जी की पुत्री से कहा 'बेटी, जाकर, अपनी मम्मी को शीघ्र बुला लाओ?'

'मम्मी' शब्द सुनते ही महात्मा जी का चेहरा उद्दीप्त हो गया। वह बोले—'क्या कहा आपने ?—'मम्मी' यहाँ 'मम्मी-डैडी' नहीं चलता? यहाँ 'मम्मी-डैडी' कहने वाले बालक को चपतें लगती हैं। यहाँ बच्चों को सिखाया जाता है—'अम्मा जी' और 'पिताजी!'

यज्ञ-मण्डप में शांत चित्त बैठे महात्मा वेदभिक्षु को 'मम्मी' शब्द ने इतनी गहरी चोट पहुंचाई कि वह पुरोहित के प्रति आतिथ्य भाव बिलकुल भूल गए। सचमुच भारतीय संस्कृति और भारतीयता के प्रति उनका अनुराग कुछ ऐसा ही था।

—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

'हम लड़ रहे हैं और लड़ेंगे, जीवन की अंतिम सांस तक लड़ेंगे—काल से भी लड़ेंगे और जीतेंगे। प्रश्न केवल यह है कि क्या आप इस युद्ध में एक सैनिक बनकर हमारे साथ नहीं चल सकते?

'आप जो देंगे, हम स्वाहा कर देंगे—परिणाम आपके सामने है। देश में वेद का डंका बज रहा है, अब संसार में भी बजाना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्राह्मण हूं—'जन्म से भी, कर्म से भी। ब्राह्मण का काम है झोली फैलाना देश-धर्म और वेदों की रक्षा के लिए आपसे मांगता हूं, यह कहकर कि आंखें खोलो—सत्य को परखो और यदि विश्वास हो तो मूकदर्शक मत बनो, हमारी झोली भर दो ? हम वचन देते हैं कि संसार में वैदिक पताका लहराने के लिए अपने जीवन की अंतिम सांस तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा। हमें ही नहीं, जो भी हमारे बाद हमारा स्थान ग्रहण करेगा, उसे भी सर्वस्व की आहुति देनी होगी।'

अपने इन्हीं क्रांतिकारी उद्‌गारों के सम्पूर्ण भावों को महात्मा जी ने काव्य की चन्द पंक्तियों में इस प्रकार पिरोया कि उसे पढ़-सुन कर मुरदा से मुरदा इन्सान की भुजाएं फड़फड़ा उठती हैं जीवन में कुछ कर गुजरने के लिए—

'बात बातों से बनती नहीं है कभी,
प्राण अर्पित करो बात बन जाएगी,
जिन्दगी का सफर अब है थोड़ा बचा,
साथ दे दो सभी राह जगमगाएगी,
साथ अपने चलो, बांध कफन सिर पर,
युग-शहीदों की टोली, बदल जाएगी।'

× × ×

'सोचने का समय नहीं,
हम काम कर रहे हैं,
काम के लिए—
तन दो !
मन दो !
धन दो !
कुछ भी नहीं दे सकते तो—
आशीर्वाद दो !'

जहां इतने प्रखर ओजस्वी एवं उदात्त भाव-विचार हों वहां सरस्वती और लक्ष्मी की कृपादृष्टि उस महामानव पर क्यों न हो ? फिर व्यक्ति में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतनी बिसात कहां कि उस महिमामंडित राष्ट्र-भक्त का आह्वान सुनकर भी हाथ पर हाथ धरे चुपचाप बैठा रह सके ! ··· महात्मा वेदभिक्षु के इन ओजपूर्ण भाव विचारों एवं निश्छल त्यागमय जीवन के कारण ही उनके इतने मतानुयायी एवं इतनी विशाल शिष्य मण्डली तैयार हो गई थी, जो सदैव उन्हें चारों ओर से घेरे रहती थी और गाहे-बगाहे उनके जटिल से जटिल कार्यों को भी बिना किसी आदेश-निर्देश के ही तत्परता से पूरा करने को सब समय उद्यत रहती थी। यह उनका नैतिक चरित्र बल ही कहा जाएगा जो इतने सारे अनगिनत लोग उनके अनुयायी और शिष्य मण्डली में विराज रहे थे। तभी तो डॉक्टर कृष्णलाल ने उनके प्रति अपनी एक अभिव्यक्ति में कहा था—'वस्तुतः वेदभिक्षु जी में एक सतत जाज्वल्यमान ज्वाला थी, जो आज भी आलोकित कर रही है। हिन्दू जाति की जीर्ण-शीर्ण विपन्नावस्था देखकर वह प्रायः बहुत दुखी रहा करते थे ··· और प्रसंगवश कहा भी करते थे—इस हालत में हम अकर्मण्य नहीं बैठ सकते ! मुझे विश्वास है, इस जाति में भी कभी न कभी प्राण अवश्य आएंगे।'

बातचीत, रहन-सहन और आचरण-व्यवहार में महात्मा वेदभिक्षु कितने महान स्वदेशी थे, इसका ज्वलन्त उदाहरण मिलता है स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के शब्दों में—'मानव जीवन में स्मृतियों का बहुत मूल्य है। ये स्मृतियां ही हैं, जिनसे हमारा शारीरिक और जागतिक सम्बन्ध छूट गया होता है। उसके साथ पुनः जोड़कर उस परिस्थिति से सम्बन्धित अशेष विषय-वस्तु, घटना-स्थल, वातावरण तथा व्यक्ति को जीवन्त स्वरूप देकर नई चेतना का संचार कर देती है। महात्मा वेदभिक्षु जब पं० भारतेन्द्रनाथ के रूप में थे, सन् 1977 के जुलाई मास में 'वेद-मन्दिर' का उद्घाटन समारोह था। यज्ञवेदी पर पण्डित जी विराजमान थे, किन्तु उनकी पत्नी श्रीमती राकेश रानी जी किसी कार्यवश कार्यालय में गई थीं। यज्ञ का समय हो रहा था। उस समय पुरोहित जी ने उन्हीं की बच्ची से कहा—'बेटी, जाओ अपनी मम्मी को शीघ्र बुला लाओ ?'

'मम्मी' शब्द सुनते ही महात्मा जी का चेहरा उद्दीप्त हो गया। वह पुरोहित जी से बोले—'क्या कहा आपने ? 'मम्मी' ! यहाँ 'मम्मी'-डैडी'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं चलता ! यहाँ 'मम्मी-डैडी' कहने वाले बालक को चपतें लगतीं हैं। यहां बच्चों को सिखाया जाता है—'अम्मा जी' और 'पिताजी !'

'पुरोहित जी बड़े लज्जित हुए। यज्ञ-मण्डप में शान्त चित्त बैठे महात्मा वेदभिक्षु को 'मम्मी' शब्द ने इतनी गहरी चोट पहुंचाई कि वह पुरोहित के प्रति आतिथ्य भाव बिलकुल भूल गए। सचमुच भारतीय संस्कृति और भारतीयता के प्रति उनका दृढ़ अनुराग कुछ ऐसा ही था।'

उनके व्यक्तित्त्व का सांगोपांग विश्लेषण करने पर पता चलता है कि वह स्वयं में एक संस्था थे। एक कर्मठ, उत्साही, और लगनशील चरित्र वाले व्यक्ति थे। सफल लेखक, कवि, आलोचक, विचारक, सम्पादक, संगठक और प्रचारक आदि एक साथ सारे गुण उनमें ओतप्रोत थे। इतना प्रखर सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्त्व लेकर कोई बिरला ही अवतरित होता है इस धरा धाम पर। उनके बारे में यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि वह सफल सम्पादक, संगठन, प्रचारक एवं विचारक के साथ-साथ उच्चकोटि के एक कवि भी थे। पाठकों की जानकारी के लिए उनकी कविता की कुछ चंद पंक्तियां यहाँ पर उद्धृत हैं। मौज-मजा एवं आनन्द-उल्लास का जीवन जीने के लिए दुनिया प्रतिक्षण सुख-संसाधनों को निमंत्रित करती है। लेकिन महात्मा वेदभिक्षु अपनी इस भाव-प्रवण कविता में मृत्यु को निमंत्रित करते दिखाई पड़ते हैं—

तुम जिन्दगी को बुलाओ,
मैं मौत को बुला रहा हूं,
अपनी मृत्यु को, और
उन सबको भी,
जिन्होंने जिन्दगी को जीते जी
मार दिया है।
जिन्दगी मर जाए,
हम देखते रहें,
क्या इससे—यह अच्छा नहीं है कि—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम मर जाएं
और जिन्दगी मुस्कराए ।
आंसू कायर बहाते हैं,
खून आंखों में उतारो मेरे वीर
चूड़ियां मत पहनो,
तोड़ दो उन्हें !

एक दूसरी बानगी भी देखते ही बनती है ।

शीर्षक है—

मण्डप का द्वार

तुमको मण्डप की चिन्ता है,
उसे सजाते ही रहते हो,
मुझको मरघट प्रिय है इतना,
उसे बसाना सोच रहा हूं ।

मैं जीवन में घूम रहा हूं,
आशा है मेरे मानस को,
मरघट-मण्डप सजा सकूंगा,
तभी कहूंगा—
चला जा रहा लक्ष्य लिए मैं ।

भाषा और शब्दों के चयन में कितना ओज, माधुर्य एवं सौष्ठव है । उदाहरण के लिए एक बानगी और सही—

जीवन एक धारा है,
जो अविरल गति में प्रवाहित है,
इस प्रवाह में शक्ति है—
भावना है, चिन्तन है,
और है कुछ कर पाने की ललक !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

**यह गति निरंतर संचालित रहे
इसके लिए आवश्यक है कर्म
और कर्म को दिशा निर्देश के लिए—
आवश्यक है धर्म !**

इन पंक्तियों की भावाभिव्यक्ति के गहनतल में जाने पर पता चलता है कि महात्मा वेदभिक्षु ने जिन्दगी और मौत में इतना तादात्म्य स्थापित कर लिया था कि दोनों में कोई भेद नहीं मानते थे। इन्हें देखने से जान पड़ता है कि उन्हें अपने महाप्रयाण का पूर्वाभास हो गया था। मौत से न तो उन्हें किसी प्रकार की घबराहट थी और न ही किसी प्रकार का भय, बल्कि चलती-चलाती की वेला में वह जिन्दगी को कर्मपथ पर गतिशील बनाए रखने की बात करते थे। मौत को भी वह अपनी व्यस्त जिन्दगी एक अभिन्न अंग मानते थे।

वास्तविकता चाहे जो भी रही हो, लेकिन इतना तो मानना ही पड़ेगा कि उन्होंने जिस परिवार में जन्म लिया था, वहां का पूरा वातावरण समाज एवं राष्ट्रसेवी तथा पूरी तरह क्रान्तिकारी था। इनके पिताश्री गयाप्रसाद जी शुक्ल और मातुश्री विद्यावती शारदा देवी का जिन परिस्थितियों में पाणि-ग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ था, वह भी अपने आप में एक आश्चर्यजनक क्रांतिकारी घटना थी। विवाह-बंधन में बंधने से पूर्व पिताजी ने गुरुकुल महाविद्यालय—ज्वालापुर में आचार्य नरदेव शास्त्री के शिष्यत्व में विद्याध्ययन किया था और माताजी शारदा निकेतन (ज्वालापुर) की छात्रा थीं। आरम्भ से ही दोनों आर्य समाजी और राष्ट्रवादी विचारों के थे। दोनों में ही कुछ कर गुजरने की प्रबल लालसा थी। इस वैचारिक एवं चारित्रिक समानता ने दोनों को एक-दूसरे के निकट लाने में बड़ी मदद की।

उन दिनों ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध उत्तर भारत में क्रांतिकारी हलचलें बड़ी तेज थी। श्री गयाप्रसाद जी भला इस अवसर से कब चूकने वाले थे। वह भी क्रांतिकारी गतिविधियों में खुलकर हिस्सा लेने लगे।

श्री गयाप्रसाद अपने समय के काफी दबंग व्यक्ति थे। अन्याय और अत्याचार के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। शारीरिक स्वास्थ्य की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृष्टि से भी वह अत्यन्त स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे। पुलिस वाले उन्हें फूटी आँख भी नहीं सुहाते थे। संयोगवश यदि कोई पुलिस वाला उनको दिख जाता तो वह उससे कुछ काम कराये बिना कभी वापस नहीं जाने देते थे। पुलिस वाले ने यदि उनके हुक्म का पालन किया तो ठीक, अन्यथा इनकार करने पर उसकी खैर नहीं, यहाँ तक कि वह उसकी वर्दी भी उतरवा लेते थे। इसीलिये पुलिस वाले उनसे पहले से चौकन्ना रहते और दूर से देखते ही आँख बचाकर कन्नी काट जाते थे। जेलों के दरवाजों और खिड़कियों में लगे लोहे के मोटे-मोटे मजबूत छड़ों को वह अपने दोनों हाथों से इस तरह मोड़ देते थे, जैसे कोई बच्चा बांस की पतली-पतली शाखों को मरोड़ देता है। इसलिये उनसे जेल कर्मचारी भी घबराये हुए और काफी सतर्क रहते थे।

इसी समय एक दिन क्रांतिकारी नेता चन्द्रशेखर आजाद और रामप्रसाद विस्मिल के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्टेशन पर ट्रेन से जाते सरकारी खजाने को लूट लिया। उत्तर भारत में घटी यह घटना ब्रिटिश सरकार के लिये क्रांतिकारियों द्वारा दी गई बहुत बड़ी चुनौती थी। इस काकोरी षड्यंत्र कांड से भारत का पूरा ब्रिटिश प्रशासन हिल उठा था। चारों ओर क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू हो गई। इसी क्रम में उत्तर भारत के सशक्त क्रांतिकारी नेता श्री रामप्रसाद विस्मिल अपने कई कर्मठ क्रांतिकारी साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें गोरखपुर के घंटाघर चौराहे पर ही फांसी पर लटका दिया गया। दल के नेता चन्द्रशेखर आजाद का अपने क्रांतिकारी साथियों के लिये कड़ा निर्देश था कि 'वे जिस तरह भी हो सके अपने को गिरफ्तारी से बचायें, क्योंकि गिरफ्तार होकर जेलों में बंद हो जाने से क्रांति का उद्देश्य कभी पूरा नहीं होगा। देश की आजादी के लिये बाहर रहकर ही कुछ किया जा सकता है।'

हमारी कथा के चरित्रनायक यानी मेरे दादाजी श्री गयाप्रसाद शुक्ल भी काकोरी केस के मुख्य अभियुक्तों में से एक थे। पुलिस हाथ धोकर क्रांतिकारियों के पीछे पड़ी हुई थी। चारों ओर गिरफ्तारी का जाल-सा बिछा हुआ था। इस संकटग्रस्त माहौल में दल के निर्देशानुसार श्री गयाप्रसाद जी को गिरफ्तारी से बचना असम्भव-सा जान पड़ा। आखिर में जब कोई उपाय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु की महान क्रांतिकारी जननी
विद्यावती शारदा देवी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नजर नहीं आया तो कानून और पुलिस को चकमा देने के लिये सुश्री विद्यावती शारदा देवी के साथ आनन-फानन में उनके ब्याह का मंडप रचाया गया। जिस समय पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिये पहुंची उस समय विवाह-मंडप में गयाप्रसाद जी के फेरे पड़ चुके थे। उस समय भी उनकी छोटी-सी पिस्तौल उनके पास थी, जिसे उन्होंने लोगों की दृष्टि बचाकर अपनी जीवन संगिनी सुश्री विद्यावती देवी को दे दिया और उन्होंने उसे अपने जूड़े में छिपा लिया। मौके पर तलाशी में पुलिस को कुछ नहीं मिला। फिर लोगों के इस बयान पर कि गयाप्रसाद जी तो विवाह-मंडप में हैं। वह विवाह-वेदी छोड़कर कहीं गये ही नहीं, पुलिस-दल वापस चला गया। सुश्री विद्यावती देवी के पूछने पर उन्होंने कहा—'यह है विवाह के उपलक्ष्य में एक क्रांतिकारी का उपहार।'

श्री गयाप्रसाद जी ने अपने जीवन में धन का लोभ कभी नहीं किया। ऐसी अनेक घटनायें हैं उनके जीवन की जो उनके निर्लोभी, निश्छल एवं सात्विक प्रवृत्ति को उजागर करती हैं। कहते हैं—कलकत्ता में उनकी इत्र की एक दुकान थी। उस समय उत्तर प्रदेश—तिरवां रियासत के राजा से उनकी बड़ी घनिष्ट मित्रता थी। एक दिन जब वह कलकत्ता जाने लगे तो राजा साहब ने उनसे अच्छी किस्म का इत्र लाने को कहा।

वापस आने पर श्री गयाप्रसाद जी राजा साहब की अमानत लेकर उनके महल में पहुंचे और इत्र की शीशी जब राजा साहब को देने लगे तो उन्होंने परिहास के स्वर में कहा—'पंडित जी, यह इत्र नकली तो नहीं है?'

यद्यपि यह बात राजा साहब ने मजाक में कही थी, तो भी इसे सुनकर गयाप्रसाद जी की भवें तन गयीं। उन्होंने जवाब दिया—'अभी पता चल जाता है।'

कहते हुए उन्होंने शीशी जोर से जमीन पर पटक दी। शीशी के फूटते ही सारा इत्र जमीन पर बिखर गया और राजमहल सुगंध से भर उठा। इतनी तीव्र सुगंध जीवन में किसी को कभी न मिली थी। 'क्या हुआ?… क्या हुआ?…यह सुगंध कैसी?…कहाँ से आ रही है?' कहते हुए महल के सभी लोग राजा साहब के कमरे की ओर दौड़ पड़े। (शेष पृष्ठ ६५ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या धरा में ठांव ऐसा ?

कर्म से ही कर्म को छलता न हो इंसान कोई,
क्या धरा में ठांव ऐसा भी धरा भगवान कोई ?
हो न किंचित वासना के बीज का कोई समन्वय,
साधना के नाम पर होता न हो छल-छद्म अभिनय,
जीविका के नाम पर अधिकार का सौदा नहीं हो,
मनुज से ही मनुजता के रूप पर परदा नहीं हो,
कागजों के मोल में बिकता न हो ईमान कोई,
क्या धरा में ठांव ऐसा भी धरा भगवान कोई ?

दीख पड़ता है न संयत वरद वाणी-पुत्र कोई,
हो न जीवन श्रीलसित जग ? संहिता का सूत्र कोई,
खिन्न-व्यथित अनंग कितने आँसुओं में ढल रहे हैं,
सहस्रों की भूख से पटहीन संत विकल रहे हैं,
चंद टुकड़ों पर न बिकता हो कहीं इसान कोई,
क्या धरा में ठांव ऐसा भी धरा भगवान कोई ?

नववधू की मांग से धुलता न हो सिंदूर कोई,
हो न घूंघट पट उठाना कर रहा मंजूर कोई,
बेवसी में दासता की लौ कहीं जलती नहीं हो,
जिन्दगी जीवन-धरा पर प्यार में छलती नहीं हो,
लोक-लज्जा में न लुटता हो कहीं श्रीमान कोई,
क्या धरा में ठांव ऐसा भी धरा भगवान कोई ?

त्यागियों के नाम पर शोषण-निरत त्यागी नहीं हों,
लीन संस्कृति की विक्षति में भाष्य अनुरागी नहीं हों,
चाँद-सूरज से गगन के राज विलगाए नहीं हों,
साधना में अर्चना के पुष्प मुरझाए नहीं हों,
संकलन करता नहीं हो मौत का सामान कोई,
क्या धरा में ठांव ऐसा भी धरा भगवान कोई ?

—परमहंस प्रमोद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व के प्रकाश-स्तम्भ

वीर सावरकर

—ए. आर. विराह्मस

हिन्दू धर्म कोई सामान्य धर्म न होकर ऐसे अनेक धर्मों एवं सम्प्रदायों का समूह है, जिन सम्प्रदायों में परस्पर भिन्नता ही नहीं, अपितु विरोधाभास भी विद्यमान हैं। हिन्दू सम्प्रदायों को कोई यह कहकर भी आघात नहीं पहुँचा सकता कि अमुक सम्प्रदाय हिन्दू ही नहीं है।

हिन्दू शब्द का मूल आशय उन लोगों से है, जो सिन्धु सरिता से महासिन्धु पर्यन्त विस्तीर्ण इस भू-खण्ड में निवास करते हैं।

पाँच वर्ष का एक बालक अपनी कुलदेवी सिंहवाहिनी दुर्गा के ध्यान में मग्न बैठा था। बालक को बाहरी व्यवधानों से अनभिज्ञ हो एकाग्रचित्त माँ दुर्गा की पूजा करते देखकर उसके माता-पिता बहुत प्रफुल्लित हो रहे थे। पिता की ओर देखकर माँ ने कहा—'हमारा पुत्र आगे चलकर अवश्य ही बड़ा आदमी बनेगा।'

पिता ने भी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा—'निस्सन्देह यह एक महापुरुष होगा। बड़ा होने पर यह महान् स्वतन्त्रता सेनानी बनकर इतिहास में प्रसिद्ध होगा। माँ भारती को विदेशी जंजीरों से मुक्त कराकर 'स्वतन्त्र हिन्दू-राष्ट्र की स्थापना' करने हेतु माँ दुर्गा से शक्ति मांग रहा है।'

निस्सन्देह यही बालक आगे चलकर हिन्दू-हृदय-सम्राट वीर सावरकर के नाम से विख्यात हुआ। सावरकर के बचपन का नाम तांत्याराव था। उनका जन्म हिन्दूनिष्ठ विचारों वाली माँ राधाबाई की गोद से महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर ग्राम में 28 मई, 1883 को हुआ था। जन्म से ही माता-पिता द्वारा हिन्दू-दर्शन के उन्नायक स्वामी रामकृष्ण परमहंस की आख्यायिकायें तथा हिन्दू-सूर्य महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी की शौर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गाथायें सुनते-सुनते स्वयं एक कट्टर हिन्दू बन गए। इनके पिता दामोदर राव सावरकर की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। यह आगे चलकर हिन्दुत्त्व के प्रकाश-स्तम्भ महान् स्वतन्त्रता सेनानी बनकर 'स्वतन्त्र हिन्दू-राष्ट्र' का नारा उद्बोध करने लगे।

प्रातः स्मरणीय स्वामी दयानन्द सरस्वती के बाद विनायकराव दामोदर-राव सावरकर ही भारत माता के एक ऐसे राष्ट्र-भक्त सपूत हैं, जिन्होंने विच्छिन्न हिन्दू धर्म को एक सूत्र में बांधने का सबसे जबरदस्त काम किया। इन्होंने हिन्दुओं की विविधता में एकता स्थापित करने हेतु—'हिन्दुत्त्व', 'हिन्दू-पद पादशाही', 'हिन्दुत्त्व के पांच प्राण', 'संयस्त खड्ग' आदि कई अमूल्य रचनायें भेंट कीं।

हिन्दुत्त्व की परिभाषा

इन ग्रंथों में सावरकर ने हिन्दुत्त्व की परिभाषा विश्लेषित करते हुए लिखा—'हिन्दू शब्द से ही 'हिन्दुत्व' और 'हिन्दू धर्म' दोनों शब्दों का उद्भव हुआ है। अतः इसका अर्थ समग्र हिन्दू जाति से सम्बन्ध रखने वाला है। हिन्दू धर्म की जिस किसी भी परिभाषा में हमारी जाति के किसी अंग की अभिव्यक्ति न हो अथवा उसे अपने कतिपय संस्कारों को गुप्त रखना पड़े, वह परिभाषा निरर्थक है। वस्तुतः हिन्दू धर्म हिन्दू मात्र का सामान्य धर्म है। वह प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू है, जो हिन्दू धर्म का पालन करता है।

'हिन्दू' शब्द का उद्भव सिन्धु से होने के परिणामस्वरूप इसका मूल आशय ही उन लोगों से है जो सिन्धु नदी से महासिन्धु पर्यन्त इस विस्तीर्ण भूखण्ड में निवास करते हैं। अतः हिन्दू धर्म का तात्पर्य उस धर्म अथवा उन धर्मों से है जो इस देश एवं इस जाति के सहोदर हैं। इन विभिन्न धर्म सिद्धांतों और आचार-व्यवहारों में हमें यदि कोई समन्वय परिलक्षित न हो तो यही कहना होगा कि हिन्दू धर्म कोई सामान्य धर्म न होकर ऐसे अनेक धर्मों एवं सम्प्रदायों का समूह है जिन सम्प्रदायों में परस्पर भिन्नता ही नहीं, अपितु विरोधाभास भी विद्यमान है। हिन्दू सम्प्रदाय को कोई यह कहकर कभी आघात नहीं लगा सकता कि अमुक सम्प्रदाय हिन्दू नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस जाति के वैदिक और अवैदिक दोनों ही मतों के प्रवर्तकों ने अनेक तथ्यों के प्रतिपादन के उपरान्त अनेक नये-नये तत्त्वों का आविष्कार कर, अनेक वस्तुओं का ज्ञान उपलब्ध किया। निम्न से निम्नतम और उच्च से उच्चतम—अणु से आत्मा और परमात्मा से परब्रह्म तक सम्पूर्ण चराचर सृष्टि की तत्काल सम्भव चिकित्सा और परीक्षा कर, विचार सृष्टि के गूढ़ रहस्यों की जानकारी प्राप्त कर, परमानंद की अनुभूति करते हुए एक ऐसा समीकरण खोज निकाला था, जिसके सत्य का अन्वेषण करने वाले प्रत्येक अन्वेषक को मानसिक समाधान की उपलब्धि होती थी, वह सत्यान्वेषी चाहे द्वैतवादी था या अद्वैतवादी, आस्तिक था अथवा नास्तिक। इस समीकरण का ध्येय है—सत्य की खोज और साधना है आत्मानुभूति। इस समीकरण में वैदिक और अवैदिक दोनों का ही समागम है। अथवा यों कह लीजिए कि यह प्रत्यक्ष धर्म का अनुभव सिद्ध शास्त्र है—और इसी का नाम है हिन्दू धर्म। वैदिक, सनातनी, बौद्ध, जैन और सिख आदि सभी मत-मतान्तरों का एकीकरण करने के उपरान्त जो सत्य और निर्णायक तत्त्व उद्भूत हुए हैं उन्हीं सब तत्त्वों की सत्यता को हिन्दू धर्म की पावन संज्ञा प्राप्त हुई है। जितने भी धर्म, सिद्धान्त और धार्मिक सम्प्रदाय 'सप्त सिन्धु' नाम से सुविख्यात इस भूखण्ड में तथा भावी विराट सिन्धुस्थान अथवा हिन्दुस्तान में उत्पन्न हुए उन सबका अन्तर्भाव हिन्दू धर्म में ही होता है और वे सभी धर्म और मत-मतान्तर हिन्दू धर्म के ही अविभाज्य अंग हैं। इसी हिन्दू धर्म की स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने निम्नलिखित व्याख्या की थी—

> प्रामाण्य बुद्धिर्वेदेषु साधनानाम नेकता।
> उपास्या नाम नियम एतद्धर्मस्य लक्षणम्॥

हिन्दू शब्द की 'प्राचीनता'

सावरकर ने हिन्दू शब्द को सबसे प्राचीन धर्म के रूप में प्रस्तुत किया है। सावरकर द्वारा प्राचींनता विषयक निम्न पाँच प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं—

(1) 'हिन्दू' शब्द की उत्पत्ति न तो मुसलमानों द्वारा हुई है, न ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमानों ने प्राथमिक रूप से यह शब्द हमारे राष्ट्र के लिए सम्बोधित ही किया है।

(2) हिन्दू, हिन्दुस्तान, हिन्द—इन प्राकृत शब्दों का मूल उद्‌गम ऋग्वेदकालीन सप्त सिन्धु नामक हमारे अपने प्राचीनतम राष्ट्रीय अभिधा में ही हैं।

हमारे वेदकालीन पूर्वजों ने ऋग्वेद में 'सप्त सिंधवः' शब्द को देशवाचक एवं राष्ट्रवाचक अर्थों में स्वतः की राष्ट्रीय अभिधा के रूप में, स्वतः के हेतु प्रयुक्त किया है।

उस प्राचीन काल में हमारे निकटस्थ ईरान, वेबिलोन आदि प्राचीन अरब राष्ट्र हमारे 'सप्त सिन्धु' राष्ट्रीय अभिधा से ही हमें जानते थे। 'पारसियों' ने ढाई हजार वर्ष पूर्व अपने धर्म ग्रंथों में हमारे राष्ट्र को 'हप्त हिन्दू' से सम्बोधित किया है। तत्कालीन प्राचीन 'वेबिलोनियन' ग्रंथों में हमारे देश के निर्मित सुन्दर झीने वस्त्रों को 'सिन्धु' या 'सिंधवः' कहा है।

(3) हिन्दू, हिन्दुस्तान आदि प्राकृत रूप हमारे 'सप्त सिन्धु', 'सिन्धुस्थान' इन संस्कृत एवं स्वकीय प्राचीन अभिधाओं का ही रूप है, यह बात हमारे प्राचीन पंडितों को ज्ञात थी।

(4) 'सप्तसिन्धु' 'सिन्धु देश' 'सिन्धुस्थान' आदि शब्दों का प्राकृत रूप 'हिन्दू' भी हमारे ही प्राकृत नियमों के अनुरूप रूढ़ हो गया।

(5) उपर्युक्त वर्णित हिन्दू शब्द के इतिहास से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह हिन्दू शब्द मूलतः देश वाचक एवं राष्ट्र वाचक है, किसी विशिष्ट धर्म या मत का निदर्शक नहीं।

हिन्दू नाम की उत्पत्ति

सावरकर ने अपने ग्रन्थ—'हिन्दुत्व' और 'हिन्दुत्व के पांच प्राण' में लिखा है कि अभी तक इतना ऐतिहासिक अनुसंधान नहीं हो सका है कि निश्चित रूप से यह कहा जा सके कि आर्यजन पहले पहल किस युग में सिंधु नदी के तट पर आकर बसे, अपितु हमारे पास ऐसे भी अकाट्य प्रमाण हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि पड़ोसी राष्ट्र भी हमें 'सप्तसिन्धु' के नाम से ही पुकारते थे। संस्कृत का अक्षर 'स' भारतीय एवं भारतीयेतर प्राकृतों में आकर 'ह' हो जाता है। उदाहरण के लिए 'सप्त' शब्द भारतीय प्राकृतों में ही 'हप्त' नहीं हो गया है, अपितु योरोपीय भाषाओं में भी वह 'हप्त' हुआ है। 'सप्ताह' को हिन्दुस्तान में 'हफ्ता' और योरोप में 'हेप्तार्की' कहते हैं! हमारे राष्ट्र का वैदिक नाम 'सप्तसिंधु' भी प्राचीन ईरानियों की धर्म पुस्तक 'अवेस्ता' में 'हप्तहिन्दू' के रूप में ही उल्लिखित है। इस भांति इतिहास के उषाकाल से ही यह स्पष्ट दिखाई देता है कि हम 'सिन्धु' अर्थात् 'हिन्दू राष्ट्र' ही थे और यह कहा भी गया है—

जानुस्थाने जैनु शब्दः सप्तसिंधुस्तथैव च।
हप्त हिन्दु यावना च पुनर्ज्ञेया गुरुण्डिका॥

(प्रतिसर्ग पर्व—अ० 5, गुरुंडिका, 9/36)

सम्पूर्ण हिन्दू-जगत, जहां पर उसके धर्म का जन्म हुआ, उसी अकेले 'पुण्य-भू' के एकमात्र बंधन से ही केवल नहीं, बल्कि एक संस्कृति, एक भाषा, एक इतिहास और इससे भी अधिक महत्त्व की बात यानी एक 'पैतृ-भू' के भी बन्धन से स्वयमेव निबद्ध है और इन्हीं बन्धनों के कारण वह एक स्वयंसिद्ध राष्ट्र तथा स्वतन्त्र लोक-समाज प्रमाणित होता है। उक्त दोनों अंशों को एकत्र करने पर ही हमारे हिन्दुत्व की सृष्टि होती है।

'हिन्दु' शब्द की व्याख्या

30 दिसम्बर, सन् 1936 को अहमदाबाद में अखिल भारतीय 'हिन्दू महासभा' का अधिवेशन हुआ। उसमें वीर सावरकर सर्व सम्मति से हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने अधिवेशन में पहली बार मंच पर अपने ग्रन्थ 'हिन्दुत्व' में वर्णित 'हिन्दू' की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा व्यक्त करते हुए घोषणा की—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पैतृभू : पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात्—जो कोई भी व्यक्ति सिन्धु से लेकर समुद्र तक फैली इस भारत भूमि को अपनी 'पैतृ-भू' तथा 'पुण्य-भू' मानता है और अधिकृत रूप से यह बात कह सकता है, वह प्रत्येक व्यक्ति 'हिन्दू' है।

जिन धर्मों का उद्गम भारतवर्ष में हुआ है ऐसे धर्मों के अनुयायी व्यक्तियों को भी हिन्दू कहना प्रायः असम्बद्ध ही होगा, क्योंकि वे भी हिन्दुत्व के एक अंग या लक्षणमात्र हैं। लेकिन यदि हमारी यह आन्तरिक इच्छा हो कि हमारी उक्त व्याख्या संदिग्ध एवं मिथ्या प्रमाणित न हो तो हमें चाहिये कि 'हिन्दुत्व' के अन्तर्गत संकेत में आनेवाले दूसरे महत्त्वपूर्ण अंश की भी हम अवहेलना न करें।

हिन्दू होने के लिए किसी व्यक्ति को केवल इतना ही कहना पर्याप्त न होगा कि वह किसी ऐसे धर्म का अनुगामी है, जिसका उद्गम भारतवर्ष में हुआ है, अर्थात् वह भारतवर्ष को अपनी 'पुण्य-भू' मानता है। उसे हिन्दू होने के लिए यह भी आवश्यक है कि वह इस देश को अपनी 'पैतृ-भू' भी माने।

सम्पूर्ण हिन्दू-जगत् जहाँ पर उसके धर्म का जन्म हुआ, उसी अकेले 'पुण्य-भू' के एकमात्र बन्धन से ही केवल नहीं, बल्कि एक संस्कृति, एक भाषा, एक इतिहास और इससे भी अधिक महत्त्व की बात यानी एक 'पैतृ-भू' के भी बन्धन से स्वयमेव निबद्ध है और इन्हीं बन्धनों के कारण वह एक स्वयंसिद्ध राष्ट्र तथा स्वतंत्र लोक-समाज प्रमाणित होता है। उक्त दोनों अंशों को एकत्र करने पर ही हमारे हिन्दुत्व की सृष्टि होती है और उनके संयोग से ही हम संसार के अन्य किसी भी देश के निवासियों से पृथक् प्रमाणित होते हैं। उदाहरण के लिए जापानी तथा चीनी लोग अपने को हिन्दुओं के साथ सम्पूर्ण रूप से न तो एकात्म ही मानते हैं और न वे उक्त कारणों से वैसा मान ही सकते हैं। वे दोनों इस भारतभूमि को उनके धर्म के जन्म-स्थान के नाते केवल अपनी 'पुण्य-भू' मानते हैं। अतः वे हमारे सहधर्मी तो अवश्य हैं, किन्तु न तो वे हमारे स्वदेश बान्धव हैं और न ही हो सकते हैं। परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि हम सारे हिन्दू परस्पर केवल सहधर्मी ही नहीं, अपितु स्वदेश-बान्धव भी हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुत्व हिन्दूवाद से भिन्न है

सावरकर ने हिन्दुत्व और हिन्दूवाद की भिन्नता करते हुए लिखा है—'वस्तुतः हिन्दुत्व केवल शब्द मात्र ही नहीं, अपितु अपने आप में एक सम्पूर्ण इतिहास है। हिन्दुत्व से अभिप्राय हमारी जाति का कोरा धार्मिक तथा आध्यात्मिक इतिहास नहीं, जैसा कि कई बार भ्रमवश इसी से मिलते-जुलते शब्द हिन्दूवाद से लिया जाता है। वस्तुतः हिन्दूवाद तो हिन्दुत्व का एक अंश मात्र है।'

हिन्दुत्व कोई धर्म या मत नहीं

सावरकर ने लिखा है कि जिस प्रकार वेद के कारण उसके अनुयायियों को वैदिक, बुद्ध के नाम पर उसके अनुयायियों को बौद्ध, जिन मतानुयायियों को जैन, गुरुनानक के शिष्यों को सिख, विष्णु के उपासकों को वैष्णव, लिंग पूजकों को लिंगायत नाम से जानते हैं, वैसे ही हिन्दू नाम किसी भी धर्म ग्रन्थ से या धर्म संस्थापक से या धर्म मत से निर्मित नहीं हुआ है। वह तो आसिन्धु सिन्धु प्रसृत देश एवं उसमें निवास करने वाले राष्ट्र का ही प्रमुख रूप से निर्देश करता है और फिर इसी सन्दर्भ में उसकी धर्म-संस्कृति का भी। एतदर्थ हिन्दू शब्द की परिभाषा को केवल किसी धर्म ग्रन्थ से या धर्म मत से बन्धित करनेवाले प्रयास दिशाभ्रम उत्पन्न करने वाले हैं। हिन्दू शब्द की परिभाषा का मूल ऐतिहासिक आधार आसिंधु सिंधु भारत भूमि का ही होना चाहिए। वह देश तथा 'उसमें उत्पन्न धर्म' एवं संस्कृति के बन्धनों से अनुप्राणित राष्ट्र ये ही दो हिन्दुत्व के प्रमुख घटक हैं।

विरोधी अपने दांव में कैसे सफल हुए ?

विरोधी अर्थात् मुसलमान और अंग्रेज आदि जातियाँ भारतीयता को नष्ट-भ्रष्ट कर अपने धर्म, अपनी संस्कृति के प्रचारक-प्रसारक कैसे बने ? इस सम्बन्ध में सावरकर ने लिखा है—'श्रुति, स्मृति पुराणोक्त सनातन धर्म को मानने वाला व्यक्ति हिन्दू है। यदि कोई हिन्दू शब्द की ऐसी परि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषा बनाता है, तो वैदिक धर्म के मतावलम्बी ऐसे 'हिन्दू' शब्द के समर्थन से असहमत दिखाई पड़ते हैं। उनकी दृष्टि में केवल वेदान्त को प्रमाण मानने वाला ही हिन्दू है। इसी प्रकार जैन, सिख और बौद्ध आदि हिन्दू मतावलम्बी वेद की प्रामाणिकता न स्वीकार केवल अपने-अपने धर्म-गुरुओं द्वारा उद्घोषित सिद्धान्त का ही समर्थन करते हैं। सिख आदि नानकपंथी जो खुद को हिन्दू नहीं होने की बात करते हैं, उसका प्रमुख कारण यही है कि सभी हिन्दू मतावलम्बियों ने 'हिन्दुत्त्व' की परिभाषा एक धार्मिक दृष्टि-कोण से न कर, उसकी व्याख्या अपने-अपने ढंग से अलग-अलग की। परिणाम स्वरूप इस आपसी फूट के कारण बाहरी देशों से भारत में आए विधर्मियों को अपने दांव मजबूत करने में असीम सफलता प्राप्त हुई और आज उसी का दुष्परिणाम भोग रही है सम्पूर्ण हिन्दू जाति।

हरिजन हिन्दू धर्म के अभिन्न अंग

रत्नागिरि में हिन्दू महासभा की स्थापना कराकर सावरकर ने हरि-जनोंद्धार तथा शुद्धि का बिगुल बजाया था। उन्होंने अछूतों की एक सभा में भाषण देते हुए कहा था—'हरिजन हिन्दू जाति के अभिन्न अंग हैं। आज जो हरिजनों को हिन्दुत्व से च्युत करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है, उसे कदापि सहन नहीं किया जाएगा।'

इस तरह सावरकर विखण्डित हिन्दू वर्णों एवं पंथों में एकता स्थापित करने वाले हिन्दू धर्म के सशक्त संस्थापक थे।

हिन्दू और हिन्दुस्तान की देवभाषा

सावरकर ने हिन्दी भाषा को विशुद्ध बनाने के लिए अंग्रेजी व उर्दू मिश्रित वर्ण संकरी भाषा का परित्याग कर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को देवनागरी लिपि में अपनाने की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा से प्रभावित होकर राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी अपनायी तथा श्री गणेश वैशम्पायन ने पूना में 'हिन्दी प्रचारक संघ' की स्थापना की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके अनुसार संस्कृतनिष्ठ हिन्दी यानी जिसकी उत्पत्ति और पोषण संस्कृत से हो, वह हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा होगी। संस्कृत भाषा संसार की समस्त भाषाओं में सबसे अधिक सुसंस्कृत और सबसे अधिक सम्पन्न होने के अतिरिक्त हम हिन्दुओं के लिए सबसे अधिक पवित्र भी है। हमारे धर्म-ग्रन्थ, इतिहास, तत्त्वज्ञान, दर्शन एवं संस्कृति आदि संस्कृत भाषा से इतना अधिक परस्पर मिले हुए हैं कि इन्हें हम हिन्दू जाति का वास्तविक मस्तिष्क कह सकते हैं। हम कह सकते हैं कि संस्कृत ही हमारी अधिकांश मातृ-भाषाओं की जननी है। ये संस्कृत के ही वक्ष का दुग्धपान कर पली-ढलीं, पनपीं और विकसित हुई हैं।

हिन्दू युवकों को प्रेरणा

वीर सावरकर बचपन से ही शस्त्र-विद्या एवं वीर भावना के प्रति आकृष्ट रहे। उन्होंने हजारों युवकों को प्रेरणा देकर सेना में भरती करवाया। वह हिन्दू नवजवानों को जल-सेना, थल-सेना एवं वायु-सेना में प्रयत्नतः प्रवेश करने, अद्ययावत शस्त्रास्त्र विद्या हस्तगत करने तथा वर्तमान काल के आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों की जानकारी आत्मसात कर नवीन अस्त्रों की खोज करने पर अधिक बल देते थे। उन्होंने सन् 1961 में अपने एक लेख में लिखा था—'कल्पना करो कि यदि किसी प्रकार मुझे सत्ता हस्तगत हो गई तो मैं केवल दो वर्षों के अन्दर-अन्दर भारत को ख्रुश्चेव के रूस से भी प्रबल शक्तिशाली कर दिखाऊंगा।'

वीर सावरकर राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण करने के पक्ष में थे। वह हिन्दुत्त्व के एक अनुपम व्याख्याकार और प्रकाश-स्तम्भ थे, वह सच्चे अर्थों में एक ही हिन्दू थे, जो आज देश-धर्म तथा समाज की पूर्ण स्थिति का अवलोकन करने के बाद प्रत्येक भारतवासी को हिन्दुत्त्व के पथ से अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहे हैं। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह महर्षि दयानन्द और गांधी का देश है

—डॉक्टर रत्नलाल 'रतनेश'

आज हमारे देश में महर्षि दयानन्द या महात्मा गांधी स्वर्ग से आकर देखें तो वे अवश्य रो पड़ेंगे। आत्मदाह करने का आन्दोलन छेड़े बिना नहीं रह सकते। अब यह देश कामदेव का देश हो गया है। यहां प्रातः काल से लेकर 12 बजे रात तक विलासिता में डूबे रंग-रंजित फिल्मी गानों के सिवा कुछ सुनाई नहीं देता। प्रेम-प्यार, शराब और शबाब ने घर-घर में पागल दीवाने लैला-मजनूं बना दिए। हमारा यह उच्चादर्शमय जीवन तहस-नहस करके रख दिया। एक भी महाराणा प्रताप, शिवाजी, भगतसिंह, आजाद नहीं बन सका। जिधर देखो भांड़, मसखरे और हिजड़े दिखाई देते हैं।

यह महर्षि दयानन्द और गांधी का देश है। फिल्म, दूरदर्शन, टेप, रेडियो और वीडियो सब एक रंग में रंगे हुए हैं। नग्न प्रदर्शन खुल्लमखुल्ला होता है। वासनामय गीतों और चित्रों से मनोरंजन होता है। जीवन का उद्देश्य केवल खाओ-पीयो-मौज उड़ाओ मात्र रह गया है। हर एक ओर रूप और यौवन निखारा जा रहा है। हर गली-मोहल्ले में ब्यूटी पार्लर खुलते जा रहे हैं। हमारे देश की नग्नता ब्यूटीक्वीन बनाने में तल्लीन है। वह गली-कूचे में अपनी प्रतिष्ठा नीलाम करने में अपना अहो भाग्य मानती है। स्वाधीनता के नाम पर स्वाधीनता की ऐसी छीछालेदर तो स्वप्न में भी नहीं विचारी जा सकती थी, जो आज साक्षात् हमारी आंखों के सामने है।

महर्षि दयानन्द ने कहा था—'पहले अपना सुधार करो। अपने चरित्र को बनाओ। मनुष्य बनो। पर हमने उनकी अवहेलना की। अपने को नहीं सुधारा। स्वराज्य आया उसी प्रकार जैसे किसी बन्दर के हाथ में तलवार आ गई। स्वराज्य का सही दिशा में उपयोग नहीं हुआ, परिणामतः भ्रष्टाचार, हत्यायें और बलात्कार दिन दहाड़े हो रहे हैं। क्या इसी का नाम स्वराज्य है?

महात्मा गांधी ने भी स्वराज्य की कल्पना इन शब्दों में की थी। हमारे देश में भ्रष्टाचार नहीं होगा। शराब नहीं होगी। विलासिता में डुबाने वाला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फैशन नहीं होगा। धन को लोग जोड़-जोड़ कर नहीं रखेंगे। विलासी जीवन बिताने में उपयोग नहीं करेंगे। बड़े विश्वास के साथ राम-राज्य की कल्पना की थी। क्या यही है उनका राम-राज्य ? नहीं-नहीं, यह तो काम-राज्य है। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा !

झूठे, विलासी और चमचों को पारितोषिक और उपाधियों से विभूषित किया जाता है। चरित्र-हीन को सम्मानित किया जाता है। भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। सच्चे और चरित्रवान लोग भूखों मरते हैं। उन्हें रद्दी के भाव भी नहीं पूछा जाता। इक्कीसवीं सदी का सपना देखा जा रहा है। क्या इसी बुनियाद पर खड़ी होगी इक्कीसवीं सदी की इमारत ?

हमारे नेता लोग कहते हैं—हमारे देश का विकास बड़ी तेजी के साथ हो रहा है। अमरीका और इंग्लैड की तस्वीर उतारी जा रही है विकास के परदे पर। हमारा खान-पान, हमारा रहन-सहन, हमारी वेश-भूषा, हमारा बोल-चाल सब कुछ विदेशी हो गया है। उसमें झलक देखी जा रही है भारतीय संस्कृति और सभ्यता की ? आजादी के 39 वर्षों में क्या मिली झलक किसी को अपनी सभ्यता और संस्कृति की ?

हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी है। उसका बहुत सुन्दर विकास हुआ है, क्योंकि हिन्दी हमारी माता है। वह बीमार पड़ी है। उसे भारतीय संविधान के अस्पताल में डाल दिया गया है। सोने के लिए उसे अंग्रेजी अंक दिला दिया गया। हिन्दी माता के बेटे बड़े मातृभक्त हैं, इसीलिए माता की सेवा के लिए अंग्रेजी नर्स लगा दी है। उसकी पाचन-क्रिया बिगड़ गई है, रक्ताल्पता हो गई है। इसीलिए उसे खुराक भर-पेट नहीं दी जाती। एक अण्डा खिलाया जाता है, क्योंकि स्वास्थ्य की दृष्टि से 'हिंसा हिंसा न भवति।' मातृ-भक्त बेटे कहते हैं—मम्मी गुडमार्निंग, हाऊ आर यू ? हम बहुत बिजी हैं। आई एम सॉरी।' कितना प्रेम है हिन्दी माँ से ! हिन्दी मां मर रही है, पर हम मरने नहीं देंगे, क्योंकि हिन्दी हमारी माता है। संस्कृत हमारी नानी है। इससे बढ़कर किसी की वाणी नहीं। हम उसे अपना खून देंगे। हम उसे बचायेंगे, हर प्रकार से बचायेंगे !

हमारे देश में धर्म का विकास नहीं, मानवता का विकास नहीं, नैतिकता का विकास नहीं, विकास हो रहा है ऊँची-ऊँची बिल्डिगों का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाँध और पुलों का। विकास हुआ है आम चुनाव और मध्यावधि चुनावों का विकास हुआ है अर्थ जोड़ने का, अनैतिक धंधो का। ऊँची-ऊँची बिल्डिगों में बिना पूंछ के जानवर रहने लगे हैं। जिनमें फल-फूल रहा है—भ्रष्टाचार-हत्यायें और बलात्कार, जिसे नित्यप्रति हम अपनी आँखों से देख रहे हैं।

विज्ञापनों को खुल्लमखुल्ला स्वाधीनता है। जो वस्तुएं स्वास्थ्य का संहार करती हैं, उनका अखबारों में बड़ी प्रशसा के साथ विज्ञापन छपता है। जीवन का आनन्द लीजिए, बीड़ी नं. 30 पीजिये। धूम्रपान का मजा ही कुछ और है, जीवन को उमंगों से भरो रेड एण्ड व्हाइट पियो। हमारी सरकार बड़ी उदार है। हर किसी को हर प्रकार की आजादी दी है। शराब के ठेके बंद करने के बजाय खोल दिए गए। गम गलत करने का इससे बढ़ कर कोई साधन नहीं। फिल्मी गानों में घर-घर को बड़े गर्व से सुनाया जाता है—'छू लेने दो नाजुक होंठों को कुछ और नहीं है, जाम है ये। कुदरत ने बख्शा है तोहफा ..।'

शिक्षा को बदला ही नहीं गया। 39वर्षों में शिक्षा की डिगिरियां अंग्रेजी गुलामी की प्रतीक आज भी चल रही हैं। त्याग और तपस्या का जीवन समाप्त हो गया। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना लोप हो गई। अब तो लोग प्रार्थना भी ऐसी-ऐसी करने लगे हैं —'हे भगवान ! मुझे धन दो, धरती दो, औरत दो और मकान दो, आदि-आदि।

एक हमारे परिचित सज्जन तो ऐसी प्रार्थना करते हैं, 'राम-राम-राम-राम, रामैं राम-रामैं राम, खर्च भेजो ईश्वर नाथ, खर्च की बहुत तकलीफ है।' क्या हो गया है हमारे देश को ? अब यह महर्षि दयानन्द और महात्मा गाँधी का देश बिलकुल नहीं, यह देश है कामदेव का। अब यहां रोज वासना-विलासिता में डूबे रगीन गीत गाये जाते हैं—'चन्दन-सा वदन, चंचल चितवन, धीरे से तेरा ये मुस्काना। मुझे दोष न देना जग वालो, हो जाऊं अगर मैं दीवाना।'

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कैसे होगा दयानन्द का यह सपना साकार ? जब हम स्वयं विदेशी होते जा रहे हैं। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसानों से ...

धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम,
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे
धरा को गोड़ने में, जोतने में आज तक तुम,
कहो, किसके लिए जीवन लुटाए जा रहे ?

लहरते धान, गेहूँ की सुनहली बालियों को,
हहरते नयन से तुमने निहारा बार कितनी ?
समय पर खेत से खलियान में लाए उठाकर,
लहनियों से मिला तब अन्न का भंडार कितना ?
दरांतो घिस गई, छाले निकल आए करों में,
कहो, जौ-मटर-सरसों से भरा भंडार कितना ?
बताओ, उड़द-मूंग-मसूर-अरहर-तिल-चने को—
जरूरत भर बचाकर ले गए बाजार कितना ?

महाजन और मजदूरी चुकाने पर बचा क्या—
जिससे बाल-बच्चों को जिलाए जा रहे ?
धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम,
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे ?

दवा-दारू न आई, थे टके घर में नहीं,
न पाया फीस, घर में डाक्टर आया नहीं,
रहे बस देखते तुम मूकदर्शक बन तमाशा,
उठी अरथी नगन क्योंकि कफन पाए नहीं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पवन, गति चाल चलकर लोग सुख की बात करते,
मगर गम खा सको यह भी नहीं अधिकार तुमको,
यहाँ संसार करता बात हंसने की मजे में,
तुम्हारे चार आँसू भी छलक पाए नहीं,

नहीं विश्राम पाए क्षणिक जीने के लिए तुम,
कुदाली ले तपन में तन जलाए जा रहे,
धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम—
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे ?

तुम्हारे रक्त में रंजित खड़ी अट्टालिकाएं,
जहाँ दिन-रात चलतीं चहकती रंगरेलियाँ,
तुम्हारे रीति-रश्मों के जहाँ उपहास होते,
तव भी मौन हो, वे कौन-सी मजबूरियाँ ?
दिवाली-होलिका से पर्व आ-आकर गए,
रहा बासन खनकता आग जल पाई नहीं,
दुलम अन्याय जो सहते हुए तुम जी रहे,
तुम्हारी काहिली, मन की महज कमजोरियाँ,

उठो, जागो ! तुम्हारी जिन्दगी के प्रश्न बाकी,
दिशा बदलो, गलत में पग बढ़ाए जा रहे !
धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम,
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे ?

अगर तुम चाहते जीवन-धरा पर न्याय निर्मल,
सत्ता दो उन्हें जिनके न मन में लोभ रंचक,
उगाने छोड़ गेहूं, धान, जौ की बालियाँ,
खेतों में तुम्हें, अणु-शक्तियों के बीज बोने,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मटर की फली के बदले उगाकर गोलियां,
तुम्हें तिल की जगह खलियान से बारूद ढोने,
दरांती तेज कर लो क्रांति की चिनगारियों में,
गड़ासों और भालों के लगे जड़ जंग धोलो,
समय यह जागरण के गीत गाए जा रहा,
बढ़ो, स्वाधीनता के पूत लो अधिकार अपने,

हृदय झकझोरती है दूर की आवाज आकर,
विगुल नवक्रांति के तुमको सुनाए जा रहे,
धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम,
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे ?

पड़ोसी रात-दिन स्वर वेदना के छेड़ते हैं,
अंतड़ियां रीढ़ का दामन पकड़ती रो रहीं,
तुम्हारी अस्मतों के मोल खुलकर हो रहे,
तुम्हारे न्याय की दीवार गिरती जा रही,
भ्रष्टाचार-स्मगलर बना है आज नेता,
पीता खून मानव का दिशा-दर्शक प्रणेता,
खुले में न्याय की गरदन दबोची जा रही,
प्रशासन की धुरी को आज रिश्वत् खा रही,
निरापद इन लुटेरों से न जब तक देश होगा,
न तब तक अमन का जीवन कोई जन जी सकेगा,

बढ़ो सत्ता उलट दो एक ही अब राह बाकी,
यतीमों के निमंत्रण पर बुलाए जा रहे,
धरा के पूत बोलो, चिलचिलाती धूप में तुम,
पसीना किसलिए इतना बहाए जा रहे ?

—प्रमोद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्दियों में व्यक्तित्त्व का निखार

—श्रीमती सुषमा शर्मा

सौंदर्य कोई माप नहीं, नियम है। एक के देखने में कुछ सुन्दर है, तो दूसरे की आँखों में कुछ। इंग्लैंड में लिली सुन्दर समझी जाती है तो भारत में कमल को सुन्दरता का प्रतीक मानते हैं। प्रेमियों के लिए प्रेमिकाएं सुन्दर हैं, उनसे बढ़कर और कोई नहीं। कहा भी है—प्रेम अन्धा होता है। हर प्रेमी प्रेमिका को सौंदर्य की देवी समझते हैं। आज के समाज में नारी का सुन्दर होना सबसे बड़ा वरदान है और असुन्दर होना अभिशाप। प्रत्येक नारी को सुन्दर बनने में लापरवाही कभी नहीं बरतनी चाहिए। सुन्दर स्त्री पर माता-पिता, पति, भाई, बहन, सास, श्वशुर और बच्चों तक को गर्व होता है। व्यक्तित्त्व के निखार के लिए नारी में सौंदर्य का होना आवश्यक है। सौंदर्य से मेरा अभिप्राय गोरी या काली चमड़ी से नहीं, बल्कि चेहरे की सुन्दरता, अच्छे नाक-नक्श, कपड़ों-गहनों का उचित पहनावा, हाव-भाव, बातचीत के सलीके, शारीरिक गठन एवं चलने का ढंग आदि से है।

त्वचा

आकर्षक व्यक्तित्त्व के लिए साफ व चिकनी त्वचा लंबे व घने बाल, हल्का मेकअप नारी-सौंदर्य में चार चांद लगाते हैं। सर्दियों में त्वचा पर ठंड का असर होने से हाथ-पैर, होंठ आदि के कटने-फटने की शिकायत होती है। सर्दी के दिनों में पौष्टिक खुराक, शारीरिक सक्रियता, बाहर से तेल व चिकनाई की आवश्यकता होती है। रोज सवेरे घूमने और पर्याप्त मात्रा में हरी सब्जियां, संतरे, सेब, दूध-दही और पनीर आदि के सेवन से त्वचा को चिकनाई मिल जाती है और रक्त शुद्ध रहता है। जाड़ों में एक सस्ता व प्रभावी सौंदर्य प्रसाधन 'गाजर' है। गाजर शरीर को विटामिन प्रदान कर त्वचा को स्निग्ध रखता है। यदि चेहरे की त्वचा को आकर्षक बनाना है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो गाजर खाने के साथ ही उसकी लुगदी बनाकर उसमें दूध की मलाई व अंडे की जर्दी मिलाकर गले व चेहरे की त्वचा पर मलें और आकर्षण बढ़ाएं। चेहरे के आकर्षण के लिए दूध में नींबू का रस मिलाकर धीरे-धीरे मलिए। कुछ ही दिनों में चेहरे का पीलापन समाप्त हो जायेगा। बेसन में दूध मिलाकर साफ करने से भी लाभ होता है, सरसों के दानों को पीस कर बेसन में दूध के साथ मिलाकर उबटन बनाकर चेहरे व शरीर पर मलने से त्वचा साफ व नर्म होगी। चेहरे की कोमलता के लिए मक्खन के प्रयोग से भी लाभ होगा। चेहरे की झाइयां व मुहासे दूर करने के लिए आंवला, चिरौंजी दाना दूध में पीसकर लगाएं। तेल में थोड़ी-सी ग्लिसरीन व नींबू का रस मिला लोशन त्वचा के आकर्षण के लिए उपयोगी है। इस लोशन से शरीर की त्वचा की खुश्की समाप्त होती है।

देखा गया है कि बहुत-सी युवतियाँ मुहासों से परेशान रहती हैं। पेट की गड़बड़ी और कब्ज के कारण युवतियों को मुहासे होते हैं। इसके लिए सोने से पूर्व नींबू के रस में दूध की मलाई मिलाकर लगाएं और सुबह चेहरे को ठंडे पानी से अच्छी तरह धोएं। जायफल में कच्चा दूध मिलाकर लेप करने से, संतरे के छिलके सुखाकर महीन पीस लें और एक चुटकी चूर्ण को नींबू के रस के साथ मिलाकर लगाने से, छुहारे की गुठली को गुड़ के सिरके में पीसकर लेप करने से, चेहरे पर भाप लेने से, गुलाबजल में नींबू का रस मिलाकर लगाने से, चेहरे की त्वचा साफ व मुहासे रहित हो जाती है। सर्दियों में दही में बेसन मिलाकर लगाने से, गुलाबजल में बादाम पीस कर ग्लिसरीन व कफर मिलाकर लगाने से, अंडे की सफेदी, शहद व ज्वार का आटा फेंटकर लगाने से, मसूर की दाल व सरसों को गुलाब की पंखुड़ियों के साथ पीसकर लगाने से, नींबू का रस शहद में मिलाकर लगाने से, जैतून या बादाम का तेल लगाने से, रीठे से सिर धोने से चेहरे व शरीर की त्वचा मुलायम होती है और चेहरे के मुहासे तथा दाने ठीक हो जाते हैं। चेहरे की झाइयां व निशान मिटाकर उपर्युक्त लोशन त्वचा को कान्तिमय और आभामय बनाते हैं। मुहासों को दूर करने के लिए गंधकयुक्त साबुन का प्रयोग करना चाहिए। मुहासों को फोड़ने की गन्दी आदतें युवतियां छोड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दें। मुहासे फोड़ने से चेहरे पर स्थायी काले धब्बे हो जाते हैं। चेहरे पर किसी-किसी को बाल उग आने की शिकायत होती है। मानसिक तनाव, लम्बी बीमारी, ईर्ष्यालु स्वभाव आदि के कारण ये बाल पैदा होते हैं। उत्तम लोशन तथा ब्लीचिंग पाउडर आदि के प्रयोग से इन्हें दूर किया जा सकता है। कभी भी ब्लेड या कैंची इस्तेमाल न करें।

आंख व भौहें

आंखें चेहरे का मुख्य आकर्षण है—आंखों के आसपास की त्वचा अत्यंत कोमल व लोचदार होती है। आंखों को स्वस्थ व चमकीला बनाए रखने के लिए देखभाल बहुत आवश्यक है। आंखों की सुन्दरता और सजावट हल्के मेकअप द्वारा बढ़ती है। आंखें बड़ी ही मूल्यवान हैं, अतः इनकी हिफाजत रखना अति आवश्यक है। आँखों के आसपास की त्वचा कोमल व लोचदार होती है, अतः इसे रगड़ना उचित नहीं। त्वचा सिकुड़ जाने में झुरियां पड़ने की आशंका रहती है। आप सोने से पहले नियमपूर्वक आंखों को ठंडे पानी से धोएं। यदि आंखें थकी हुई हैं तो आई-लोशन से धोइए। यदि आंखें छोटी हैं तो इन्हें मेकअप से सुन्दर बनाया जा सकता है। पलकों को संवारने के लिए आई-शेडों को लगाया जाता है। पलकों के रोमों को संवारने के लिए ब्रुश या एप्लीकेटर इस्तेमाल करें। पलकों की स्वस्थता के लिए जैतून के तेल की मालिश की जा सकती है। एप्लीकेटर पर तेल लगाकर ऊपरी पलकों के नीचे से शुरू कर ऊपर की ओर ले जाने से पलकें खूबसूरती से ऊपर उठ सकेंगी। भवें और आंखें एक ही अनुपात में होने पर अच्छी लगती हैं। आंखों से भवें छोटी हों तो आइब्रो पेंसिल की सहायता से भवों को लम्बा करना उचित रहता है। देखा जाता है कि ऊबड़-खाबड़ और बेतुकी भवों से चेहरे का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। कोई-कोई तो आवश्यक रूप से भवों को बेतुके रूपों में संवार कर चेहरे की खूबसूरती को बिगाड़ लेते हैं। अच्छा-खासा चेहरा अजीब लगता है। बेहतर है भवों में कोई दोष है तो किसी अच्छे-ब्यूटीशियन से ठीक कराएं। भवों को संवारने के लिए सप्ताह में एक दिन निश्चित करें। भवों की संभाल आंखों की बनावट के अनुसार रखना आवश्यक है। भवों पर भूल से भी कभी रेजर नहीं लगाना चाहिए और न कभी कैंची से बाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काटं। भवों के सही आकार से आंखों की सुन्दरता बढ़ती है। पढ़ाई के बोझ के कारण और देर रात तक पढ़ने पर कभी-कभी आंखों में खुजली होने लगती है। आंखों को गुलावजल, आई-लोशन से साफ करने से यह खुजली समाप्त होगी। झुरियां पड़ जाने पर एण्टीरिंकल क्रीम या हारमोन-क्रीम का प्रयोग करना श्रेयस्कर है। आँखों के नीचे काले धब्बे पड़ने पर सोने से पहले चाय के गर्म कहवे से आंखों के नीचे व आसपास की त्वचा को रूई से सेंकें। सुबह के भ्रमण व ताजा पानी पीने और आहार में दूध, दही व हरी सब्जियों, ताजा फलों के प्रयोग से आंखें स्वस्थ व सुन्दर बनती हैं। यदि थोड़ा वहुत भ्रमण करें भी तो शाम के समय। आंखों व भवों के साज-सवार से आपका चेहरा आकर्षक लगेगा। सौंदर्य के लिए रंग-रूप व त्वचा की कोमलता जितनी आवश्यक है, उतना ही आवश्यक नैन-नक्श भी है। व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव का अंदाज आंखों व भवों से स्पष्ट हो जाता है। सौंदर्य व आकर्षण बढ़ाने तथा उत्तम, आकर्षक व्यक्तित्व के लिए भवों व आंखों का विशेष महत्त्व है। ★

लघु कथा

कड़वा सच

जगदीश को उदास देख कर मोहन ने पूछा—'क्या बात है ? आज बहुत चिंतित नजर आ रहे हो ?'

जगदीश ने ठंडी साँस भरी और बोला—'वही समस्या। उन चारों में इतना विश्वास व प्रेम है कि कहा नहीं जा सकता और यही मेरी समस्या के समाधान में रुकावट है। जब तक वे अलग नहीं हो जाते या उनका एक दूसरे से प्रेम व विश्वास नहीं उठ जाता तब तक मैं उलझा ही रहूँगा।'

मनोहर ने हंसते हुए कहा—'बस ! अरे, यह तो मामूली-सी बात है। किसी साहित्यकार से उनकी दोस्ती करा दो।'

'इससे क्या होगा ?'

'अरे यार ! निश्चित ही महीना-दो महीना में वे सब एक-दूसरे से अलग ही नहीं हो जायेंगे, बल्कि एक-दूसरे के जिकर से भी कतराने लगेंगे।'

—नरेशचन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महिला-मंच

तनाव और चिन्ताएं स्वास्थ्य के लिए घातक

—सुश्री उषा चोपड़ा

तनाव, चिन्ता और घबराहट हमेशा से ही मानव जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। जब मनुष्य का जीवन बहुत भाग-दौड़ भरा नहीं था तो तनाव या चिन्ता उसके जीवन में इतना उभर कर सामने नहीं आए थे जितना आज आए हैं।

कुछ दशक पूर्व तक भी जीवन बड़ा शान्तिपूर्ण और सामान्य था। आदमी काम पर जाता था और काम से लौट कर सीधा घर आता था। लेकिन आज परिवहन के आधुनिकतम साधनों के साथ ही उसके जीवन में भाग-दौड़ भी अधिक हो गई है। आज हर व्यक्ति अपने काम में परिपक्वता और पूर्णता लाना चाहता है, जो काफी हद तक संभव नहीं है। यही एक तरह से तनाव का कारण बनता जा रहा है, जबकि इन बातों से स्वास्थ्य और सौन्दर्य का गहरा ताल्लुक है।

कुछ दशक पूर्व तक भी औरत का दरजा मां-बेटी या बहन-भाभी तक सीमित था, जबकि आज खासकर महानगरों में स्थिति यह है कि आर्थिक दबावों के कारण उसे घर की चारदीवारी से निकलकर काम-काज के क्षेत्र में जाना पड़ता है। यही दोहरी जिम्मेदारी उसके लिए न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक बोझ का भी कारण बन गई है।

बच्चों की भी कुछ यही स्थिति है। आज उनके पास खेलने या आराम करने का समय ही नहीं। उनका सारा वक्त पढ़ाई और होमवर्क में ही चला जाता है।

अगर समय रहते इन तनावों और चिन्ताओं से बचने के उपाय न किए गए तो ये हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिर और पीठ का दर्द—अकसर आजकल लोग सिर और पीठ दर्द की शिकायत करते हैं। अगर डाक्टर इसका कोई शारीरिक कारण नहीं ढूंढ़ पा रहा तो निश्चित ही इसका कारण तनाव है। दवाएं सिर्फ अस्थायी आराम दे सकती हैं। अगर इनसे वास्तव में छुटकारा पाना है तो हमें शरीर और दिमाग दोनों को आराम देने की कला सीखनी होगी।

गुस्सा, उदासी, खुशी ये सभी भाव हमारी त्वचा पर गहरा असर डालते हैं। जिस समय हमें गुस्सा आता है, उस समय शरीर में एक ऐसे रस का संचार होने लगता है, जो चेहरे की तरफ रक्त के संचार को रोकता है। इसी वजह से हमारी त्वचा का रंग गुस्से में अकसर पीला या विवर्ण हो जाता है। जिन लोगों को बहुत गुस्सा आता है उनके चेहरे का रंग पीलापन या फीकापन लिए होता है। अधिक गुस्सा आने से चेहरे पर झुर्रियां भी जल्दी पड़ जाती हैं।

अगर आपको ज्यादा या बेवजह गुस्सा आता हो तो बेहतर है कि आप कुछ ऐसे व्यायाम शुरू कर दें जिसमे ध्यान और समय इतना अधिक बंट जाए कि गुस्से या तनाव की ओर ध्यान ही न जाए। तैरना, पैदल चलना, खेलना, कुछ ऐसे ही व्यायाम हैं, जो आपके दिमाग को चिन्ताओं से मुक्त रखने में सहायक हो सकते हैं।

योग—शरीर की हर मांसपेशी को ठीक और चुस्त रखने के लिए नियमित योगाभ्यास भी किया जा सकता है। इससे शारीरिक और मानसिक आराम तो मिलता ही है, आपके चेहरे से एक ऐसी दीप्ति निकलेगी, जिससे आपको अधिक मेकअप वगैरह करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

मालिश—मालिश से गर्दन, पीठ और कन्धों को आराम मिलेगा। तनाव और चिन्ता का सबसे अधिक असर शरीर के इन्हीं हिस्सों को थकाने पर पड़ता है।

इसके अलावा आप अपनी गतिविधियां बदल कर भी शरीर को आराम दे सकते हैं। मसलन अगर आप अधिक घूमते हैं तो कुछ दिन घूमिए मत। घर पर कोई किताब लेकर पढ़ने बैठिए या टी. वी. वगैरह देखिए। अगर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप ज्यादा वक्त घर में बिताते हों तो जरा बाहर निकलिए। दोस्तों के साथ गपशप कीजिए। अगर आलसी हैं तो उठिए, कुछ काम कीजिए। अगर बहुत ज्यादा काम करते हों तो आराम करना सीखिए।

अगर इन सब बातों से भी कोई आराम, कोई बदलाव नहीं आता है तो गंभीरता से बैठ कर सोचिए कि आपकी थकावट या परेशानी के क्या कारण हैं। फिर उन्हें दूर करने का प्रयास कीजिए। चिन्ता या तनाव को आपने समय रहते जड़ से दूर न किया तो यह न केवल आपकी शारीरिक सुन्दरता बिगाड़ेंगे, बल्कि आंतरिक व्यवस्था भी गड़बड़ा जाएगी। पाचनक्रिया बिगड़ने लगेगी और अन्ततः इससे दिल की अन्य बीमारियां होने का खतरा भी रहेगा।

तनाव से आप जल्दी बूढ़े हो सकते हैं। फिर खुद को युवा बनाए रखने के कोई भी साधन कामयाब नहीं होंगे। ★

जले घाव को भरना और सरल हो गया

यदि शरीर का कोई भाग बुरी तरह जल जाए तो शरीर के ही किसी अन्य स्थान की स्वस्थ त्वचा की ऊपर वाली परत को निकाल कर घाव पर लगा दिया जाता है। शरीर के जिस भाग से त्वचा ली जाती है, वह प्रायः दो सप्ताह में भर जाता है, लेकिन नसों के उधड़ने के कारण रोगी को दर्द होता है।

बर्मिंघम के दुर्घटना- अस्पताल में जले हुए घावों के इलाज का एक नया तरीका विकसित किया गया है। अब रोगी के शरीर से केवल एक डाक-टिकट जितनी त्वचा ली जाती है। इस त्वचा को और भी छोटे टुकड़ों में काट दिया जाता है, उससे जीवित कोशिकाएं निकाल ली जाती हैं और उन्हीं से त्वचा कोशिकाओं की बड़ी परत तैयार कर ली जाती है, जिसे पट्टियों पर लगा कर घावों पर बांधा जाता है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुदरत की देन सिंघाड़ा

—कमल सौगानी

सिंघाड़े को संस्कृत में शृगाटक कहा जाता है। कच्चा सिंघाड़ा पके सिंघाड़े की अपेक्षा अधिक मीठा और स्वादिष्ट लगता है।

आयुर्वेद के अनुसार सिंघाड़ा शीतल, स्वादिष्ट और बलवर्द्धक है। यह कफनाशक तथा रक्त-पित्त और दाह को नष्ट करने वाला फल है। इसके सेवन से रज-विकार, प्रमेह, सूजन आदि में लाभ होता है।

वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर सिंघाड़े में ये तत्त्व विद्यमान हैं—70 प्रतिशत पानी, 23.9 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 0.15 प्रतिशत फास फोरस, 0.20 प्रतिशत कैलशियम, 0.08 ग्राम प्रति सौ ग्राम लौह, 0.03 प्रतिशत वसा, 0.07 प्रतिशत प्रोटीन, 1.1 प्रतिशत खनिज पदार्थ और 20 इ. यू. विटामिन 'ए' प्रति सौ ग्राम।

अतिसार, प्रवाहिका और स्त्रियों के प्रदर रोग में सिंघाड़े का पतला पेय बनाकर देने से यथेष्ट लाभ होता है। सिंघाड़े के सेवन से रक्त बहना कम हो जाता है और रोगी का रंग फीका नहीं पड़ता।

स्त्रियों के रक्त-प्रदर रोग में सिंघाड़े के आटे की रोटियाँ बनाकर खिलाना चाहिए। शरीर की गर्मी मिटाने के लिए सिंघाड़े की बेल पीस कर लेप करना चाहिए।

गर्भवती स्त्री के रक्त-स्राव को रोकने के लिए सिंघाड़े का उपयोग होता है। दूध के साथ सिंघाड़े के आटे का हलुवा बनाकर दिन में तीन बार खिलाना चाहिए। इससे रक्त-स्राव बन्द हो जाता है। स्मरण शक्ति बढ़ाने में भी सिंघाड़ा बड़ा सहायक है। इसके सेवन की दो मुख्य विधियां हैं—सिंघाड़े को महीन पीसकर आटा बना लें और उस आटे की फांकी को गर्म दूध के साथ सुबह और शाम लें।

दूसरा तरीका यह है कि रात के भीगे पाँच बादाम जल के साथ महीन पीसकर दूध और सिंघाड़े के आटे में मिला लें। घी भी पर्याप्त मात्रा में इस्तेमाल होना जरूरी है। यह हलुवा बहुत ही उपयोगी है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग मुद्राएं और उनसे लाभ

—स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती

योग के प्रचलित अंग आसन से प्रायः सभी परिचित हैं। आसनों की लोकप्रियता भारत की सीमाएं लाँघकर विश्व के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। किन्तु योग के अन्य अनेक अंग भी शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक विकास और आत्मिक उत्कर्ष के लिए बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। योग मुद्राएं भी इसमें से प्रमुख हैं। यहाँ ऐसी ही कुछ मुद्राओं का उल्लेख किया जा रहा है। —सम्पादक

1. महा मुद्रा

अपने पैरों को आगे की ओर लम्बे पसार (फैला) कर बैठिए। बाएं पैर को झुकाकर मोड़िये और मूलाधार (गुदा के पास) स्थित कीजिये। तत्पश्चात् नीचे झुक जाइये और अपने दाहिने पैर के पंजे को अपने हाथ के पंजे से पकड़िए और स्वाँस अन्दर लीजिये। मूल बन्ध तथा जालन्धर बन्ध लगाइये और उस अवस्था में जितना ठहर सकें उतना ठहरिये। धीरे-धीरे स्वाँस बाहर निकालिए। इस प्रकार उसे (महामुद्रा को) पाँच या छः बार किया जा सकता है।

लाभ—इस मुद्रा के अभ्यास से क्षय, कास, (कफ जन्य रोग) गुदावर्त, प्लीहा, पुराना बुखार, पुरानी गैस, अपच और कुष्ठ (कोढ़) आदि रोग ठीक हो जाते हैं। इसका निरन्तर अभ्यास स्वाँस (प्राण वायु) को सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट कराकर इसे ऊपर ले जाने और कुण्डलिनी जागरण करने में सहायक होता है। ध्यान रहे, महामुद्रा में स्वाँस और उच्छ्वास बायीं तथा दायीं ओर समान संख्या में हों, किसी भी हालत में असमान संख्या में न हों।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

2. महाबन्ध मुद्रा

बाँयें पैर की एड़ी को दृढ़ता से गुदा के नीचे स्थित कीजिये और दाहिने पैर को बायीं जंघा पर स्थित कीजिये श्वास अन्दर लीजिए और जालन्धर बन्ध बनाइए। श्वास को आप जितनी देर रोक सकें उतनी देर रोकिए। तत्पश्चात् धीरे-धीरे श्वास छोड़िए। योग सम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है कि महाबन्ध मुद्रा की अवस्था में मूलबन्ध पर एड़ी से बार-बार (स्पर्श एवं घर्षण करते हुए) हिलाते रहना चाहिए।

महामुद्रा और महाबन्ध मुद्रा के दौरान, जब आप श्वास को रोकें, तब देखने और समझने का प्रयत्न करें कि आपका मन (एवं प्राण वायु) सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट हो रहा है। इस अभ्यास काल में भी श्वास उच्छ्वास बायीं और दायीं तरफ समान रूप में होना चाहिए।

लाभ—यह (महाबन्ध मुद्रा) कुण्डलिनी को जागृत करती है और श्वास को मूलाधार चक्र में प्रविष्ट होने में सुविधा प्रदान करती है। इस क्रिया से चक्रबंध मार्ग खुल-जाता है।

अन्य सभी लाभ महा मुद्रा के लाभों के समान ही होते हैं।

3. महाबोध मुद्रा

प्रथम विधि—महाबन्ध मुद्रा को दोहराइए। श्वाँस लीजिए और रोकिए। तीनों बन्धों (जालन्धर, उडियान और मूल बन्धों) को लगाइये। दोनों हाथों के पंजों को अपनी-अपनी तरफ भूमि पर स्थित कीजिए। तत्पश्चात् सम्पूर्ण शरीर को बायें पैर के साथ संतुलित कीजिए। मूलाधार पर बार-बार एड़ी से स्पर्श कीजिए।

द्वितीय विधि—पद्मासन में बैठिए और श्वांस अन्दर लीजिए और उसे रोकिए। तत्पश्चात् आप अपने आप भूमितल से ऊपर उठिए। भूमितल के विरुद्ध बार-बार (हल्की-हल्की) चोट मारिए।

विशेष—इस मुद्रा की प्रथम विधि में जब शरीर हाथों की सहायता से ऊपर उठाया जाता है तो मूलबन्ध दृढ़ और सीधा नहीं होता है, किन्तु जब आप इसे द्वितीय विधि के अनुसार पद्मासन से करें तब उक्त कमी नहीं रहती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। मुद्रा का अभ्यास करते समय अपने पैरों को बदलते रहिए और दोनों तरफ श्वास और उच्छ्वास को समान बनाए रखिए।

लाभ—यह मुद्रा आपको विभिन्न सिद्धियाँ प्राप्त करने योग्य बनाती है। इसका अभ्यास करने से चर्म में झुरियाँ नहीं पड़ती हैं। पूर्व पक्वावस्था में बाल सफेद नहीं होते। शरीर के अवयवों को हिलाने वाला वात-प्रकोप नहीं होता। शरीर झुकाने वाला कब्ज रोग नहीं होता। पाचन शक्ति प्रबल होती है। प्राणवायु नीचे की ओर गतिशील होती है और सुगमतल नाड़ी में प्रविष्ट हो जाती है। प्राणवायु गतिशील होकर इड़ा और पिङ्गला नाड़ियों में प्रविष्ट हो जाती है। इससे समाधिस्थ होना सम्भव हो जाता है। शरीर चट्टान की तरह गतिविहीन हो जाता है और व्यक्ति समाधिस्थ हो जाता है।

4. विपरीतकर्णी मुद्रा

(1) **शीर्षासन**—हाथों के सहारे सिर के बल उलटा होने की प्रक्रिया लगाइए।

(2) **सर्वाङ्ग आसन**—(स्कन्धों के बल पर हाथों के द्वारा कमर पर सहारा लगाकर शरीर को ऊपर की ओर उलटा करने की प्रक्रिया) लगाइये और अपने शरीर को कुछ सीधा और ढला हुआ कीजिये।

विशेष—द्वितीय विधि प्रथम विधि की बजाय ज्यादा श्रेष्ठ है। यह शिर पर अनावश्यक दबाव पड़ने से बचाती है।

लाभ—यह मुद्रा पाचन शक्ति को तेज करती है। भोजन पचाने की क्षमता को बढ़ाती है। अतः आपको अपने भोजन को नियमित रखना चाहिए अन्यथा बढ़ती हुई पाचन-शक्ति पाचन-सहायक रस को सुखा देगी। प्रतिदिन अभ्यास बढ़ाए। यह मुद्रा वृद्धावस्था से पूर्व बालों को सफेद होने से रोकेगी।

5. शक्तिचालिनी मुद्रा

प्रथम विधि—वज्रासन में बैठिए। दोनों नकुओं से श्वास लीजिए और अपान वायु (नीचे की वायु) से सम्पर्क बनाते हुए श्वास को मूलाधार स्थल की ओर नीचे खींच लीजिए। आपको इस प्रकार श्वास प्रयत्न करना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए कि वह श्वास सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होता रहे। ऐसा करने के लिए अश्विनी मुद्रा (गुदा को विकसित एवं संकुचित करने की प्रक्रिया को कीजिए, जिससे गुदा को ऊपर की ओर खींचिए और तत्पश्चात् स्वतः को शिथिल छोड़िये। इस प्रक्रिया द्वारा प्राण वायु सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होने लगती है। इससे कुण्डलिनी जागृत हो जाती है।

द्वितीय विधि—सुख आसन में बैठिए और टखनों को पकड़िये, उन्हें अपने आमाशय की ओर खीचिए तथा एड़ियों से धीमी चोट मारिए। कन्द मूल (जोकि नाभि के नीचे जननाङ्ग की जड़ में स्थित होता है) को दबाइए। अब शक्ति चालिनी मुद्रा से कुण्डलिनी जागृत कीजिए। वज्रासन में बैठिए। मात्रिका प्राणायाम का अभ्यास कीजिए, कुण्डलिनी सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होकर मेरु-दण्ड की नलिका में होकर ऊपर की ओर ऊठती है। जब यह पूरी तरह उठ जाती है तब आप अनुभव करेंगे कि मानो आपके मेरुदण्ड की नसों में चींटियाँ रेंग रही हैं। आप सुखद सनसनी, कम्पन स्थिरता आदि अनुभव करेंगे।

लाभ—प्राणवायु ऊपर की ओर उठती है और कुण्डलिनी जागृत होती है। जिसके फलस्वरूप आंखों का जाला और धुंध साफ हो जाता है और साफ दिखाई देने लगता है। आलस्य और बुद्धिमन्दता समाप्त हो जाती है।

6. योनि मुद्रा

सिद्धासन में बैठिए और अपने दोनों अंगूठों से कानों को, अपनी तर्जनी अंगुलियों से आँखों को, मध्यमा अंगुलियों से नकुओं को और अपनी अनामिका और कनिष्ठा से अपने ओंठों को दवाइये। इसके पहले काकी मुद्रा कीजिए और प्राण वायु अन्दर लीजिए। अपान-प्राण सम्पर्क कीजिए और 'ओम्' का मानसिक ध्यान कीजिए तथा कल्पना कीजिए कि आपकी जागृत कुण्डलिनी सभी चक्रों में से होकर गुजर रही है तथा सहस्र-दल-कमल में प्रविष्ट हो रही हो।

लाभ—प्राण और अपान का सम्पर्क कुण्डलिनी को जागृत करता है। आध्यात्मिक ज्योति और चक्र उपस्थित होने लगते हैं। इसमें सफलता प्राप्त करना प्रयत्नों की गहनता पर निर्भर है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

7. काकी मुद्रा—

अपनी पीठ और गर्दन को सीधे रखिये । सिद्धा आसन में वैठिए अपने ओंठों की सहायता से अपनी जीभ को कौवे की चोंच जैसा आकार प्रदान कीजिए और इस जीभ में होकर स्वांस लीजिए और वायु को अन्दर रोकिए । अपने कानों को अपने अंगूष्ठों से, आँखों को तर्जनी से, नकुओं को मध्यमा से, मुख को अनामिका और कनिष्ठिका से बन्द कीजिए । श्वांस को अपनी क्षमता के अनुरूप जितनी अधिक देर रोक सकें, उतनी देर रोकिए । धीरे-धीरे नकुए से उच्छ्वांस दाहिने निकालिए और उसी प्रकार वायें नकुए से धीरे-धीरे श्वास छोड़िए । सम्पूर्ण प्रक्रिया होने पर उसे पुनः-पुनः दोहराइए ।

लाभ—यह मुद्रा पित्त का शमन करती है और पित्तजन्य विकारों को दूर करती है । इससे आध्यात्मिक ज्योति के दर्शन होते हैं । आँखों की दर्शन शक्ति सुधरती है ।

8. अश्विनी मुद्रा

सुखासन मे वैठिए । गुदा को संकुचित और विकसित कीजिए । गाय, भैंस और विशेषतः घोड़ी—जब ये अपनी प्रकृति की पुकार का उत्तर देते हैं तब वे अपने मलमूत्र द्वारों को संकुचित और विकसित करते हैं, ठीक उन्हीं की तरह आप भी (अश्विनी मुद्रा का अभ्यास करते समय) अपने मल-मूत्र द्वारों को संकुचित और विकसित कीजिए । कई मिनटों तक इस प्रक्रिया को करते रहिए ।

लाभ—यह शीघ्र ही प्राण वायु को उदित करती है और कुण्डलिनी को जागृत करती है । यह आवश्यक यौगिक ज्ञान प्राप्त करने और आध्यात्मिक ज्योति दर्शन करने में सहायक होती है ।

9. त्रिबन्ध मुद्रा—

पद्मासन में वैठिए । थोड़ी-सी श्वांस अन्दर लीजिए और इसे सुषुम्ना से संयुक्त कीजिए । अपान वायु (नीचे की वायु) को मूलाधार से ऊपर उठाइए । तीनों बंध बनाइये और आंतरिक वायु को सुषुम्ना मेंप्र विष्ट होने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए धकेलने की कोशिश कीजिए। इसी अवस्था में रहते हुए दोनों तरफ से अपने पंजों को भूमि पर स्थित कीजिए। तत्पश्चात् अपनी अर्द्ध बेलनाकार पृष्ठ को ऊपर उठाइये और भूमि तल पर जंघाओं को धीमे-धीमे रखिए। इसे कई बार दोहराइये।

बन्धन निम्न प्रकार से बनाए जाते हैं—

जालन्धर बन्ध—अपनी गरदन पर दबाव डालिए। ठोड़ी को हंसली हड्डी के बीच स्थित कीजिये ताकि आप गले की अनावृत्तता (खुलाहट) को बन्द कर सकें।

उडियान बन्ध—अपने पेट से सम्पर्क कीजिए और अपनी नाभि को रीढ़ के दण्ड (मेरुदण्ड) की ओर (अन्दर की ओर खींचें) लीजिये।

मूल बन्ध—अपने मलमूत्र द्वारों को पेड़ू के साथ ऊपर की ओर खीचिए।

—ये तीनों बन्ध आसन, प्राणायाम और मुद्रा अभ्यास करते समय उपयोगी होते हैं।

लाभ—प्राण वायु सुषुम्ना नाड़ी में प्रविष्ट होने लगती है। कुण्डलिनी सरलता से जागृत हो जाती है और ऊपर उठ जाती है (षट्) चक्र दिखाई देने लगते हैं।

10. योग मुद्रा

बद्ध पद्मासन में बैठिए। श्वास बाहर निकालिए और बाहर ही रोकिए। अर्थात् श्वास लेना रोकिए। तीनों बन्ध बनाइये। सामने की ओर झुकिए। अपने सिर से भूमितल स्पर्श कीजिए और वक्षस्थल को झुकाइये। इस प्रक्रिया को जितनी देर तक सम्भव हो सके उतनी देर तक बनाये रखिए। श्वास छोड़ते समय अपने सिर को भूमितल से ऊपर की ओर उठाइए, इस प्रक्रिया को कई बार दोहराइए।

लाभ—शरीर स्वस्थ होता है। सभी नसें (शिराएं, धमनियाँ और कोशिकाएं) स्वच्छ होती हैं। पाचन शक्ति पुष्ट होती है। पाचन शक्ति बढ़ती है। ध्यान योग में प्रवीणता (दक्षता) बढ़ती है और अन्तःकरण विशुद्ध हो जाता है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योरोप-अमरीका में वैदिक संस्कृति

'रोम' शब्द लैटिन का नहीं, अपितु भाष्कराचार्य द्वारा शोधित संस्कृत का है। वेद में 'रूमे' और 'रूशमें' शब्द आते हैं। योरोप के लोग शुरू-शुरू में 'श' का उच्चारण नहीं कर सकते थे, इसलिए लैटिन में 'शतं' (सौ) को 'केन्तुम', ग्रीक में 'कातोन', प्राचीन जर्मन में 'हुंड', गाथिक में 'खुन्त' और अंग्रेजी में 'हण्ड्रेड' कहते हैं। लेकिन कुछ दिनों बाद आर्यों की एक अन्य शाखा भी योरोप में निवास करने के लिए गई। वह बराबर 'शतं' बोलती थी। बाद में यह शुद्ध उच्चारण जिस शुद्ध वैदिक आर्य जाति से योरोपवालों ने सीखा, वह जाति अबतक वहाँ मौजूद है।

योरोप के विद्वानों ने यह शोर मचा रखा है कि वे भी आर्य हैं। लम्बी नाक, सफेद चेहरा और केन्तुम अथवा शतम् भाषा बोलने वालों को नहीं— यद्यपि योरोपीय विद्वान् वैदिक आर्यों की बौद्धिक क्षमता और सभ्यता आदि के आधार पर योरोपनिवासी आर्यों का यह लक्षण बताते हैं, जो उनमें खप जाए। पर खोज-बीन करने वालों ने पता लगा लिया है कि योरोप निवासी प्राचीन वैदिक आर्यों के वंशज नहीं हैं। हाँ, उन्होंने आर्यों की भाषा अवश्य अपना ली है, जिस प्रकार आजकल गोवा प्रदेश में बसने वाले देशी क्रिश्चियन अंग्रेजी को अपनी भाषा बना रहे हैं, उसी प्रकार योरोप वालों ने भी आर्य भाषा ग्रहण की है, जबकि उनकी उत्पत्ति दो भिन्न-भिन्न मानव समुदायों के मिश्रण से हुई है। वे दोनों समुदाय किसी जमाने में आर्य थे, पर आर्यत्त्व नष्ट करके एक दल 'मंगोल' हुआ और दूसरा 'निग्रो।' इन्हीं मंगोल और निग्रो के मिश्रण से योरोप निवासियों का प्रादुर्भाव हुआ है। वैदिक आर्यों की उच्च सभ्यता उस समय भी प्रचलित थी। अतः इस काले-पीले रंगों के मिश्रित वंश ने आर्यों की भाषा और सभ्यता से प्रभावित होकर उसे स्वीकार किया।

विद्वानों की जाँच से ज्ञात होता है कि योरोप में मनुष्यों की बस्ती बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाद में बसी है। लोकमान्य तिलक के मतानुसार तो 'योरोप की बस्ती दस हजार वर्ष से अधिक पुरानी सिद्ध ही नहीं होती। लेकिन दूसरे विद्वान् उसको इससे अधिक प्राचीन मानते हैं। चाहे जो हो, लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि योरोप में पृथ्वी के अन्य भूभागों की अपेक्षा मनुष्य जाति बहुत ही पीछे बसी है। इसलिए प्रश्न उठता है कि यह मिश्रित जाति कहाँ पर उत्पन्न हुई और कहाँ पर इसने आर्य भाषा सीखी ? इसकी निष्पत्ति पर दो-एक मत हैं। लेकिन सबसे उत्तम मत यह है कि एशिया माइनर में ही यह सब रचना हुई। एशिया माइनर के वर्णन में हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि वहाँ द्रविण भाषा बोलने वाली हिट्टी खत्ती जाति निवास करती थी। स्वेज नहर के किनारे पर निवास करने वाले अफ्रीका के काले रंग के निग्रो भी वहाँ आया करते थे, जहां पर पुरानी जाति भी मौजूद थी। डॉक्टर भंडारकर के स्मृति निबन्ध में तिलक ने भी यही बात लिखी है। उधर 'हार्म्सवर्थ हिस्ट्री दी वर्ल्ड' में लिखा है कि वहां मंगोल जाति भी रहती थी। हमारी खोज से पता चलता है कि वैदिक काल की पतित क्षत्री जाति किरात होकर हिमालय पर गई और केलात नाम धारण करके उसकी एक शाखा बहुत दिन बाद तातारवालों की पूर्वज होकर एशिया माइनर में बसी, जो कालांतर में योरोप देश की केल्ट जाति की जन्मदात्री हुई। इसी तरह मद्रास के झल्ल अफरीका के जुलू हुए, जो स्वेज नहर से एशिया माइनर में आकर केल्ट नामक तातारियों से मिले और बाद में इन्हीं काले रंग वाले जुलुओं और पीले रंग के केल्ट तातारियों के मेल से श्वेत रंग की उत्पत्ति हुई तथा यहीं पर आर्यो की भाषा सीखकर आर्यमणि (आरमेनिया) नामक स्थान में अपना निवास किया।

यहीं से योरोप में आर्य जाति के पदार्पण का आरम्भ हुआ। उनकी भाषा आर्य भी हो चुकी थी। इसी आर्य भाषा के कारण उन्होंने आर्यनन्द अर्थात् आयरलैण्ड और शर्मदेशिया अर्थात् शरमेशिया आदि नाम रखे। रोम शब्द लैटिन का नहीं अपितु भास्कराचार्य द्वारा शोधित संस्कृत का है। वेद में 'रूमे' और 'रूशमे' शब्द आते हैं। ये लोग शुरू-शुरू में 'श' का उच्चारण

(शेष पृष्ठ 81 पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ठ 32 का शेष)

राजा साहब भी विस्मित और अवाक—अधरों से हठात् कोई शब्द न निकला। कई एक क्षणों के बाद वह बोले—'पंडितजी, आपने यह क्या किया? मैंने तो मजाक में कहा था…और आपने इसे…?'

'जमीन पर फेंक दिया!' पंडित जी ने वाक्य पूरा किया।

'लेकिन क्यों?' राजा साहब ने पूछा।

'असली-नकली की पहचान के लिये?…यदि नहीं फेंकता तो दोस्त को यकीन कैसे दिलाता?' पंडित जी ने कहा।

बाद में पूछने पर पता चला—उस जमाने में उस इत्र को कीमत थी 1200 रुपये। ऐसी अनेक कीमती वस्तुएँ उन्होंने तिरवाँ के राजा को दे दीं, जिसे न तो कभी वापस मांगी और न ही उनकी कीमत ली। इस घटना से प्रकट होता है कि वह कितने उदात्त विचारों के व्यक्ति थे। केवल वही नहीं, उनकी धर्म पत्नी विद्यावती शारदा देवी भी उनसे कुछ कम न थीं। इसका पता इस बात से लग जाता है कि सरदार भगत सिंह के फरारी काल में इन्होंने उन्हें अपना देवर घोषित कर लाल सिंह के नाम से निरन्तर तीन महीने तक अपने गांव टोपरी में अपने साथ रखा।

जिसके माता-पिता इतने प्रबल-सशक्त राष्ट्रवादी और क्रांतिकारी विचारों के रहे हों, उनकी संतान में ऐसे गुणों का समावेश स्वाभाविक है। सन् 1932 में महात्मा वेदभिक्षु के क्रांतिकारी पिता श्री गयाप्रसाद जी का स्वर्गवास हो गया। यह एक ऐसा वज्रपात था, जिससे हतोत्साहित होकर हिम्मतहार बैठना किसी के लिए भी संभव है। लेकिन माता विद्यावती देवी ने हिम्मत नहीं हारी। वैसे भी वह जीवन में इतनी धैर्यवान और साहसी महिला थीं कि संकट की किसी भी घड़ी में अपना साहस कभी नहीं छोड़ती थीं। इस विपत्ति की घड़ी में भी उन्होंने साहस से काम लिया। उन्होंने बालक भारतेन्द्रनाथ की शिक्षा-दीक्षा चालू रखते हुए अपने समाज और राष्ट्र सेवा में व्यवधान तनिक भी नहीं आने दिया। सन् 1935 में उन्होंने नाहन (हिमाचल प्रदेश) में 'शारदा निकेतन' की स्थापना की। सन् 1936 में कन्या विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। इसी समय यानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् 1937 में सरकार ने उन्हे उन्नाव का अवैतनिक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। उस समय सारे भारत में वह पहली महिला मजिस्ट्रेट थीं। इस पद पर वह लगभग चार वर्ष तक रहीं। उसके बाद सन् 1940 में उन्होंने कनखल में स्वतंत्र रूप से 'मातृ शक्ति सदन' की स्थापना की।

इस अवधि में श्री भारतेन्द्र जी अपनी माता जी के पास रहे। यह समय था सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का। माता विद्यावती देवी इस काम में जी जान से जुटी हुई थीं। वह एक दिन अपने मिशन का काम पूरा कर बम्बई से रात में अपने घर कनखल आईं। भारतेन्द्र जी उस समय घर में ही थे। उन्हें देखकर माता जी बोलीं—'तू अभी तक जिन्दा है? या तो कुछ कर, नहीं तो मर!'

'करो या मरो' का नारा ही तो था गाँधी जी का। मां की बात पर भारतेन्द्र जी को तैश आ गया। वह रात के ग्यारह बजे बिस्तर से उठे और डाकघर फूंक आये। कुल मिलाकर उन्होंने करीब एक दर्जन थानों को आग की लपटों को भेंट किया। कनखल का थाना फूंकते समय वहाँ के थानेदार रामचन्द्र सिंह ने उन्हें पकड़ लिया। वह उन्हें लेकर माता जी के पास आये और बोले—'माता जी, यह अभी फूल है। इसे पेड़ बन जाने दीजिये, तब यह सब करना अच्छा लगेगा।' उस समय उनकी आयु 13 वर्ष थी।

उन दिनों यही हवा प्रवाहित थी। भारतेन्द्र जी पूरी तरह स्वाधीनता संग्राम में जुट गये। राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने के कारण वह पुलिस की नजरों में आ गये। उन दिनों किशोरीदास वाजपेयी, मैथिलीशरण गुप्त और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे सभी राष्ट्रवादी लेखक और नेता जेल में बंद थे। क्रांति का मिशन अबाध गति से आगे बढ़ता रहे, यह सोचकर माता जी भारतेन्द्र जी को गिरफ्तारी से बचाना चाहती थीं। उन्होंने भारतेन्द्र जी को अपने मुंह बोले भाई योगेश्वरानन्द जी के ऋषिकेश आश्रम में भेज दिया। यहीं पर भारतेन्द्र जी ने 'ओम्' का जाप सीखा तथा योगाभ्यास की शिक्षा भी ली।

लेकिन इस आश्रम में भी आकर वह पुलिस की दृष्टि से बच न सके। तब माता जी ने उन्हें जेहलम के गुरुकुल में भरती करा दिया। इस गुरुकुल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
में रहते हुए भारतेन्द्र जी ने पंजाब विश्वविद्यालय की 'हिन्दी भूषण' परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर सन् 1944 में मैट्रिकुलेशन, हन्दी प्रभाकर, सन् 1945 में इण्टर मिडियेट तथा बी० ए० पास किया। इस प्रकार वह कुल मिलाकर चार-पांच वर्षों तक इस गुरुकुल में रहे। यहाँ उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत का गहन अध्ययन किया। यहां रहते हुए ही उन्होंने सन् 1944 में अयोध्या की साहित्यालंकार परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

गुरुकुल की शिक्षा पूरी होने पर वहां के दीक्षांत समारोह में माता जी ने आशीर्वाद देते हुए भारतेन्द्र जी से कहा—'बेटा, जीवन भर अर्थोपार्जन की दृष्टि से कोई काम न करना। अपना सारा जीवन देश और जाति की सेवा में लगाना।'

इसके बाद आया सन् 1946 का वह समय, जहाँ से भारतेन्द्र जी का वास्तविक संघर्षशील जीवन आरम्भ हुआ। गुरुकुल से विदा हो वह उत्तर प्रदेश चले आए और बरेली के आर्यसमाजी नेता डाक्टर श्याम स्वरूप सत्यव्रत जी के आग्रह पर उनके साप्ताहिक पत्र 'संघ' का सम्पादन आरम्भ कर दिया। इस समय भारतेन्द्र जी की अवस्था सत्रह वर्ष की हो रही थी। बरेली में रहते हुए ही उन्हें अचानक एक दिन माता जी की बीमारी का समाचार मिला। इस समय माता जी टोपरी (सहारनपुर) में रह रही थीं। भारतेन्द्र जी तुरन्त टोपरी पहुंचे। लेकिन काल की गति अबाध होती है। उसे कोई नहीं रोक सकता। भारतेन्द्र जी के पहुंचने से पूर्व ही 8 अगस्त, सन् 1946 को माता जी का स्वर्गवास हो चुका था। बेटे से माता जी का यहीं तक साथ था।

3 जून, सन् 1947 को भारत-विभाजन की घोषणा हुई। दूरदर्शी भारतीय नेता उसी दिन इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि पाकिस्तान में अब हिन्दुओं का रहना कठिन है। फलस्वरूप जेहलम का गुरुकुल पहले फगवाड़ा (पंजाब), तदुपरांत बिरालसी (जिला मुजफ्फर नगर) में स्थानांतरित कर दिया गया। इस डावांडोल परिस्थिति में श्री भारतेन्द्र जी ने गुरुकुल के प्रधानाचार्य का कार्यभार संभाला। लेकिन कुछ दिनों बाद गुरुकुल पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधिपत्य के प्रश्न को लेकर वहाँ के स्थानीय दो गुटों में बहुत दिनों से चले आ रहे तनाव ने उग्ररूप धारण कर लिया। दोनों ही पक्षों के लोग एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारू हो हथियार लेकर मैदान में आ गए। इस विकट संकट काल को देखते हुए श्री भारतेन्द्र जी ने गुरुकुल छोड़ दिया और अपने गांव बीघापुर (उन्नाव) चले आए।

सन् 1950 में गाजियाबाद के पंडित रामचरण शर्मा की सुपुत्री पंडिता राकेश रानी से उनका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। इसी समय एक दिन उन्हें 250 रुपये माहवार की रेलवे में हिन्दी अधिकारी पद का निमंत्रण मिला। लेकिन श्री भारतेन्द्र जी ने उस सरकारी नौकरी को अस्वीकार कर अपनी माता जी के निर्देशानुसार अपने जीवन का लक्ष्य वैदिक धर्म प्रचार की भावना को महत्त्व देते हुए 60 रुपये महीने पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक का पद स्वीकार किया। बचपन से ही उनके विचार क्रांतिकारी और समाजवादी थे, इसीलिए उनका झुकाव धर्म की ओर ही अधिक था। उन दिनों अम्बाला छावनी से 'आर्य' का प्रकाशन होता था। उसके प्रधान सम्पादक थे सभा के मंत्री पंडित भीमराव विद्यालंकार। श्री भारतेन्द्रजी ने उपदेशक के साथ-साथ इस पत्र में सम्पादन का कार्यभार भी संभाला। इन दोनों पदों का उत्तरदायित्व संभालते हुए उन्होंने अम्बाला छावनी में एक विराट् आर्य-सम्मेलन का आयोजन भी किया। उपदेशक के पद पर रहते हुए इन्होंने प्रचार शैली को सर्वथा नया रूप दिया। वह सन् 1953 के अन्त तक 'आर्य' के सम्पादन विभाग से जुड़े रहे।

इसके बाद वह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र साप्ताहिक 'आर्यमित्र' का सम्पादक बनकर लखनऊ चले गए। 'आर्यमित्र' में उन दिनों आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों की रचनायें पढ़ने को मिलती थीं। आचार्य नरदेव शास्त्री तथा पंडित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय सदृश विद्वान् श्री भारतेन्द्र जी की योग्यता से प्रभावित थे। कुछ समय बाद उन्होंने अपने अडिग आत्मविश्वास और अदम्य साहस का परिचय देते हुए साप्ताहिक 'आर्यमित्र' के साथ ही दैनिक 'आर्यमित्र निकालने का भी निर्णय ले लिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सर्वविदित है कि बिना विपुल धनराशि के एक दैनिक पत्र निकालने की कल्पना करना आकाश-कुसुम के समान है। धनाभाव होते हुए भी उन्होंने अपनी इस कल्पना को मूर्तरूप दिया और अनेक विरोधाभासों के होते हुए भी व्यवस्थित रूप से निरन्तर ग्यारह महीने तक 'आर्यमित्र' का दैनिक संस्करण निकालते रहे। लेकिन सभा के पदाधिकारियों के पारस्परिक मतभेद के कारण 'आर्यमित्र' का प्रकाशन हमेशा के लिए बन्द करना पड़ा। इसके बन्द होने से भारतेन्द्र जी को अत्यधिक मर्मान्तिक पीड़ा हुई थी। उन्हीं के शब्दों में —'शायद मुझे अपने किसी बच्चे के मरने पर भी इतना दुःख नहीं होता।'

'आर्यमित्र' बन्द होने पर श्री भारतेन्द्र जी ने गाजियाबाद आकर 'उत्तराखण्ड आयुर्वेदिक रसायन शाला' के नाम से आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण की एक फार्मेसी खोली। इस फार्मेसी की 'दन्त कल्पमंजन' और 'यौवन्दा ज्योति सुरमा आदि कुछ औषधियाँ अत्यन्त लोकप्रिय हुईं। औषधि निर्माण के साथ-साथ उन्होंने 'अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई धर्म प्रचार निरोध प्रकाशन' नाम से एक प्रकाशन भी आरम्भ किया।

सन् 1960 में श्री रामनाथ भल्ला के अनुरोध पर वह 'इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स' की हैसियत से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में आए। सन् 1961 में दिल्ली में नवाँ आर्य सम्मेलन हुआ। उसकी सफलता के लिए उन्होंने रात-दिन एक कर दिया। श्री भारतेन्द्र जी का यह समय काफी व्यस्ततापूर्ण था। एक ओर धर्मपत्नी पंडिता राकेशरानी अस्पताल में थीं और दूसरी ओर यह सामाजिक आयोजन। तो भी वह धर्मपत्नी का कुशल-क्षेम जानने के लिए कुछ क्षण अवश्य ही निकाल लेते थे। उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र 'आर्योदय' दिल्ली से छपता था। सभा के मंत्री होने के कारण उसके प्रधान सम्पादक थे श्री रघुवीर सिंह शास्त्री। लेकिन उनका सिर्फ नाम छपता था, पत्र के वास्तविक सम्पादक तो भारतेन्द्र जी ही थे। अपनी सम्पादन क्षमता से उस पत्र में नई जान डाल कर, जन-स्तर पर उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर्याप्त ख्याति दिलाई। उन्होंने उस पत्र के कई विशेषांक निकाले। लेकिन सन् 1968 में जब सभा की आन्तरिक गुटबन्दी ने उग्ररूप धारण कर लिया तो भारतेन्द्र जी उससे अलग हो गये।

जगह-जगह की आर्य प्रतिनिधि सभाओं की पारस्परिक गुटबन्दी से श्री भारतेन्द्र जी को जो कटु अनुभव मिला, उससे उनका मन कुछ खिन्न-सा हो चला। आखिर में उन्होंने फैसला लिया स्कतंत्र रूप से एक मासिक पत्र निकालने का। श्री भगवानदेव शर्मा (जो बाद में संसद सदस्य भी रहे) के सहयोग से उन्होंने 'जनज्ञान' नाम से एक मासिक पत्र का शुभारम्भ किया। पत्रिका-प्रकाशन से पूर्व श्री भारतेन्द्र जी अपनी धर्मपत्नी के साथ महात्मा आनन्द स्वामी का आशीर्वाद लेने उनके पास गये। बातचीत के प्रसंग में श्री भारतेन्द्र जी ने कहा—'अट्ठारह वर्षों तक आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं में कार्य करके देखा। जो संस्था, समाज और राष्ट्रहित में कोई काम नहीं करना चाहते, वे संस्थानों और सभाओं पर जबरन कब्जा किये बैठे हैं और जो कुछ करना चाहते हैं, उन्हें काम नहीं करने दिया जाता। मेरा मन अब एकदम ऊब गया है इन संस्थाओं से। इसलिए अलग-थलग रह कर मैं अब स्वतन्त्र रूप से काम करना चाहता हूं। काम शुभारम्भ करने से पहले आपका आशीर्वाद लेने आया हूं।'

स्वामी जी ने जवाब दिया—'मेरा आशीर्वाद हमेशा आपके साथ है।··· लेकिन कोरे आशीर्वाद से क्या होने को?···यह लीजिये, इस यज्ञारंभ में मैं अपनी ओर से एक सौ एक रुपये भेंट करता हूँ। ईश्वर को स्मरण कर कार्यारंभ कीजिये, सफलता अवश्य मिलेगी।'

और आनन्द स्वामी जी की उस छोटी-सी पूंजी से श्री भारतेन्द्र जी ने अपना कार्य आरम्भ किया, जो दिन दूना, रात चौगुना उन्नति करता ही गया।

इन्हीं दिनों छुआछूत को लेकर प्रबल विवाद छिड़ा हुआ था। शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ अस्पृश्यता को उचित ठहरा रहे थे और कांग्रेस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में पिछड़े वर्ग के नेता बाबू जगजीवनराम अस्पृश्यता के विरुद्ध जिहाद छेड़ रखे थे। उस समय भारतेन्द्र जी ने तत्कालीन संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री से इस विषय पर एक पुस्तिका लिखवाकर प्रकाशित कराई और उसे संसद सदस्यों में वितरित कराई। 'जनज्ञान' की ओर से आरम्भ में जो भी पुस्तकें प्रकाशित हुईं, यह उन्हीं में से एक थी। इसके बाद तो प्रकाशन-कार्य का विस्तार होता ही गया।

जहाँ चाह है, वहाँ राह अपने आप बन जाती है। ऐसे तो संसार में जितने भी जीव इस धरती पर अवतरित हुए हैं या भविष्य में होंगे उन्हें सुख के साथ दुख भी झेलना ही पड़ेगा, क्योंकि जीवन संघर्षमय है। जिसके जीवन में संघर्ष नहीं उसकी जिन्दगी व्यर्थ है। इसी प्रकार श्री भारतेन्द्र जी के जीवन में भी जाने कितने उतार-चढ़ाव देखने को मिले, लेकिन उन्होंने हिम्मत कभी नहीं हारी, अपितु दूसरों के लिये प्रेरणा के स्रोत बने रहे।

एक समय था जब भारतेन्द्र जी कट्टर कांग्रेसी थे और भारत-रक्षा-समिति की स्थापना करके देशद्रोही षड्यंत्रकारी सम्प्रदायों के विरुद्ध ज़बरदस्त आंदोलन चलाते रहे। लेकिन सन् 1978 में अलीगढ़ आदि स्थानों में हुए साम्प्रदायिक दंगों और हिन्दुओं पर हुए बर्बर अत्याचार ने उनके हृदय में हलचल-सी उत्पन्न कर दी। सचाई उनकी आँखों के सामने थी। जब हिन्दू हितों की रक्षा करने वाला उन्हें कोई न दिखा तो उन्होंने विशुद्ध राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के लिये 'भारत रक्षा समिति' की स्थापना की। बाद में इसका नाम 'हिन्दू रक्षा समिति' में परिवर्तित कर दिया।

इसी वर्ष 14 मार्च, 1978 को जीवन के 50 साल पूरे होने पर उन्होंने आर्य समाज के वीतरागी संन्यासी स्वामी सर्वानंद जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। अब वह भारतेन्द्र नहीं, बल्कि महात्मा वेदभिक्षु के नाम से पहचाने जाने लगे।

सन् 1973 में दिल्ली के निकट इब्राहीमपुर में उन्होंने वेदमंदिर की स्थापना की। अब उनका काफी समय वेद मंदिर में ईश्वरोपासना में व्यतीत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

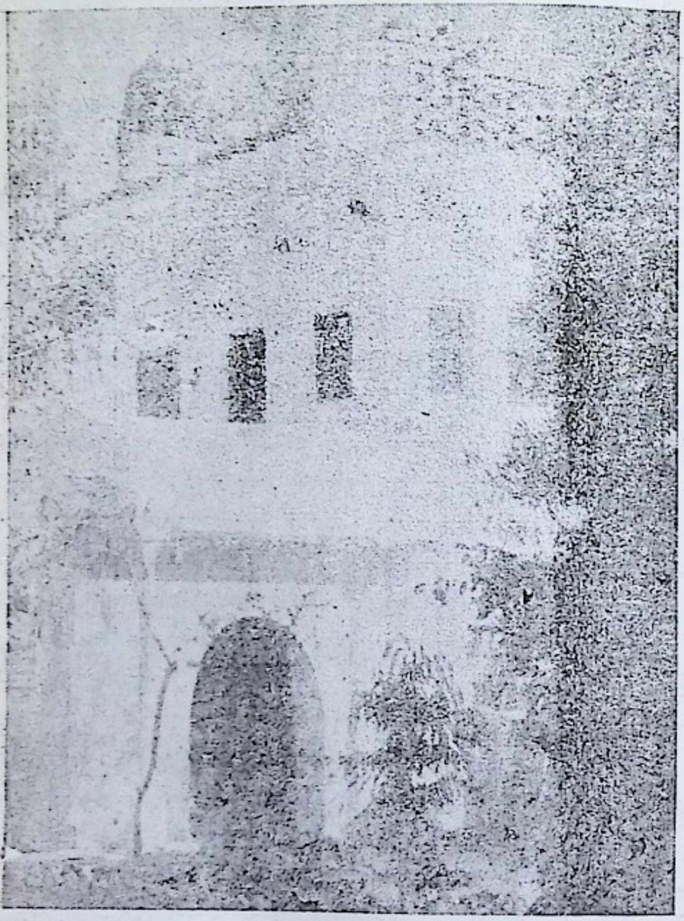

वेद मन्दिर का कार्यालय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होने लगा था। **वेद मंदिर अपने आप में अभी भी अधूरा है। यदि आज वेदभिक्षु जी होते तो निश्चित ही 'वेद मंदिर' अपनी गतिविधियों के साथ ही अपनी पूर्णता की ओर बढ़ रहा होता लेकिन अभी तो वह प्रतीक्षा में है किसी ऐसे प्रेमी भक्तजन की जो अधूरा वेद मंदिर पूरा कराकर महात्मा वेदभिक्षु के अधूरे सपने को मूर्तरूप प्रदान करें।**

5 दिसम्बर, 1983 की सुबह महात्मा जी ने अपने पेट में कुछ जलन-सी महसूस की। उस दिन भी वह दिन भर अपने आफिस में कार्य करते रहे। किसी को भी यह पता न था कि यही उनके जीवन का अंतिम दिन है। उस अदृश्य सत्ता के खेल बड़े निराले होते हैं। वह क्या करने वाला है, इसकी जानकारी पहले से किसी को नहीं बतलाता।

रात लगभग साढ़े दस बजे महात्मा जी की तबीयत बिगड़नी आरम्भ हुई। उन्हें तुरंत जयप्रकाश नारायण अस्पताल ले जाया गया। लेकिन वहाँ उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार होता नजर नहीं आया। आखिर प्रातःकाल उन्हें गोविन्दवल्लभ पंत अस्पताल पहुंचाया गया; जहाँ महर्षि दयानंद अस्पताल शाहदरा के वरिष्ठ डाक्टर श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीवास्तव की देखरेख में डाक्टरों ने हर सम्भव प्रयत्न किया उन्हें बचाने का। डाक्टरों का यह प्रयास 20 दिसम्बर की रात तक निरंतर जारी रहा। लेकिन जाने वाले को भला कौन रोक सका है?

डाक्टरों का प्रयास निष्फल सिद्ध हुआ। ईश्वरेच्छा उस महामानव को महाप्रयाण करने ही पड़े। अब तो केवल शेष रह गई है उस मनीषी की अलौकिक प्रेरणा—अविस्मरणीय स्मृति। ★

एक आदमी नाई की दुकान में जाकर बोला—'भाई, मैं जल्दी में हूं। एक्सप्रेस गाड़ी की रफ्तार से मेरी दाढ़ी बना दो!'

नाई ने दाढ़ी बना दी।

आदमी ने शीशे में अपना मुंह देखकर कहा—'क्यों जी, यह जगह-जगह बाल क्यों छोड़ दिए?'

नाई हंसकर बोला—'एक्सप्रेस गाड़ी भी तो छोटे-छोटे स्टेशनों को छोड़ती जाती है।'

—राजेश कुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना ।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम ।।
चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियु संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियु जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहु विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है, ते सब नरक कुंड महि परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—158, बालकेश्वर मार्ग तीन बत्ती, बम्बई-400006

1. जावेरी बाजार 2. ग्रांट रोड 3. कोलाबा 4. दादरा टी. टी. 5. वरली नाका 6. सर्कल 7. ठाकुर द्वार 8. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट 9. घाटकोपर (पश्चिम) 10. लिंकिंग रोड, बांदरा 11. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम) ।

● कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड, बम्बई-400007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल जगत्

राजकुमार भोज

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

दसवीं शताब्दी में मालवा पर सूर्यवंशी महाराजा सिन्धुल क अधिकार था। वह बड़ा दयालु, बुद्धिमान् तथा प्रजावत्सल नरेश था। उसकी रानी का नाम वींरमती था और वह भी बुद्धिमती तथ सूझबूझवाली वीरांगना थी। महाराजा सिन्धुल का महामन्त्र बुद्धिसागर था। वह अपने नाम के अनुसार ही बुद्धिमान्, न्यायप्रि तथा स्वामिभक्त था। बुद्धिसागर मन्त्री की सलाह से महाराज सिन्धुल मालवा पर धर्म और न्यायपूर्वक शासन करते थे। उस राज्य में सारी प्रजा सुखपूर्वक रहती हुई अपने-अपने धर्म क पालन करती थी। वह स्वयं विद्वान् थे और विद्वानों का आद करते थे।

वृद्धावस्था में रोगग्रस्त हो जाने से महाराज सिन्धुल का देहान्त गया। देहान्त होने से पूर्व जब वह रोगी थे तब उन्होंने चिन्ता की कि मे पुत्र भोज अभी आयु में बहुत छोटा है, वह राज-काज सम्हालने के योग्य न है, इस राज्य का क्या होगा और कौन राज्य का कार्य करेगा ? बहुत सो विचार के पश्चात् अपने महामन्त्री बुद्धिसागर से परामर्श करके उन्होंने रा का कामकाज देखने के लिये अपने छोटे भाई मुंज को नियुक्त किया अ कहा कि भोज अभी छोटा है, तुम इसकी देख-रेख अच्छी प्रकार करते रह और इसे अपना ही पुत्र समझना।

महाराज सिन्धुल की आज्ञा से मुंज सिंहासन पर बैठ गया और र काज करने लगा। सिन्धुल का विश्वासपात्र मन्त्री महामति बुद्धिसागर वृद्ध हो गया था। उसके हाथ-पांव तो दुर्बल हो चले थे, किन्तु बुद्धि अभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ड़ी तेज थी। मुंज ने गद्दी पर बैठते ही सिन्धुल के विश्वासपात्र मंत्री बुद्धि-
ागर की उपेक्षा कर दी और अपने विश्वासपात्र देवरत्न नाम के एक व्यक्ति
ो मंत्री बना लिया। यह बड़ा कुटिल और राग-द्वेष करने वाला तथा मन्दमति
ा। इसमें दूर की सूझबूझ नहीं थी और यह भविष्यद्रष्टा भी नहीं था।
ह सदा मुंज को विपरीत मार्ग पर चलने की ही बुद्धि दिया करता था।

सिन्धुल का पुत्र राजकुमार भोज आयु में छोटा था। वह विद्यालय में
ड़ा करता। वह भी अपने पिता के समान सुशील, विनीत, धर्मात्मा और
व्रबुद्धि का था। गुरुजी की कृपा और अपनी बुद्धि की योग्यता के बल पर
सने सभी विद्याओं में निपुणता प्राप्त कर ली। धनुर्विद्या में भी वह कुशल
गया।

समय-समय पर मुंज भोज की पढ़ाई-लिखाई के विषय में जानकारी
रने और उसकी योग्यता की जांच करने के लिये विद्यालय में जाया करता
। एक बार मुंज जब राजकुमार भोज के विद्यालय में अपने मन्त्री देवरत्न
साथ लेकर गया तो भोज के गुरुजी ने उसकी योग्यता की बहुत प्रशंसा
। उसे घोड़े की सवारी करते देखकर मुंज बहुत प्रसन्न हुआ।

मुंज तो भोज की प्रशंसा और योग्यता को देखकर प्रसन्न हुआ, किन्तु
का कपटी मन्त्री अप्रसन्न हुआ। उसने अपने मन ही मन अनेक षड्यन्त्र
योजनायें बनानी आरम्भ कर दी। जिस प्रकार रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक
समाचार सुनकर कैकयी तो प्रसन्न हुई थी और उसकी दासी मन्थरा
ो हुई थी, उसी प्रकार मुंज के मन्त्री का व्यवहार था।

मुंज के हितैषी कपटी मन्त्री ने उसे समझाना आरम्भ किया — 'अब
ज युवा हो गया है, अपना भला-बुरा पहचानने लगा है, वह राज-काज
बातें भी सीख गया है। उस दिन उसके विद्यालय में आपने देखा ही
कि वह घुड़सवारी और युद्ध-विद्या में कितना प्रवीण हो गया है। मैं
झता हूं कि वह अब अपने पिता के राज्य को पाने के लिये सब प्रकार के
न अवश्य करेगा, क्योंकि धन-सम्पत्ति पर सबका ही मन चलता है। फिर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह तो राजा के कुल का है और अब जवान भी हो चला है, अतः उसके म
में राज्य-सुख की कामना का उठना स्वाभाविक ही है। यह भी सम्भ
है कि आपको राजगद्दी से हटाकर स्वयं बैठना चाहे। राज्य के सामने चाचा
ताऊ और भाई-भतीजे सब तुच्छ हो जाते हैं और सभी रिश्ते-नाते झूठे प
जाते हैं।

मन्त्री की बातों का प्रभाव मुंज के हृदय पर पड़ने लगा। एक दिन उस
राज्य के प्रसिद्ध ज्योतिषी को बुलाकर भोज की जन्म-कुंडली दिखाई त
उस ज्योतिषी ने बताया कि 'इस जन्म-कुंडली में बालक के राजा होने
लक्षण पाये जाते हैं और यह बालक अत्यन्त भाग्यशाली, प्रतापी औ
यशस्वी बनेगा ? ज्योतिषी की बात सुनकर मुंज का माथा ठनका और उ
अपने परमहितैषी मन्त्री की बातों पर और भी अधिक विश्वास हो गया
अब तो उसने अपने मन्त्री के सामने चिन्ता व्यक्त की और इस सम्बन्ध
गम्भीरतापूर्वक मन्त्रणा की। मन्त्री ने भोज को मरवा डालने की सम्मति
और उसी के अनुसार भोज के वध का षड़यन्त्र रचा गया।

मन्त्री की सम्मति से मुंज ने नगर के प्रसिद्ध बधिक को बुलाया। उसक
नाम वत्सराज था। वत्सराज ने हाथ जोड़कर विनीत भाव से राजा से पूछा–
'महाराज ! आज सेवक के लिये क्या आज्ञा है ?' मुंज ने एकान्त में ले जाक
उसे कहा —'भोज अब बड़ा हो चला है। वह राजनीति और राजका
चलाने के सब गुर भी सीख गया है। मुझे आशंका है कि कहीं वह अप
पिता के राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिये कोई षड्यन्त्र न कर डाले
इसलिये अब उत्तम कार्य यही है कि तुम उसे कहीं दूर जंगल में ले जाक
उसका वध कर डालो और उसका कटा हुआ सिर मेरे सामने ला दो। ऐ
करने से मुझे शान्ति मिलेगी और राज्य भी निष्कंटक हो जायेगा। तुम मे
विश्वासपात्र हो, इसीलिये तुम्हें यह कार्य सौंपा है।'

भोज धर्मात्मा, विनीत और प्रजा का प्रिय था, इसलिये राजा का य
आदेश सुनकर वत्सराज का हृदय धक्-धक् करने लगा। वह मन ही म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोचने लगा कि राजा ने यह कैसा अनर्थ किया है ? यह पाप-कृत्य मैं कैसे करूंगा और कैसे उस अबोध बालक के गले पर छुरी चलाऊंगा ? उसका मन तो दुखी था, किन्तु उसने अपने मन के भाव को छिपाकर राजा से कहा—'राजन ! आपकी आज्ञा अवश्य पूरी की जायेगी। हम जैसे राज्य के विश्वासपात्र भी यदि राजा की आज्ञा की अवहेलना करने लगें तो राज्य का कार्य चलना अति दुष्कर हो जायेगा।'

मुंज ने वत्सराज से कहा—'जाओ, भोज को विद्यालय से ही रथ में बिठाकर देवी के दर्शन कराने के बहाने से ले जाओ और वहीं उसका वध कर डालो।' वत्सराज का हृदय नाना प्रकार के भावों से उद्वेलित होने लगा। मन ही मन वह विचार करने लगा कि बड़ी विचित्र स्थिति में फंस गया हूँ। क्या करूं ! भोज का वध करूं या राजा की आज्ञा का उल्लंघन ! यही विचार करता-करता वत्सराज भोज के विद्यालय में पहुंच गया।

गुरुजी की अनुमति लेकर वत्सराज ने भोज को विद्यालय से बाहर बुलवाया और कहा—'राजा ने मुझे यह कहकर भेजा है कि मैं तुम्हें देवी के दर्शन करा लाऊं।'

भोज सीधा-सादा और सरल स्वभाव का विनम्र बालक था। उसने बिना किसी ना-नुच के उसकी बात स्वीकार कर ली और रथ में बैठकर देवी के मन्दिर जाने के लिये तैयार हो गया।

वत्सराज भोज का वध नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह भोज को निरपराध समझता था और राजा की आज्ञा को अन्याय। इसलिये वह निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचकर भोज से बोला—'राजकुमार, अब मैं सत्य बात तुम्हें बतलाता हूँ। वह यह है कि राजा ने मुझे तुम्हारा वध करने की आज्ञा दी है और कहा है कि तुम्हारा कटा सिर मैं उसे दिखाऊं। तुम बालक हो, निर्दोष हो और किसी प्रकार का राजनीतिक छल-कपट नहीं जानते हो, इसलिये मैं तुम्हारा वध नहीं करना चाहता। तुम इसी स्थान पर गुप्त रूप से रहना और मैं ऐसा उपाय करूंगा कि तुम्हारा जीवन भी बचा रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और राजा का कार्य भी सिद्ध हो जाये।' भोज ने उसकी बात मान ली।

जब वत्सराज वहाँ से चलने लगा तो भोज ने उसे पत्ते पर लिखकर एक संस्कृत का श्लोक दिया और कहा कि यह मुंज को दे देना। वत्सराज की पत्नी कलाकार थी। उसने भोज के सिर जैसा बिलकुल असली मोम का सिर बनाकर उसे दे दिया और कहा कि राजा को भोज का यह सिर दिखा देना। कपड़े से ढककर वत्सराज वही बनावटी सिर मुंज के पास ले गया और कहा—'राजन! आपकी आज्ञा का पालन हो गया है और मैं यह भोज का सिर ले आया हूँ।' मुंज यह सोचकर कि मेरा वंश नष्ट हो गया है, अब मैं निष्कंटक राज्य करूंगा, बहुत प्रसन्न हुआ। उसके दरबार में भी प्रसन्नता का वातावरण छा गया।

फिर मुंज ने वत्सराज से पूछा कि मरते समय भोज ने कुछ कहा तो नहीं था? वत्सराज ने वही श्लोक जो भोज ने पत्ते पर लिखकर दिया था, उसे दे दिया। उस श्लोक को पढ़कर मुंज भौचक्का रह गया। उसकी आँखें खुल गईं और वह पश्चात्ताप करने लगा। उस श्लोक का भाव यह था—

'सत्ययुग में मान्धाता बड़ा प्रसिद्ध राजा हो चुका है, वह भी अब नहीं है। विशाल महासागर पर जिसने पुल बांधा, वह महाबली रावण का वध करनेवाला राम भी अब कहां है? हे राजन, युधिष्ठिर आदि अन्य धर्मात्मा राजा भी स्वर्गवासी हो गये, यह भूमि किसी के भी साथ नहीं गई, किन्तु मुंज! मैं समझता हूँ कि तेरे साथ यह अवश्य ही जायेगी।'

उसे पढ़कर मुंज की बुद्धि बदल गई। उसका हृदय बदल गया और वह विचारने लगा कि मैंने भोज का वध कराकर बहुत ही बुरा किया है। इसी चिन्ता में वह बराबर रहने लगा कि इसका प्रायश्चित्त कैसे हो और मेरे पाप कैसे छूटें। इतने में ही वत्सराज की पत्नी वेष बदल, तान्त्रिक बनकर मुंज के दरबार में पहुंच गई। वहां उसने प्रकट किया कि मैं मृतकों को जीवित कर सकता हूं और बड़े कठिन कार्यों को भी सिद्ध करके आपकी मनोकामना पूर्ण कर सकता हूं। उसकी कला और विद्या-बुद्धि की प्रशंसा सुन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर मुंज ने उससे कहा कि भोज को पुनः जीवित कर दो। वत्सराज को साथ ले, उसके वध-स्थान पर जाकर शीघ्र ही भोज को मेरे पास ले आओ। वत्सराज को साथ ले उसकी पत्नी उसी स्थल पर गई और वे दोनों जीवित भोज को रथ में बिठाकर राजा के पास ले आये। राजा भोज को देखकर परम प्रसन्न हुआ और अपने पाप पर पश्चात्ताप करने लगा।

उस राज्य में एक महाकवि कालिदास भी था। उसने इस घटना पर दो बड़े सुन्दर श्लोक लिखे थे, जिसका अर्थ यह था कि (1) आज भोजराज के मरने पर धारा नगरी निराधार हो गई है, सरस्वती भी आश्रयहीन हो गई है और सब पंडित तेजोहीन हो गये हैं। (2) आज भोजराज के पुनः जीवित हो जाने पर धारा नगरी श्रेष्ठ आधारवाली हो गई है, सरस्वती का आधार भी सुन्दर हो गया है और सब पंडित भी भूषित हो गये हैं। इन में पहला श्लोक तब लिखा था जब मुंज ने भोज का वध कराया था और दूसरा श्लोक तब लिखा जब वह पुनः जीवित हो गया।

भोज का लिखा हुआ श्लोक पढ़कर मुंज के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने अपने मन्त्रियों से विचार किया और भोज को राज्य सौंपकर स्वयं तपस्या करने के लिये वन में चला गया था।

बड़ा होकर भोज ने बड़ी योग्यता से राज्य किया। यह स्वयं भी संस्कृत का विद्वान् था और संस्कृत के विद्वानों का बहुत मान करता था। उसने अपने राज्य में विद्या का बहुत प्रचार किया। उसके राज्य में कुम्हार, लकड़हारे और जुलाहे आदि सभी संस्कृत के विद्वान् थे। वह संस्कृत के कवियों को उनके श्लोकों पर बहुत धन इनाम में दिया करता था।

इसकी कन्या विद्योत्तमा का विवाह एक निरे मूर्ख कालिदास के साथ कुछ पंडितों ने धोखे से करा दिया था। जब विद्योत्तमा ने देखा कि यह तो महामूर्ख है तो उसने उसे विद्या पढ़ने की प्रेरणा दी। अपनी पत्नी की प्रेरणा से उसने विद्या पढ़ी और संसार-प्रसिद्ध महाकवि बन गया। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ 64 का शेषांक

नहीं कर सकते थे, इसलिए लैटिन में 'शतं' (सौ) को 'केन्तुम' ग्रीक में 'कातोन', प्राचीन जर्मन में 'हुंड', गाथिक में 'खुन्त' और अंग्रेजी में "हण्ड्रेड" कहते हैं । लेकिन कुछ दिनों बाद आर्यों की एक अन्य शाखा भी योरोप में निवास करने के लिए गई। वह बराबर 'शतं' बोलती थी। बाद में यह शुद्ध उच्चारण जिस शुद्ध वैदिक आर्य जाति से योरोप वालों ने सीखा, वह जाति अब तक वहां मौजूद है।

इसके लिए वहां वालों ने न जाने क्या-क्या कल्पना कर डाली। लेकिन जब उनकी भाषा का मिलान किया गया, तो वे ठीक हिन्दी जैसी भाषा बोलने वाले निकले। पहले यह प्रसिद्ध किया गया कि वे अभी हाल ही में भारतवर्ष से योरोप गये हैं, पर अब ज्ञात हुआ है कि वे बहुत पुराने जमाने से वहां रहते हैं और लोहे के प्रयोग की विधा योरोप में इन्होंने ही फैलाई है।

आगे हम उन प्रमाणों को उद्धृत करना चाहते हैं, जिनमें यह दिखलाया गया है कि योरोप निवासी काली और पीली जातियों के वंशज हैं और केवल आर्य भाषा ही बोलते हैं। इस विषय में मिस्टर टेलर, लोकमान्य तिलक और अविनाशचन्द्र दास ने काफी प्रकाश डाला है। अतः उन्हीं के आधार पर हम कह सकते हैं कि योरोप निवासी आर्यों की शाखा नहीं, प्रत्युत् प्रशाखा हैं।

टेलर महोदय अपने 'ओरिजन आफ आर्यन्स' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि 'योरोप निवासी अफरीकी और मंगोल निवासियों के मिश्रण से उत्पन्न हुए हैं और एशिया की असल आर्य भाषा बोलते हैं।' इस विषय का खुलासा करते हुए 'ऋग्वैदिक इण्डिया' में दास बाबू कहते हैं कि 'सबसे प्रथम जंगली आर्यों का जंगली मंगोलियनों के साथ मिश्रिण हुआ। इस मिश्रित दल की भाषा आर्य भाषा ही हो गई। कुछ दिन बाद इस मिश्रत दल का मिश्रण उस अफरीकी जति के साथ हो गया, जो योरोप में पहले से ही आबाद थी। इस दोबारा मिश्रित दल की भाषा भी आर्य भाषा हो गई। यही आर्य भाषा-भाषी मिश्रित दल वर्तमान समस्त योरोप की जातियों का पूर्वज है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों का उत्तर ध्रुव निवास नामक ग्रन्थ में इस मत की पुष्टि करते हुए लोकमान्य तिलक कहते हैं कि प्राचीन खोपड़ियों की परीक्षा से विद्वानों ने योरोप में चार प्रकार की खोपड़ियां निश्चित की हैं। वर्तमान योरोप निवासी इन्हीं के वंशज हैं। इन चारों में दो वर्ग तो बड़े सिर वाले हैं और दो छोटे सिर वाले। इनमें एक वर्ग लम्बे कद का था, दूसरा ठिंगना। योरोप निवासी सब आर्य भाषा बोलते हैं, इससे यह तो स्पष्ट ही है कि इन दोनों में एक वर्ग आर्यों का है।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पूर्वकाल में आर्य लोग पतित होकर आन्ध्रालय (आस्ट्रेलिया) में गये थे। ये लोग वे आर्य थे जो महाराज विश्वामित्र के पतित पुत्रों से उत्पन्न हुए थे। आधुनिक शोधों के अनुसार आस्ट्रेलिया में मनुष्यों की वस्ती बहुत प्राचीन है तथा महाराज विश्वामित्र के पुत्रों के पतित होकर पलायन करने की घटना भी बहुत प्राचीन है। उस समय भारत और आस्ट्रेलिया के बीच इतना अन्तर न था। उस समय सीलोन और मेडागास्कर की भूमि बहुत चौड़ी थी, जो भारत और आस्ट्रेलिया को जोड़ती थी तथा समस्त टापुओं में एक ही जाति निवास करती थी। आज भी आस्ट्रेलिया निवासियों, भारतीय द्रविणों तथा कोल-भील और संथालों की भाषा एक ही है।

विद्वानों में यह प्रश्न वहुत दिनों तक होता रहा कि इनमें से कौन आर्य और कौन आर्येतर है। कई एक जर्मन विद्वानों का मत है कि इस समय के जर्मनों के पूर्वज यही थे, जो बड़े सिर और लम्बे कद वाले थे। लेकिन फ्रेंच विद्वानों का मत है कि मूल आर्य छोटे सिर और ठिंगने कद के थे। इस विवाद पर कैनन् टेलर नामक एक अंग्रेज ग्रन्थकार कहता है कि जब दो जातियों का मेल होता है तब उनमें जो अधिक सभ्य होती है, उसी की भाषा दूसरी असभ्य जाति स्वीकार करती है। इस महान् नियम के अनुसार बाल्टिक समुद्र के किनारे पर बसने वाले बड़े सिर और लम्बे जंगलियों ने जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटे सिर और ठिंगने आर्यों की सोहबत की तो उन्होंने आर्यों की ही भाषा सीख ली। यही मत सत्य मालूम होता है!

इसके अतिरिक्त उनकी भाषा में अब तक कुछ न कुछ तुरानी शब्द पाये जाते हैं, क्योंकि अफरीका के निग्रो और एशिया के मंगोल तुरानी भाषा ही बोलते हैं। इन प्रमाणों से सिद्ध है कि योरोप निवासी वैदिक आर्य नहीं हैं। इनकी उत्पत्ति दो पतित आर्य जातियों के विचित्र (काले-पीले) मिश्रण से हुई है और केवल आर्यों की भाषा ही बोलने को मिली है। अर्थात् ये आर्यों की दो पतित शाखाओं के मिश्रण से ही हुए हैं। इसलिए हमारा उपर्युक्त वर्णन और लोगों का यह अनुमान कि वे आर्य ही हैं, दोनों आरोप यह सिद्ध करते हैं कि वे आर्यों की शाखा नहीं, किन्तु प्रशाखा हैं, क्योंकि यह बात सिद्ध हो चुकी है कि आदि में सभ्य वैदिक आर्यों का ही प्रादुर्भाव हुआ और उनकी ही शाखाएं अथवा उपशाखाएं या प्रशाखाएं ही संसार के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में बसी हैं। ऐसी दशा में योरोपवालों के आर्य होने में तो बहुतों को शक ही नहीं है, पर जो उन्हें मिश्रवंशज कहते हैं, उनके अनुसार भी वे आर्यों की ही प्रशाखा सिद्ध होते हैं, क्योंकि तुरानी और निग्रो दोनों ही पतित आर्य हैं, इसलिए योरोप निवासियों के आर्य होने में कुछ भी सन्देह नहीं है।

अस्ट्रेलिया

पहले दक्षिणी भारत के लंका और अन्य द्वीपों में आर्यों और द्रविणों का ही निवास था जो दक्षिण भारत अर्थात् मद्रास प्रदेश से ही उक्त द्वीपों में पहुंचे। जिस प्रकार ये सब मद्रास प्रान्त से इन द्वीपों में पहुंचे, उसी तरह उनकी एक आन्ध्रशाखा जो महाराज विश्वामित्र के पतित पुत्रों से उत्पन्न हुई थी, आदिमकाल ही में आन्ध्रालय अर्थात् आस्ट्रेलिया में जाकर बसी थी। आधुनिक शोधों के अनुसार विद्वानों का खयाल है कि आस्ट्रेलिया में मनुष्यों की बस्ती बहुत प्राचीन काल से है तथा विश्वामित्र के पुत्रों के पतित होकर पलायन करने की घटना भी अत्यन्त प्राचीन है। इसका वर्णन ऐतरेय ब्राह्मण में आया है। अतः पूर्वकाल में ही आर्य लोग पतित होकर आन्ध्रालय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में गये थे। कहते हैं, उस समय भारत और आस्ट्रेलिया के बीच इतना बड़ा अन्तर न था। उस समय सीलोन और मेडागास्कर की भूमि बहुत चौड़ी थी, जो भारत और आस्ट्रेलिया को एक में जोड़ती थी तथा समस्त टापुओं में एक ही जाति निवास करती थी। आज भी आस्ट्रेलिया निवासियों, भारतीय द्रविणों तथा कोल, भील और संथालों की भाषा एक ही है। इससे यह बात निश्चित हो जाती है कि सब एक ही जाति के हैं। पतित आर्यों से इन सबकी उत्पत्ति हुई है, अतः सबके पूर्वज आर्य ही थे। इसीलिए धर्मोपदेश के लिए यहाँ के आर्य ऋषि पुलस्त्य बहुत प्राचीन काल में राजा तृणविंदु के यहां आस्ट्रेलिया गये थे। यह बात वाल्मीकि रामायण से अच्छी तरह सिद्ध होती है।

नवीन शोधों के आधार पर भी वहां के निवासी आर्य ही सिद्ध होते हैं। सन् 1922 में गुजरात के एक सुयोग्य लेखक ने 'गुजराती' नामक पत्र के दीपमालिका अंक में वहां की बहुत-सी बात लिखकर, अन्त में लिखा कि आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की रूपरेखा आदि से योरोपवालों ने उनका नाम इण्डियन रखा है। इन लोगों में हिन्दुओं की भांति बहुत बड़ा जाति-भेद है। ये लोग परस्पर एक-दूसरे के हाथ का छुआ नहीं खाते। इसी तरह वे अपनी जाति में किसी दूसरी जाति का मिश्रण नहीं होने देते। आर्य-जाति के स्वभाव से मिलती हुई इन बातों से मालूम होता है कि लोग आदि में आर्यकुल के ही रहे होंगे। आर्य क्षत्रियों का एक बहुत बड़ा चिह्न इनके पास अब तक मौजूद है। यह क्षत्रियों का अक्षय तूणीर शस्त्र है। यह शस्त्र अपने शत्रु को मार कर मारनेवाले के पास फिर वापस आ जाता है। इसको ये लोग 'बूमरांग' कहते हैं। इस शस्त्र के चलाने और बनाने की विधि बड़ी ही वैज्ञानिक है। अब तक हम सुनते थे कि आगे के क्षत्रियों के बाण शत्रु को मार कर लौट आते थे, तो इसे हम किसी अफीमची की गप समझते थे। लेकिन अब आस्ट्रेलिया के 'बूमरांग' ने इस बात को सत्य कर दिया है। इस शस्त्र के सिवा उनके पास आर्यों की एक खास धरोहर अब तक मौजूद है और वह है—पुनर्जन्म पर विश्वास। आस्ट्रेलिया के मूलनिवासी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुनर्जन्म मानते हैं। अगस्त, 1914 के थियोसॉफिस्ट] में जिनराजदास, एम.ए. ने लिखा है। उसमें इस विषय का सविस्तार वर्णन है।

उनकी भाषा द्रविण भाषा से मिलती है। उनका रूप-रग भी वही है। वे अनेक जातियों (वर्णों) में विभक्त हैं, [वे किसी का छुआ हुआ नहीं खाते। वे अपनी जाति को दूसरीं जातियों के साथ मिश्रित नहीं करना चाहते। उनके पास आर्य क्षत्रियों का अक्षय तूणीर शस्त्र अब तक मौजूद है और वे पुनर्जन्म पर विश्वास करते हैं। उनके यहां अति प्राचीन काल में ऋषि-मुनि आते-जाते थे और उनके राजाओं के नाम आर्यों के ही (तृणविन्दु आदि) थे। इन तमाम बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे आरम्भ में आर्य थे। कालांतर में किसी कारण पतित होकर मद्रास प्रान्त में गये और वहां से आस्ट्रेलिया में आवाद हो गए। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि आस्ट्रेलिया निवासियों के पूर्वज आर्य थे और भारतनिवासी थे, इसमें सन्देह नहीं!

आस्ट्रेलिया से आगे दक्षिण दिशा में कोई नहीं है। इसके आगे दक्षिणी ध्रुव है। जिस प्रकार उत्तर ध्रुव की ओर जाना आर्यों के यहां निषिद्ध था, उसी तरह दक्षिण ध्रुव में जाना अच्छा नहीं समझा जाता था। वाल्मीकि रामायण में भी लिखा है कि सीता की खोज करने के लिए सुग्रीव ने वानरों को रवाना करते समय जिस प्रकार उत्तर ध्रुव में जाना मना किया था, उसी तरह दक्षिण-ध्रुव (मेरू) में भी जाना मना किया था, सुग्रीव ने कहा—

अन्ते पृथिव्या दुर्द्धर्षस्थितः स्वर्गजितः स्थिताः।
ततः परं न वैः सेव्यः पैतृलोकः सुदारुण॥

(वा० रामायण, कि०-41-44)

अर्थात् पृथ्वी के अन्तिम भाग दक्षिण ध्रुव में पितर निवास करते हैं। यह स्थान महा भयंकर है। अतः वहां न जाना। ध्रुवों में जाने से मना करने का कारण यही है कि वहां वैदिक आर्य अपने धर्म-कर्म के साथ जीवन नहीं बिता सकते। इसी से वेद ने भी मना किया है। अतः दक्षिण ध्रुव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
के उत्तर प्रदेश आस्ट्रेलिया तक ही आर्यों की बस्ती थी। इसके आगे आर्य लोग नहीं जाते थे।

अमरीका

हमारा विश्वास है कि अमेरिका में शुद्ध आर्यों का निवास पूर्वातिपूर्व काल में ही हो गया था। लेकिन किसी-किसी का ऐसा भी खयाल है कि पुरानी दुनिया से अमेरिका जाने (एशिया से योरोप) का कोई रास्ता ही नहीं था। इसलिए अमेरिका निवासी एशिया आदि से नहीं गये, प्रत्युत् उन्होंने स्वयं अपना विकास प्राप्त करके मनुष्यता प्राप्त कर ली है। किन्तु हाल में

नेपाल में एक लाल रंग की जाति पाई जाती है जिसकी उत्पत्ति काकेशिश दल की ही एक जाति से हुई थी। उसी के प्रभाव से कुछ दिनों तक क्षत्रिय वर्ण लाल रंग का आदर्श रूप माना जाता था। किन्तु किसी कारणवश यह दल पतित हुआ और जाकर बंगाल के नागा पर्वत पर निवास करने लगा, जो आगे चलकर उस पर्वत के नाम पर नाग नाम से प्रसिद्ध हो गया। बाद में आर्यों से विद्वेष होने के कारण वह पाताल देश को चला गया, जो जाति नाम भी अपने साथ ले गया। कालान्तर में वह नाग शब्द का असली इतिहास भूल गया। उसे सिर्फ इतना याद रहा कि वह नागों का वंशज है। इसीलिए वह नागों की पूजा करने लगा। यह इतिहाससिद्ध बात भारत में प्रसिद्ध है कि पाताल (अमेरिका) में नाग लोग वास करते हैं, जिनका गोत्र वासुकी नाग के नाम पर है।

वैज्ञानिक अनुसंधान से जो भौगोलिक, भूगर्भिक और प्राणिशास्त्र सम्बन्धी परिणाम सामने आये हैं वे इसके बिलकुल ही विरुद्ध हैं। 'हार्म्सवर्थ हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड' नामक महान् ग्रंथ में इस खंड का विस्तृत वर्णन है। इसके पृष्ठ 5675 में लिखा है कि उत्तरी अटलांटिक समुद्र हमेशा से ही जलमय नहीं था। वहाँ की जमीन पुरानी दुनिया से मिली थी और अमेरिका में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य पुरानी दुनिया से दाखिल हुए हैं। इसके आगे पृष्ठ 5675 में लिखा है कि अमेरिका में मनुष्य की उत्पत्ति हो ही नहीं सकती, क्योंकि मनुष्य का विकास होने के लिये वनमानुषों की जरूरत होती है। किन्तु अमेरिका में इस प्राणी का न तो पूर्व में अस्तित्व था और न अब है। इसलिये अमेरिका में मनुष्य जाति का विकास नहीं हुआ।

इस वर्णन से इतना तो प्रमाणित हो ही गया कि अमेरिका में मनुष्य का विकास नहीं हुआ और वहाँ जो मनुष्य बसते हैं, वे पुरानी दुनिया से ही गये हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि वहां वे किस देश से गये ? हमारी समझ में इस प्रश्न का उत्तर उनके धार्मिक विश्वासों, उनकी सूरत-शक्ल के मिलानों, उनकी कारीगरी, उनके रीति-रिवाजों, उनके पूर्वकालिक गमनागमनों और उनके विषय में स्थिर की हुई विस्तृत जानकारियों से ही मिल सकता है कि वे किस देश के हैं। अतः हम यहाँ क्रम से इन सभी बातों का उत्तर ढूंढ़ने का प्रयत्न करेंगे।

(1) उनके धार्मिक विश्वासों के विषय में कहा जाता है कि वे नाग पूजक थे। उनके यहाँ पंखधारी सर्प पर अब भी विश्वास किया जाता है। इसीलिये भारतवासी उनको नाग कहते हैं। यह इतिहाससिद्ध बात भारत में प्रसिद्ध है कि अमेरिका (पाताल) में नाग लोग ही निवास करते हैं। यह बात केवल प्रसिद्ध ही नहीं है, प्रत्युत् यहां नाग लोग मौजूद हैं, जहाँ से ये वहाँ गये हैं। बंगाल का नागा पर्वत अब तक प्रसिद्ध है। बंगाल में नाग नामक आस्पद भी एक खानदान का अब तक विद्यमान है। प्रोफेसर नाग जो हिन्दू विश्व विद्यालय में अध्यापक हैं, उसी खानदान के हैं। 'मानवेर आदि जन्मभूमि' की भूमिका में लिखा है कि 'इन नाग महाशय का गोत्र भी वासुकी ही है। छोटा नागपुर इन्हीं के नाम से आबाद है। स्मरण रहे कि नेपाल में एक लाल रंग की जाति पाई जाती है, जिसकी उत्पत्ति काकेशिश दल की ही एक जाति से हुई थी। उसी के प्रभाव से कुछ दिनों तक क्षत्रिय वर्ण लाल रंग का ही आदर्श रूप माना जाता था। किन्तु किसी कारणवश यह दल पतित हुआ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और जाकर बंगाल के नागा पर्वत पर निवास करने लगा, जो आगे चलकर उस पर्वत के नाम पर नाग नाम से प्रसिद्ध हो गया। बाद में आर्यों से विद्वेष होने के कारण वह पाताल देश अमरीका को चला गया, जो जाति नाम भी अपने साथ ले गया। कालान्तर में यह दल नाग शब्द का असली इतिहास भूल गया। उसे सिर्फ इतना याद रहा कि वह नागों का वंशज है। इसीलिये वह नागों की पूजा करने लगा। इस दल के कुछ लोग प्राचीन काल में यहाँ आते-जाते थे। इस विषय की 'श्रीमद् भागवत्' में एक कथा है। वहाँ लिखा है—

नर्मदा भ्रातृभिर्वता पुरुकुत्साय चोरगैः।
तया रसातलं नीतो भुजगेन्द्र प्रयुक्तया ।। (श्रीमद्भागवत्)

अर्थात् वासुकी की मदद से नागों द्वारा दी हुई नर्मदा पुरुकुत्स को रसातल ले गई। इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि उनको यहीं पर नागत्व प्राप्त हुआ और वे अपने साथ ये विचार वहाँ भी ले गये। ★

हिन्दू जाति को शक्तिशाली बनाना है तो ...?

1981 की जनगणना के अनुसार मुसलमानों और ईसाईयों को छोड़कर हिन्दुओं की जनसंख्या 86.22 प्रतिशत है। देश और जाति को प्रभावशाली बनाने के लिए यह जनसंख्या कुछ कम नहीं कही जाएगी। निसंदेह यदि हिन्दू समाज एकजुट हो जाए तो भारत देश शक्तिशाली एवं अजेय हो जाएगा। हिन्दुओं को एकजुट शक्तिशाली होने के लिए अपने नामों के साथ जाति सूचक शब्द हटाने होंगे और हिन्दुओं में जन्म से जात-पांत न मानकर अन्तर्जातीय विवाह करने होंगे। आखिर हमारे पूर्वज मर्यादा परुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, युधिष्ठिर, स्वामी शंकराचार्य, सिद्धार्थ (महात्मा गौतम बुद्ध), महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरुगोविन्द सिंह, महावीर स्वामी और महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों ने अपने नाम के साथ कहाँ जाति सूचक शब्द लिखे हैं ? आज हिन्दुओं में कौन-सा ऐसा व्यक्ति और वर्ण है जो प्रत्येक प्रकार के काम नहीं करता ?

—डा० मदन पाल सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'परोपकारिणी' सभा के मंत्रि-पद का चुनाव

अजमेर। 9.11.86 को ऋषि मेले के शुभावसर पर 'ऋषि-उद्यान' में महर्षि द्वारा संस्थापित 'परोपकारिणी सभा' (अजमेर) के मंत्रि-पद का चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें कलकत्ता निवासी स्व० श्री लालमन आर्य के सुपुत्र श्री गजानन्द आर्य को सर्वसम्मति से सभा का मंत्री निर्वाचित किया गया। यह स्थान सभा के पूर्व मंत्री श्री श्रीकरण शारदा जी के निधन के बाद रिक्त हुआ था।

हम 'जनज्ञान' परिवार की ओर से श्री आर्य के प्रति शुभ कामना प्रकट करते हैं तथा प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें ऐसी शक्ति प्रदान करे कि वह ऋषि के लगाए इस बिरवे को पल्लवित-पुष्पित करने में सफलता प्राप्त करें।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज—बैंकाक

बैंकाक में आर्य समाज की स्थापना एक रोचक घटना के बाद हुई। घटना इस प्रकार है कि श्री गजरभुज को एक परिचित मित्र के घर पर 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति मिली। श्री पलकधारी सिंह और श्री रामदेव सिंह भी 'सत्यार्थ प्रकाश' की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुए। इस ग्रंथ के पठन का नियमित कार्यक्रम निश्चित कर लिया गया और इन स्वाध्याय गोष्ठियों में अध्ययन और विवेचन के लिये अनेक लोग इकट्ठे होने लगे। शीघ्र ही यह लोगों में फैल गया।

इसके फलस्वरूप बैंकाक में 5 मई, 1920 को वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। इस संस्था के कार्य और उद्देश्य आर्य समाज के दस सिद्धांतों पर निर्धारित किये गये। वैदिक धर्म के प्रचार के लिये साप्ताहिक सम्मेलन की व्यवस्था की गई। वेद विचारधारा के प्रचार के लिये मिलन-केन्द्र का यह कार्यक्रम कई परिवारों में होता रहता था। इस वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा के प्रथम अध्यक्ष श्री **रामदेवसिंह, उपप्रधान श्री इन्द्रदेव सिंह और मन्त्री श्री पलकधारी सिंह** थे। प्रचारक के रूप में पांच व्यक्तियों का चयन किया गया। संस्था के साथ जुड़े प्रचारिणी शब्द से ही स्पष्ट है कि सभा का मुख्य कार्य सत्य का प्रकाश फैलाना था।

धीरे-धीरे सदस्यों में यह इच्छा बलवती हुई कि नियमित एकत्रीकरण और सम्मेलन के लिये कोई स्थान होना चाहिये। सभा के सभी सदस्य वैदिक मन्दिर निर्माण के लिये भूमि खरीदने हेतु प्रबल इच्छुक हो गये। सभा के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यक प्रवन्ध करने की सारी जिम्मेदारियाँ श्री सरजू प्रसाद त्रिपाठी को सौंपी गई। बैंकाक के भारतीय प्रवासियों ने इस प्रकल्प में काफी रुचि ली और एक विशाल मन्दिर की योजना शीघ्र ही साकार हो गई। यह विशाल मन्दिर दो एकड़ भूमि में बना है और बैंकाक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के वैदिक धर्मावलम्बियों के लिये यह एक गौरव का प्रतीक है। **बैंकाक आर्य समाज का अपना एक पुस्तकालय भी है।**

1922 में सभा का नाम बदलकर आर्य समाज कर दिया गया और 1923 में इसका तीसरा वार्षिकोत्सव श्री रामबली सिंह के नेतृत्व में मनाया गया। इसी अवसर पर इसे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध किया गया। 1925 में मेहता जैमिनी और ठाकुर प्रवीण सिंह ने बैंकाक भ्रमण कर आर्य सन्देशों का प्रचार किया। डा. भगतराम सहगल, रमेश स्वामी और स्वामी सर्वदानन्द ने भी वेद प्रचार के लिये काफी कार्य किया। भारत के पंडित ध्रुवानन्द सरस्वती और पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय के प्रवचनों का भी बैंकाक में बहुत प्रभाव पड़ा। महात्मा आनन्दस्वामी ने भी बैंकाक में उपनिषदों पर प्रवचन किये थे।

बैंकाक आर्य समाज सेवा के क्षेत्र में भी हमेशा अग्रणीं रहा है। इसने बिहार के भूकम्प पीड़ितों के लिये चन्दा इकट्ठा किया था। आर्य समाज के अनेक सदस्यों ने भारत को आजाद कराने के लिये चलाये गये आंदोलन में भी भाग लिया था। समाज ने भारत के अनेक वैदिक स्कूलों को भी पर्याप्त आर्थिक सहयोग दिया।

भारत से दूर बैंकाक में स्वामी दयानन्द के सन्देशों को पूर्ण रूप से ग्रहण किया गया। यहां नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग और वार्षिकोत्सव मनाये जाते हैं।

आर्य समाज—सिंगापुर

आर्य समाज सिंगापुर की स्थापना 1927 में हुई थी। यह एक रजिस्टर्ड संस्था है। इस समय आर्य समाज सिंगापुर में 343 सदस्य हैं और इसके स्थानीय प्रचारक भारत के अमृतसर से आप्रवासी **पं. सत्यपाल पाठक** हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान के हस्तक्षेप के कारण यहाँ आर्य समाज की गतिविधियाँ रुक गई थीं।

आर्य समाज के नये परिसर की आधारशिला **18 मार्च, 1961 को सिंगापुर में भारत के उच्चायुक्त श्री योगेन्द्रकृष्ण पुरी द्वारा रखी**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गई थी। इस भवन को सिंगापुर आर्य समाज का एक दर्शनीय भवन और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र बनाने के लिये समाज के सदस्यों ने भरपूर आर्थिक सहयोग और अपनी व्यक्तिगत सेवायें भी दीं। इस तीन मंजिली इमारत का विधिवत् उद्घाटन **26 जून 1963** को बैंकाक के **श्री मूलामल सचदेव द्वारा सम्पन्न किया गया।** यहाँ सायंकाल डी. ए. वी. हिन्दी स्कूल की कक्षायें लगती हैं। यहाँ काफी संख्या में छात्र पढ़ने आते हैं और हिन्दी प्रशिक्षण का लाभ उठाते हैं। समाज का अपना एक वैदिक पुस्तकालय भी है।

सन् 1964 से निरन्तर यहाँ भारत से अनेक वैदिक विद्वान् जाकर वैदिक दर्शन पर प्रवचन देते रहे हैं और आर्य समाज उनके प्रवचनों की व्यवस्था करती रही है। इन विद्वानों में स्व. स्वामी ध्रुवानन्द, आमन्द स्वामी, पं. नन्दलाल वानप्रस्थी और पं. श्यामसुन्दर स्नातक के नाम उल्लेखनीय हैं।

विदेशों में हिन्दुओं की संख्या

देश का नाम	प्रवासी भारतीयों की संख्या 1974	प्रतिशत	प्रथम प्रवास का वर्ष	भारतीय भाषा समूह
फीजी	2,41,000	51%	1879	हि.त.गु.उ.
बर्मा	2,72,000	—	1890	त,हि,गु,ब,ते पं,सिं.
मलयेशिया	9,50,000	—	—	त,हि,गु,ते,सिं. पं,उ.
सिंगापुर	1,30,000	75%	1819	त,हि,उ,ते,सिं. पं,उ.
श्रीलंका	1,20,0000	—	1839	त,ते,गु,सिं.
मारीशस	5,51,000	67%	1834	हि,उ,त,ते,म.
रेनियन	2,00,000	—	1830	त,हि,ते,उ,गु.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दक्षिण अफ्रीका	6,20,000	25%	1860	त,हि,ते,उ,गु.
केन्या	40,000	—	1895	गु,हि,पं,उ.
तंजानिया	20,000	—	1895	गु,हि,पं,उ.
मोजाम्बिक	8,000	—	—	गु,उ.
जाम्बिया	11,500	—	—	गु,उ.
रोडेशिया	9,500	—	—	गु उ.
ट्रिनिडाड	4,80,000	40%	1845	हि'उ.
गयाना	3,90,000	52%	1844	हि,उ.
सूरीनाम	1,42,000	37%	1873	हि,उ.
जमैका	50,000	2%	1844	हि.
ग्रेनाडार	9,500	—	1844	हि.
वेस्टइण्डीज	10,000	—	1844	हि.
कनाडा	20,000	—	1904	प,हि,गु.

नोट—1. जहाँ हिन्दू आबादी एक प्रतिशत से कम है, वहाँ प्रतिशत का उल्लेख नहीं किया गया है।

2. प्रमुख भाषा भाषियों को प्रथम स्थान दिया गया है।

3. भाषा संकेत इस प्रकार है—हि-हिन्दी, त-तमिल, गु-गुजराती, प-पंजाबी, ब-बंगाली, उ-उर्दू, ते-तेलुगु, सि-सिंधी, म-मराठी।

अन्य देशों में भारतीयों की जनसंख्या इस प्रकार है—

थाईलैंड—18,000 (हि,प,सि); इंडोनेशिया—20,000 (प,सि,ब); हांगकांग—8,000 (प,सि,गु); फिलीपीन्स—2,500 (प,सि); आस्ट्रेलिया–3,100 (गु,उ); न्यूजीलैंड–6,000 (म,उ); वियतनाम—2,0000 (सि,प); अफगानिस्तान—20,000; कुवैत—20,000 (प,सि,दि,उ); मेडागास्कर—36,000 (म,प,गु,उ); अफ्रीका—32,000 (हि,प,गु,उ); वेनेजुएला—5,000 (हि,सि,उ);

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जर्मनी—4,000; इथोपिया—4,500 (गु,सि,उ); नाइजीरिया—3,500; सूडान—2 000 (गु,हि); गैरे—2,500 (गु,उ); अरब देश—5,000।

युगांडा और जंजीवार में भी कई हजार भारतीय थे, लेकिन राजनीतिक कारणों से उन पर सामूहिक हमले किये जाने के बाद वहाँ अब इने-गिने परिवार ही रह गये हैं।

सऊदी अरब में 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने पर जेल

सरकार असहाय

प्रस्तुति—श्री राजेन्द्रकुमार गोयल, एडवोकेट

नई दिल्ली। सऊदी अरब में 'सत्यार्थ प्रकाश' अपने पास रखना और उसे पढ़ना भारी जुर्म है और इस जुर्म की सजा है जेल। इस सच्चाई की जीती-जागती मिशाल हैं श्री राजकुमार भारद्वाज, जो कुछ दिनों पहले नौकरी के सिलसिले में सऊदी अरब गए थे। वह आजकल वहां जेल में बन्द हैं। उनका कसूर सिर्फ इतना था कि वह अपने साथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति ले गए थे—अपने खाली समय में पढ़ने के लिए। वहां उनके ही एक मुस्लिम साथी ने इसकी शिकायत ऊपर के अधिकारियों से की। फलस्वरूप श्री भारद्वाज जेल में बन्द कर दिए गए, क्योंकि सऊदी अरब तथा अन्य अरब (मुस्लिम) देशों में इस्लाम के अतिरिक्त, किसी भी दूसरे धर्म का प्रचार करना तो दूर रहा, उस धर्म की पुस्तक रखना और पढ़ना भी कानूनन अपराध है।

यह खेद की बात है कि हमारा देश एक धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है और हम सर्व धर्म समभाव की भावना में अटूट विश्वास रखते हैं। हमारे यहाँ हर धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग और जाति के लोगों को अपने-अपने ढंग से रहने की पूर्ण स्वतंत्रता है। राजनैतिक आदर्शवाद का इससे अच्छा उदाहरण शायद दुनिया के किसी भी अन्य देश में देखने को नहीं मिलेगा। हमारी सरकार मुस्लिम राष्ट्रों को मित्र राष्ट्र समझती है और एक मित्र राष्ट्र का यह व्यवहार है एक भारतीय नागरिक के प्रति।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी सरकार अफ्रीकी देशों और फिलीस्तीनियों के मसले पर मगरमच्छ के आँसू तो बहा सकती है—शोर मचा सकती है, लेकिन इन विषयों पर नहीं, क्योंकि वह हिन्दू तथा भारतीय हितों की विरोधी है। क्या सरकार बदले में मुस्लिम देशों से आने वाले धन पर रोक नहीं लगा सकती ? हिन्दू जाग रहा है, परन्तु सरकार सो रही है। आज आवश्यकता है ऐसी सरकार की जो हिन्दू अर्थात् भारतीय संस्कृति, दर्शन तथा हितों का संरक्षण-संवर्धन कर सके, तभी देश की समस्याओं का समाधान संभव हो सकेगा तथा देश जाति-सम्प्रदाय और क्षेत्रवादी भावनाओं से ऊपर उठ सकेगा और संसार में एक शक्ति के रूप में आगे आएगा। (यह समाचार 5 अक्तूबर के 'सार्वदेशिक से लिया)

आवश्यकता है एक कार्यकर्ता की

भारत के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र में एक ओर ईसाइयों का कुचक्र चल रहा है तो दूसरी ओर मार्क्सवादी विचारधारा की पृथकतावादी ताकतें अपना सिर उठा रही हैं, जिससे हमारी संस्कृति खतरे में पड़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है इस क्षेत्र में वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार की। यद्यपि इस क्षेत्र में आर्यसमाज (सिलीगुड़ी) सतत् प्रयत्नशील है और वहाँ कुछ कर्मठ कार्यकर्ता वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं, फिर भी वहाँ के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय-स्तर पर निष्ठा व लगन से कार्य कर सके। योग्यतानुसार वेतन की व्यवस्था है। मेधावी, स्वस्थ, धार्मिक एवं क्रियाशील व्यक्ति सीधे सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

7/2, रूपनगर

दिल्ली-110007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेखक बन्धुओं से निवेदन

मान्य बन्धु,

आप जनज्ञान (मासिक) से तो परिचित हैं ही। विगत अठारह वर्षों से 'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति तथा हिंदू जागरण के कार्य में संलग्न है। समय-समय पर आवश्यक सहयोग भी हमें प्राप्त होता रहा है।

आप इस तथ्य से भी परिचित हैं कि समय-समय पर 'जनज्ञान' के अनेक विशेषांक प्रकाशित होते रहे हैं, जिन्होंने समाज को विशेष सन्देश दिया है। 'जनज्ञान' के अंक आज की धरोहर बन गए हैं।

इसी श्रृंखला में 'जनज्ञान' का मार्च-अप्रैल अंक 'हिंदू जागृति विशेषांक' के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। इस अंक में वैदिक जीवन दर्शन की विश्व-व्यापकता और श्रेष्ठता हिंदू जागृति की रोमांचक गाथा तथा धर्म के लिए बलिदान होने वाले वीर बालकों, देवियों की वीर गाथाएं तो होंगी ही, इस विषय के मर्मज्ञ विद्वानों की लौह लेखनी से प्रसूत लेख एवं कविताएं आदि भी होंगी।

अतः आपसे अनुरोध है कि 'हिंदू जागृति विशेषांक' के लिए अपनी सशक्त रचनाएं भेजकर सहयोग प्रदान करें।

सम्पादन एवं प्रकाशन की दृष्टि से अपेक्षित है कि सभी लेख आदि 31 फरवरी, 1897 तक हमें प्राप्त हो जाएं। सहयोग के लिए आभार।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे जाँबाज़ लड़ाके

—एस. पी. चतुर्वेदी

15 अगस्त सन् 47 को सैकड़ों वर्षों के संघर्षों के बाद भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्ति मिली। स्वतन्त्रता देते समय अंग्रेजों ने भारत को दो भागों में बाँट दिया। एक भाग बना पाकिस्तान, दूसरा हिन्दुस्तान। इसके साथ-साथ भारत के अनेक छोटे-वड़े राज्यों को भी अंग्रेजों ने इस बात की स्वतन्त्रा दे दी कि वे अपनी इच्छानुसार जिस ओर चाहें मिल सकते हैं और यदि किसी के साथ मिलना न चाहें तो स्वतन्त्र रह सकते हैं।

कशमीर इसी प्रकार के राज्यों में से एक था। भारत या पाकिस्तान में से किसी के साथ मिला जाय अथवा स्वतन्त्र ही रहा जाय, अभी इस बात का निर्णय कशमीर कर ही रहा था कि सन् 1947 में पाकिस्तान ने उस पर सशस्त्र सेनाओं द्वारा आक्रमण कर दिया।

पाकिस्तानी सैनिकों ने कशमीर में घुसकर लूटमार शुरू कर दी। बच्चा-बूढ़ा या जवान उन्होंने कुछ न देखा। जो सामने पड़ा उसे मार डाला, स्त्रियों की दुर्दशा की और जो चीज हाथ पड़ी छीन ली। उनके जानवर छीन कर ले गये और खड़ी फसलों को आग लगा दी। कशमीर की सुन्दर घाटी इस बर्बर आक्रमण से थर्रा उठी। भोले-भाले निरीह नागरिकों पर पाकिस्तानी सेना के अत्याचारों की कहानियाँ पाशविकता और क्रूरता को भी लजाने लगीं।

इस अत्याचार को रोकने का दूसरा उपाय न देख कशमीर ने भारत से सहायता माँगी। भारत अपने ही एक पड़ोसी राज्य की सहायता कैसे न करता? तुरन्त भारतीय सेनाओं ने जाकर पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को आगे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
बढ़ने से रोका। मामले को सुरक्षा परिषद् में ले जाया गया, जहां से अन्य बड़े राष्ट्रों ने युद्ध-विराम करवा दिया। उस समय तक पाकिस्तान करीब आधे कशमीर को बलपूर्वक अपने अधिकार में कर चुका था। बात आई-गई हो गई।

लेकिन पाकिस्तान को इस स्वर्ग के समान सुन्दर कशमीर की घाटी के आधे भाग पर संतोष न हुआ। वहाँ के अधिकारी दिन-रात समूचे कशमीर को पाकिस्तान में मिलाने का स्वप्न देखने लगे। युद्ध-विराम रेखा कहने भर को युद्ध-विराम रेखा थी। असलियत में भारत-पाक सीमा पर कभी युद्ध-विराम हुआ ही नहीं। पिछले अठारह वर्षों में शायद ही कोई दिन ऐसा गया हो जिस दिन पाकिस्तान की ओर से गोलाबारी अथवा लूटमार की कोई घटना न हुई हो।

भारत स्वयं शान्तिप्रिय नीति का अनुयायी होने के साथ-साथ दुनिया को शान्ति का सन्देश देता आया है। हमारी सेनाओं ने भी दूर देशों में जाकर शान्ति की स्थापना की है। जिस देश में बुद्ध, गाँधी और जवाहर जैसे शान्ति-दूत पैदा हुये हैं, वहाँ की नीति शान्तिप्रिय क्यों न हो? लेकिन भारत की इस शान्तिप्रियता को उसके कुछ पड़ोसियों ने राष्ट्र की कमजोरी समझा और लगातार उसे इधर-उधर से दबाते रहे। इसी गलतफहमी में सन् 1962 में चीन ने नेफा पर हमला किया और इसी वर्ष अप्रैल के महीने में पाकिस्तान ने कच्छ में सशस्त्र हमला किया।

युद्ध एक बुरी चीज है। इसमें कूदने पर किसी भी पक्ष का हित नहीं, यह सभी जानते हैं और इसी बात को ध्यान में रखकर भारत सदा इस अप्रिय घटना से अपने आपको बचाता रहा।

कच्छ के समझौते पर दस्तखत करते समय पाकिस्तान के अधिकारियों ने प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री से कहा था कि कशमीर के बारे में उनके पास अपनी योजनाएं हैं और वे उस पर कदम-कदम बढ़ रहे हैं। 5 अगस्त को जब पाकिस्तान ने हजारों की संख्या में घुसपैठिये कश्मीर की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घाटी में भेजे तो उनकी वह योजना, जिसका उन्होंने प्रधानमन्त्री से जिक्र किया था, समझ में आई।

उन घुसपैठियों को कशमीर की घाटी में—वहां के मुख्य अधिकारियों की हत्या करने, पुल और सड़कें उखाड़ने तथा कार्यालयों और सैनिक प्रतिष्ठानों को नष्ट करने के आदेश मिले थे। पाकिस्तान ने सोचा था कि इन घुसपैठियों को कशमीर के मुसलमानों का पूरा सहयोग मिलेगा और राज्य में आंतरिक विद्रोह उठ खड़ा होगा। ऐसी हालत में थोड़ी-सी सेना द्वारा ही कशमीर पाकिस्तान में मिला लिया जायेगा।

पर हुआ इसके बिलकुल विपरीत। जनता ने भारत की धर्मनिर्पेक्षिता का पाकिस्तान को अच्छा सबूत दिया। सारा राष्ट्र धार्मिक मतभेदों को भुलाकर एक हो गया। इधर भारत की सुरक्षा सेना ने तुरन्त कार्यवाही करके घुसपैठियों का सफाया कर दिया।

पाकिस्तान ने अपनी इस हार से खीजकर एक सितम्बर को अपनी नियमित सेना द्वारा छम्ब क्षेत्र पर आक्रमण किया। यह पाकिस्तान की योजना का और भी भयंकर भाग था। पाकिस्तानी सेना का उद्देश्य छम्ब से घुसकर अखनूर होते हुए जम्मू तक पहुँचना था, जिससे समूचा जम्मू-कशमीर शेष भारत से अलग कट जाय।

भारत ने ताकत का जवाब ताकत से और गोली का जवाब गोलियों से देकर उसके इस इरादे पर पानी फेर दिया। पाकिस्तानी अधिकारी समझते थे कि सैन्य शक्ति का मुकाबला भारत के नेता न कर सकेंगे और वह फैसले के लिए सुरक्षा परिषद या संयुक्त राष्ट्र की ओर दौड़ेंगे। तब तक इधर क्या से क्या हो जायगा।

पर हमारे जनरलों की युद्ध-नीति और सेनाओं की बहादुरी ने पाकिस्तान का कशमीर जीतने का स्वप्न लाहौर और सियालकोट तक का सारा इलाका खोने के स्वप्न में बदलकर रख दिया।

जनरल जयन्तनाथ चौधरी के कुशल नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी फौजों को युद्ध के हर क्षेत्र में पछाड़ा। यद्यपि पाकिस्तान की सेना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय सेना से काफी शक्तिशाली और आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से लैस थी। पाकिस्तान को अपनी जिस टैंक-शक्ति पर गर्व था, जनरल चौधरी के कौशलपूर्ण युद्ध-संचालन में थोड़े ही समय में नष्ट कर दी गई। सियालकोट में लड़े गये टैंक-युद्ध को तो द्वितीय विश्व-युद्ध में अफ्रीका में अलअमीन नामक स्थान पर फील्ड मार्शल रोमेल द्वारा लड़े गये टैंक-युद्ध के समान ही भंयकर और सफल माना जाता है।

गत भारत-पाक युद्ध में सिपाही से लेकर जनरल तक एक होकर मोर्चों पर काम कर रहे थे। इस सैनिक एकता का श्रेय केवल जनरल चौधरी को है, जिन्होने सेना को मनोबल दिया और जनता में आत्म-विश्वास की मात्रा में वृद्धि की।

इसके बाद युद्ध का भार संभालने वाले पश्चिमी कमान के जनरल आफिसर कमाण्डर-इन-चीफ लेफ्टिनेन्ट जनरल हरबख्श सिंह का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने कार्गिल से लेकर राजस्थान तक की लम्बी सीमा की रक्षा की। युद्ध का बोझ सबसे अधिक उन्हीं पर पड़ा, जिसे उन्होंने बड़ी कुशलता और बहादुरी के साथ संभाला। विजय का अधिकांश श्रेय उन्हीं के कुशल निर्देशन और सैनिक संचालन का है। लेफ्टिनेन्ट जनरल हरबख्श सिंह सन् अड़तालीस में भी टिथवाल की लड़ाई में पाकिस्तानी सेना के दांत खट्टे कर चुके हैं। इसके लिये उनको वीरचक्र मिल चुका है। उनकी वीरता, शक्ति और साहस को पाकिस्तान अच्छी तरह जानता है।

उनके बाद तीन और लेफ्टिनेन्ट जनरलों के नाम उल्लेखनीय हैं, जो इस प्रकार हैं—ले. ज. जे. एस. ढिल्लो, ले. ज. के. एस. कटोच और ले. ज. पी. ओ. दून—जिनकी वीरता और कुशल युद्ध-संचालन से भारतीय सेनायें मैदान पर मैदान मारती चली गईं।

जनरल राजिन्द्र सिंह भी जो आर्म्डकोर के कमाण्डर हैं, जीत के श्रेय और बधाई के उतने ही अधिकारी हैं जितने कि अन्य जनरल। पाकिस्तान की टैंक डिवीजन को नष्ट करने का दायित्व उन्हीं पर था, जिसे उन्होंने सफलता से निभाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैवाहिक विज्ञापन

उम्र 23½/कद 5 फुट 2 इंच/एम. ए. पास/सिलाई-कढ़ाई-बुनाई एवं टाइपिंग प्रशिक्षित / गौरवर्ण, स्वस्थ-सुन्दर-सुशील सक्सेना (कायस्थ) कन्या के लिए एक स्वस्थ-सुन्दर-सुशिक्षित एवं सुयोग्य गुरुकुल स्नातक वर तथा उम्र 27/कद 5 फुट 6 इंच/स्वस्थ-सुन्दर-गोरा/केन्द्रीय सेवा में कार्यरत—1200 रु. वेतन पाने वाले एक विधुर युवक के लिए स्वस्थ-सुन्दर-सुशील एवं सुशिक्षित निरामिषभोजी वधू चाहिए। गुरुकुल स्नातिका एवं आर्यसमाजी को वरीयता।

पत्र व्यवहार करें—
मार्फत/व्यवस्थापक, विज्ञापन-विभाग
जनज्ञान (मासिक)

उम्र 23 वर्ष/कद 165 सें. मी./विद्यालय शिक्षक/वेतन 1000 रु./कश्यप गोत्र/रंग सांवला/हृष्ट-पुष्ट, तन्दुरुस्त/परिवार में अकेला। एक आर्यसमाजी ठाकुर युवक के लिए सामाजिक भावनाओं से ओत-प्रोत, निपुण-सुन्दर-सुशील एवं सुशिक्षित आर्य कन्या चाहिए। निम्न वर्ग एवं विधवा को प्राथमिकता। सीधे सम्पर्क करें।

रामकुमार ठाकुर (शिक्षक)
देवकोटा पथ, बिजनवारी
दार्जिलिंग-73420

केवल इक्कीस रुपये दक्षिणा देकर जनज्ञान (मासिक) में अपना वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करायें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दानदाता सूची

5 रुपए दानदाता

सर्वश्री कमलेश कुमार—श्रीगंगानगर, डी. के. मित्तल—श्रीगंगानगर, रिछपाल—श्रीगंगानगर, सरला देवी—मेरठ, पशुपतिनाथ आर्य—देवरिया, राधेश्याम अयोध्या प्रसाद—गोंडा, वासुदेव राम—बीदर, एन. एस. परोजी—बड़ौदा, ज्वालाप्रसाद शर्मा—रामगढ़, श्रीकृष्ण भटनागर—मुरादाबाद, पुरुषोत्तम दास नारायण दास—डाल्टनगंज, डालचन्द्र आर्य—मुरादाबाद ।

6 रुपए दानदाता

श्रीब्रजलाल—श्रीगंगानगर ।

10 रुपए दानदाता

सर्वश्री कालीप्रसाद श्रीवास्तव—रायबरेली, अशोककुमार—नई दिल्ली, मथुरा पांडेय—पलामू, रामपाल सिंह आर्य—नालन्दा, बैकुंठहरि—मुरादाबाद, मदनगोपाल—मिर्जापुर, लुभावनप्रसाद वर्मा—रामपुर, पुरुषोत्तम राम—गोरखपुर, ब्रजभूषण—आगरा, मुन्नूप्रसाद शुक्ल—कुर्ला, (बम्बई), भोलानाथ—इलाहाबाद, मैं. कीमतराय विजयकुमार—मलेर कोटला ।

11 रुपए दानदाता

सर्वश्री रामदास खोजी—इलाहाबाद, भैरूसिंह—सिहोर, रघुनाथ आर्य—डोडा, जीवनदास—अलीगढ़, के. आर. मित्तल—श्रीगंगानगर, एच. आर. शर्मा—श्री गंगानगर, एस. के. शर्मा—श्रीगंगानगर, वंशलाल आर्य—इटावा, परमेश्वर शर्मा—भोजपुर, प्रमोदचन्द्र सेठ—शाहजहांपुर, डा. एस. एम. भोज—सतना, सुधीरकुमार भूसल—देहरादून, सदानन्द जी—रायसेन, ईश्वरदयाल माथुर—जयपुर ।

15 रुपए दानदाता

सर्वश्री सी. पी. विश्वकर्मा—देवरिया, जयप्रकाश शास्त्री—बुलन्दशहर,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजबीर सिंह – अम्बाला कैंट, लोकेश कुमार — शाहजहांपुर, जगदीश प्रसाद यादव—अहमदाबाद ।

20 रुपए दानदाता

सर्वश्री वासुदेव शर्मा, ई. श्यामबाबू—हल्द्वानी, प्रधान डाकपाल —औरंगाबाद ।

21 रुपए दानदाता

सर्वश्री पूनम मेडिकल स्टोर्स—बाराबंकी, एल. टी. उपाध्याय—बम्बई, एच. एल. वाहेती—ई. चम्पारन, किशन—पाली, सुरेश तिवारी सुन्दरगढ़, घनश्याम सयाजी—नान्देड़, शम्भूनाथ गुलाबचन्द—आजमगढ़, जगदीश वैद्य —बदायूं, सत्यपाल सरन—लखनऊ, सुशीला देवी – बम्बई, कन्हैया सिंह —रानीगंज, चंदी प्रसाद रामदेवी—बम्बई, जीश्यो राजसिंह—रायसेन, डा. करन सिंह—मिल्क खाता नगरिया, हरजसराय पाराशर—कुल्लू, आर. सी. पी.--देवरिया, राजेन्द्रकुमार—मुरादाबाद, अशोक कुमार-- अहमदनगर ।

22 रुपए दानदाता

श्री आर. एस. गुप्ता—बम्बई ।

25 रुपए दानदाता

सर्वश्री प्रभाकर नारायण पाटिल—जलगांव, गायत्री आर्टोसेन्टर—बलसाड़, आर. सी. ब्रदर्स—मंदसौर, के. वी. आर.—गोरखपुर, आर. एल. मित्तल—बुलन्दशहर, कान्त दूबे—रोहतास, संतोष—करनाल ।

30 रुपए दानदाता

सर्वश्री वेस्टग्लोरो—मेघालय, नरेशवानी—गोहाटी ।

31 रुपए दानदाता

श्री महेन्द्र गुप्ता—दिल्ली ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

40 रुपए दानदाता

श्री मोहनलाल—कठुआ।

43 रुपए दानदाता

सर्वश्री मन्त्री अध्यक्ष आ. स. महाराष्ट्र।

50 रुपए दानदाता

सर्वश्री हरिश्चन्द्र—पलामू, रामरति—दिल्ली, खेड़ा भाई लक्ष्मी भाई आर्य—महेसाना।

51 रुपए दानदाता

सर्वश्री लाला श्रीराम खत्री—सुल्तानपुर, पी. सी. सेठिया—श्रीगंगानगर, शिवनारायण—पलामू, बलराम स्वरूप—रामगढ़, निवाजी ब्रह्म क्षत्रिय।

55 रुपए दानदाता

श्री टेलर शंकर भाई—महेसाना।

60 रुपए दानदाता

श्री हजारीलाल—फाजिल्का।

81 रुपए दानदाता

श्री सीताराम—मुजफ्फरनगर।

100 रुपए दानदाता

श्री बी. पी. सोनी—बिलीमोरा, प्रतापसिंह—नागौर।

101 रुपए दानदाता

श्री राम प्रकाश सिंह—गोटेगांव।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य प्रतिनिधि सभा-हिमाचल प्रदेश

गत दिनों चम्बा में स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में हिमाचल-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव संपन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि चुने गए।

सर्वश्री कृष्णलाल 'आर्य' (प्रधान), भगवान देव 'चैतन्य' (महामंत्री), पं० विद्याधर (वरिष्ठ उपप्रधान), सुश्री शशी मित्तल व श्रीमती चन्दरानी शर्मा (उपप्रधान), श्रीरामकृष्ण गौतम व सोहनसिंह जमवाल (उपमन्त्री), अरुणेश सूद (कोषाध्यक्ष), स्वामी ब्रह्मानन्द (वेद-प्रचार अधिष्ठाता), गोविन्दराम आर्य (प्रचार मंत्री), कृष्णचन्द्र 'आर्य' (प्रांतीय संचालक-आर्य-वीर दल), रामफूल सिंह 'आर्य'—सहसंचालक आर्यवीर दय)।

अन्तरंग सदस्य-स्वामी सुमेधानंद,(चम्बा), सेठ धर्मदास(बिलासपुर), श्री हरगिन्द सिंह (बिलासपुर), श्री अशोककुमार (कूल्लू), श्री ज्ञानप्रकाश आर्य (शिमला), श्री चमनलाल शर्मा (शिमला), श्री रोशनलाल बहल (शिमला), श्री रामानन्द (शिमला), श्री बलदेवराज कपूर (अम्ब), श्री वेदप्रकाश 'आर्य'(लठयानी), श्री सोहनलाल आर्य(देहरा), श्री बालाराम आर्य (राजगढ़), श्री भगवतीप्रसाद पन्त (चम्बा), श्री देवेन्द्र रावल (सुन्दर-नगर), स्वामी सुबोधानन्द व डॉ. बालकृष्ण चम्बा (सन्तोष गढ़)।

प्रतिष्ठित सदस्य :—डॉ. जीवनलाल जी(मण्डी), श्री केवलराम भ्राता (मण्डी), श्री राजपाल (कांगड़ा), श्री ताराचन्द पुरी (ऊना), श्री केदारनाथ शर्मा (सुन्दरनगर)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्म-ग्रन्थ परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य

प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : मूल्य 500 रुपए

उपहार संस्करण : मूल्य 1,100 रुपए

प्रत्येक वेद-सेट के साथ 251 रुपए का साहित्य उपहार दिया जाएगा—

1. वैदिक सम्पत्ति 101 रुपए
2. वैदिक गीता 50 रुपए (हिन्दी भाष्य सहित)
3. वेदामृत 50 रुपये
4. वेद ज्योतिष 30 रुपए
5. अन्य साहित्य 20 रुपए

कुल 251 रुपए

आदेश का सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।
रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रुबाइयां

लाश के दाम से ज्यादा तो कफन होता है,
वो ही रह जाता है, जब जिस्म हवन होता है,
यह कीमत है जहां में आज जिन्दगी की,
इस पर रोना क्या, यह तो बस चलन होता है।

× × ×

जीवन एक दर्शन तो मृत्यु एक दर्पण है,
जीवन यदि रहस्य तो मृत्यु उद्‌घाटन है,
जीवन यदि भूल तो मृत्यु है प्रायश्चित्त,
जीवन यदि मृत्यु तो मृत्यु पुनर्जीवन है।

× × ×

व्यथा आ करके दृग-सागर धो गई,
कथा तो है परवश आशा भी रो गई,
सुनते थे—आत्मा अमर है, बस तन है सो जाता,
तन तो रहा जीवित, आत्मा सो गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोरखालैंड आन्दोलन के पीछे चीनी हाथ

—सदाजीवतलाल चन्दूलाल

पश्चिम बंगाल की सी. पी. एम. दल की राज्य समिति ने एक पैम्पलेट जारी किया, है जिसका शीर्षक है—'जी. एन. एल. एफ. की पृथकतावादी शक्तियों को प्रभावहीन करो।' इसमें कहा गया है कि, '1940 में जब समाजवादी चीन का जन्म हुए सिर्फ दो साल ही हुए थे, नेपाल ने यह भांप लिया था कि चीन आगे चलकर अपने पड़ोसियों पर सीमा विवाद के नाम पर हमला कर सकता है। इसी कारण उसने भारत के साथ एक संधि की थी, ताकि भारत की मदद से वह अपनी रक्षा चीन तथा अन्य हमलावर मुल्कों से कर सके।'

पैम्पलेट में बिना किसी देश का नाम लिये आगे कहा गया है कि 'कई साम्राज्यवादी ताकतें भारत में सक्रिय अपने एजेन्टों की मार्फत भारत की एकता व अखंडता को नष्ट करने के माम में लगी हैं। भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा पर ऐसी हरकतें खास तौर पर सक्रिय हैं। सी. पी. एम. से बेहतर कौन इस बात को जानता है कि चीन, नागालैंड की 'नेशनल सोशलिस्ट कांउसिल' और 'मिजो नेशनल फ्रंट' के माध्यम से इन दोनों राज्यों—नागालैंड और मिजोरम—में तोड़फोड़ की कार्यवाहियों में लिप्त रहा है। चीन के खुराफाती इरादों का पता इस बात से भी लग जाता है कि गंगा के जल के बंटवारे के बारे में भारत और बंगलादेश के बीच जो समझौता होने जा रहा है, उसमें नेपाल को भी घसीट कर वह इस सीधेसादे द्विपक्षीय मुद्दे को 'अन्तरराष्ट्रीय विवाद' का रूप देना चाहता है और गोरखालैंड आन्दोलन के प्रवर्तक श्री सुभाष घीशिंग ने गोरखालैंड के बारे में राष्ट्रसंघ को जो पत्र पिछले दिनों लिखे थे, वे भी चीन के उकसाने पर ही लिखे गये थे, ऐसा मानने के कारण भी मौजूद हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट (जी. एन. एल. एफ.) के मुख्य नेता श्री सुभाष घीसिंग ने, इस पैम्पलेट के अनुसार, अपने आन्दोलन के समर्थन के लिए ब्रिटेन, अमरीका, चीन, पाकिस्तान और नेपाल की सरकारों को भी लिखा था। इसके बावजूद, वे यह दावा भी करते हैं कि उनका आन्दोलन भारत-विरोधी आंदोलन नहीं है और उनके द्वारा प्रस्तावित गोरखालैंड भारत का ही एक अंग होगा। उनकी दो मुंही बातों में हमारे देश के अनेक नेता फंस चुके हैं। कांग्रेस के उपाध्यक्ष श्री अर्जुन सिंह ऐसे ही एक नेता हैं। उन्होंने पिछले दिनों कलकत्ता में कहा कि 'गोरखालैंड आन्दोलन अराष्ट्रीय आंदोलन नहीं कहा जा सकता।' इस पर भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री आरिफ मुहम्मद खान ने अर्जुन सिंह को संबोधित करते हुए एक बयान दिया है कि 'अगर गोरखालैंड राष्ट्रीय आन्दोलन है, तो आप कांग्रेस छोड़कर उसमें शरीक क्यों नहीं हो जाते? श्री खान पंजाब, असम और मिजोरम के समझौते को पृथकतावादी और सांप्रदायिक तत्वों की पुष्टि करने वाले समझौते मानते हैं।

★

दो संस्कृत-विद्वान् एक गृहस्थ के यहाँ अतिथि बने। गृहस्थ ने उनका बड़ा सत्कार किया।

जब एक विद्वान् स्नान-घर में गये, तब गृहस्थ ने दूसरे विद्वान् से स्नान करने को गये हुए विद्वान् के सम्बन्ध में पूछा। उसने उत्तर दिया कि 'वह मूर्ख बैल है।' जब वह स्नान करके आया तो दूसरा स्नान करने गया। गृहस्थ ने स्नान करके आये हुए विद्वान् से दूसरे विद्वान् के सम्बंध में पूछा तो वह बोला 'वह क्या जानता है—पूरा गधा है।'

जब भोजन का समय हुआ तो गृहस्थ ने एक गट्ठर घास और एक डलिया भूसा उनके सामने ला रखा और बोला—"लीजिए महाराज! बैल के लिए भूषा और गधे के लिए घास उपस्थित है।' यह देख-सुनकर दोनों ही विद्वान् बड़े लज्जित हुए।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बैंकाक और सिंगापुर में अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रचार-यात्रा का आयोजन

कार्यक्रम

22 जनवरी बृहस्पतिवार	इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट के लिये प्रस्थान।
23 जनवरी शुक्रवार	बैंकाक एयरपोर्ट से पटाया के लिये प्रस्थान एवं ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण तथा सायंकाल भोजन।
24 जनवरी शनिवार	पटाया से सायंकाल बैंकाक के लिये प्रस्थान।
25 जनवरी रविवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ एवं 8 से 10 बजे तक वेद प्रवचन। 11 बजे से नाश्ता और 2 बजे से 5 बजे तक विशेष कार्यक्रम और सायंकाल विशेष समारोह।
26 जनवरी सोमवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 7 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 10 से 11 बजे तक नाश्ता तथा ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण। सायंकाल 7 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन।
27 जनवरी मंगलवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ एवं 7 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 10 से 1 बजे तक नाश्ता तथा व्यक्तिगत भ्रमण। सायंकाल 7 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन।
28 जनवरी बुधवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 7 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 10 से 11 बजे तक नाश्ता तथा व्यक्तिगत भ्रमण और सायंकाल का भोजन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

29 जनवरी वृहस्पतिवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ एवं बैंकाक से सिंगापुर के लिये विशेष विदाई समारोह एवं 7 से 8 बजे तक वेद-प्रवचन एवं परिचय ।
30 जनवरी शुक्रवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 8 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 11 बजे से नाश्ता एवं सिंगापुर के ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण। सायंकाल 7 से 9 बजे तक वेद-प्रवचन एवं भोजन ।
31 जनवरी शनिवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 8 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 11 बजे से नाश्ता एवं सिंगापुर का व्यक्तिगत भ्रमण सायंकाल भोजन ।
1 फरवरी रविवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 8 से 10 बजे तक वेद-प्रवचन। 11 बजे से नाश्ता और 12 बजे से 4 बजे तक विशेष कार्यक्रम ।
2 फरवरी सोमवार	प्रातःकाल 6 से 7 बजे तक यज्ञ और 8 बजे से 10 बजे तक नाश्ता एवं विदाई समारोह। सायंकाल निवास स्थान से एयरपोर्ट के लिये प्रस्थान ।

नोट : 25 जनवरी रविवार मध्यकाल बैंकाक और 1 फरवरी रविवार मध्यकाल सिंगापुर में पंडिता राकेशरानी का भव्य स्वागत एवं विदाई समारोह ।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रचार-यात्रा के संबंध में विशेष सूचनाएँ

1. आप अपना पासपोर्ट दयानन्द संस्थान, करोल बाग, नई दिल्ली के कार्यालय में जमा कराकर इस यात्रा के सम्बन्ध में अपना नाम पंजीकृत कराने की कृपा करेंगे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

2. आप अपना पासपोर्ट जमा कराते समय पासपोर्ट साइज की पांच फोटो एवं बीजा तथा अन्य फार्मों पर हस्ताक्षर करना न भूलें।

3. आप अपना पासपोर्ट जमा कराते समय अग्रिम राशि 3000/- रुपये ड्राफ्ट या नकद जमा करा दें। उक्त रकम जमा होने पर ही इस यात्रा में भाग ले सकेंगे।

4. आप अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रचार यात्रा में भाग लेने के लिए इच्छुक हों तो दिसम्बर प्रथम सप्ताह तक अपना पासपोर्ट तथा अग्रिम राशि 3000/- रुपये जमा कराना अनिवार्य है। शेष राशि 3700/- 10 जनवरी को देनी होगी।

5. यदि आप किसी कारण से इस आयोजन में भाग न ले सकें तो यात्रा के 10 दिन पहले अग्रिम सूचना देने पर 5 प्रतिशत रकम काटकर शेष राशि लौटा दी जायेगी।

6. 3 वर्ष से 12 वर्ष के बच्चे का नाम पासपोर्ट में अंकित होने पर आधा किराया 3000/- रुपये लिये जायेंगे।

7. इस यात्रा में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा किसी वर्ग या जाति के हों, हमारे निर्धारित नियमों एवं कार्यक्रमों को दृष्टि में रख-कर ही यात्रा कर सकेंगे।

8. इस यात्रा में महिलाओं के लिए विशेष प्रबन्ध किया गया है।

9. इस यात्रा में भाग लेने के लिए बम्बई, कलकत्ता से सीधे बैंकाक जाने का प्रबन्ध किया जा सकेगा। इस हेतु हमें सूचना पहले देनी होगी।

10. सभी वर्गों से अनुरोध है कि इस यात्रा में भाग लेने वाले अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिनिधियों का नाम दयानन्द संस्थान, करोल बाग, में शीघ्र ही पंजीकृत कराने की कृपा करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, विवाह जन्म दिन आदि शुभ अवसरोंपर इष्टमित्रों को भेंट देने तथा स्वयं भी संगीतमय आनन्द प्राप्त करते हेतु, श्रेष्ठ गायकों द्वारा गाये मधुर संगीतमय भजनों तथा संध्या हवन आदि के उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजिये ।

५ या उससे अधिक कॅसेटों के आदेश पर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री ।

५ से कम के लिये कृपया १० रू. अतिरिक्त डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये ।

वी. पी. पी. नहीं ।

कैसेट नं		
1.	वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित)	25.00 रु.
2.	भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना वाजपेयी	25.00 रु.
3.	गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में)	25.00 रु.
4.	महर्षि दयानन्द, गायक बाबूलाल गजस्थानी व जयश्री शिवराय	25.00 रु.
5.	आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, रोहिणी, लिला व देवव्रत शास्त्री	25.00 रु.
6.	योगासन एवं प्राणायाम स्वंय शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य	25.00 रु.
7.	आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या	25.00 रु.
8-9.	महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन)	50.00 रु.
10.	पथिक भजन सिन्धु, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
11.	सत्यपाल पथिक भजनावली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
12.	मुसाफिर भजन सिन्धु, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन	30.00 रु.
13.	श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्म गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान	30.00 रु.
14.	आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा	30.00 रु.
15.	वेद गीताञ्जली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार	30.00 रु.
16.	भजन सुधा, आ. प्रज्ञादेवी जी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन	30.00 रु.

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ़्त ।

प्राप्तिस्थान - **संसार साहित्य मण्डल**

141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082

फोन-5617137

उपर्युक्त कॅसेट दयानन्द संस्थान, 2286, आर्य समाज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 से भी उपलब्ध हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

D-C 201 R.N. 10719/65 जनज्ञान (मासिक) पौष, 2043

दयानन्द संस्थान

2286, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005.

अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रचार-यात्रा का आयोजन बैंकाक और सिंगापुर में

22 जनवरी, वृहस्पतिवार से फरवरी, सोमवार तक

स्वागत समिति

पंडिता राकेशरानी अध्यक्ष —दयानन्द संस्थान, करोल बाग, नई दिल्ली
संग्राम सिंह जी मंत्री —आर्य समाज, बैंकाक (थाईलैंड)
ओमप्रकाश राय जी मंत्री —आर्य समाज, सिंगापुर (मलाया)
स्वामी चन्द्रवेश संयोजक —नई दिल्ली

महोदय,

आर्य समाज बैंकाक एवं आर्य समाज सिंगापुर के निमंत्रण पर दयानन्द संस्थान के तत्वावधान में आगामी 22 जनवरी से 2 फरवरी तक एक अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रचार का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन सिंगापुर में सम्पन्न हो रहा है जो भारतीय संस्कृति और प्रवासी भारतीयों का गढ़ है।

इस वेद प्रचार यात्रा के आयोजन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को यातायात किराया, ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण, प्रातःकाल नाश्ता, सायंकाल का भोजन, वीजा शुल्क एअरपोर्ट बैंकाक और सिंगापुर का पासपोर्ट पंजीकरण शुल्क सहित 6700/- देना होगा। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा विदेश मे खर्च करने के लिए दी जाने वाली राशि 500 डालर एवं 20 डालर भारतीय मुद्रा देकर विदेशी मुद्रा प्राप्त करनी होगी। इस यात्रा का मूल उद्देश्य भारत के साथ सांस्कृतिक रूप में जुड़े हुए देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करना है।

—**पंडिता राकेशरानी**

अध्यक्ष-दयानन्द संस्थान, करोल बाग, नई दिल्ली-5.

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं. राकेशरानी द्वारा, 'जन-ज्ञान' मुद्रणालय में मुद्रित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi